पुस्तक के बारे में

मेरा दोस्त मिस्टर लीकी विज्ञान प्रसार द्वारा प्रकाशित शास्त्रीय महत्व की लोकप्रिय वैज्ञानिक कृतियों की शृंखला की नवीं कड़ी है। जे.बी.एस.हाल्डेन ने इस पुस्तक में हाल्डेन ने शरीर विज्ञान, जैव रसायन और आनुवंशिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे जनसंख्या आनुवंशिकी के संस्थापकों में से एक थे और विकास का गणितीय सिद्धांत उनका बहुचर्चित योगदान माना जाता है। सच तो यह है कि उनकी रुचि विज्ञान के लगभग हर क्षेत्र में थी। व्यस्ततम वैज्ञानिक होने के बावजूद उन्होंने विज्ञान को लोकप्रिय बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इस पुस्तक में विज्ञान के विविध विषयों पर जे.बी.एस.हाल्डेन लिखित 42 लेख संकलित किए गए हैं। ये लेख उन्होंने सरल, सहज और रोचक भाषा-शैली में सूर्य, ग्रहों-नक्षत्रों, सूक्ष्म जीवों से लेकर कृमियों, शंख-सीपियों, कीट-पतंगों और पशु-पक्षियों जैसे विषयों पर लिखे हैं। इन लेखों में उन्होंने आए-दिन हमारे आसपास दिखाई देने वाली सामान्य-सी चीजों के बारे में रोचक वैज्ञानिक जानकारी दी है। असल में, विज्ञान की जटिल बातों को आसान तरीके से प्रस्तुत करना हाल्डेन के लेखन की विशेषता रही है। यही कारण है कि उनकी गिनती विश्व के प्रसिद्ध विज्ञान संचारकों में की जाती है।

हमें विश्वास है, जे.बी.एस. हाल्डेन द्वारा लिखित यह पुस्तक पाठकों को पसंद आएंगे और मेरा दोस्त मिस्टर लीकी पढ़ते हुए उन्हें उस चीज से जुड़े रोचक वैज्ञानिक तथ्यों की भी जानकारी मिल सकेगी। आशा है, विज्ञान में रुचि रखने वाले सभी पाठक इस पुस्तक का पूरे उत्साह के साथ हार्दिक स्वागत करेंगे।

ISBN: 978-81-7480-195-1

मूल्य : 80/-

वि P
V प्र

विज्ञान प्रसार
ए-50, इंस्टीट्यूनल एरिया
सैक्टर-62, नोएडा 201 307 (उ.प्र.)

मेरा दोस्त मिस्टर लीकी

जे. बी. एस. हाल्डेन

वि P
V प्र
विज्ञान प्रसार

प्रकाशक

विज्ञान प्रसार

ए-50, इंस्टीट्यूशनल एरिया
सैक्टर-62, नोएडा 201 307 (उ.प्र.)

पंजीकृत कार्यालय : टेक्नोलॉजी भवन, नई दिल्ली-110 016
फोन : 0120-2404430, 35
फैक्स : 0120-2404437
इंटरनेट : http://www.vigyanprasar.gov.in
ई-मेल : info@vigyanprasar.gov.in

मेरा दोस्त मिस्टर लीकी

लेखक : जे.बी.एस. हाल्डेन
अनुवादक : अमिताभ पाण्डे

हिंदी संपादन : प्रमोद झा
प्रॉडक्शन : सुबोध महंती, मनीष मोहन गोरे
पृष्ठ योजना : सुभाष भट्ट

© विज्ञान प्रसार

प्रथम हिंदी संस्करण : 2009

ISBN 978-81-7480-195-1

सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना पुस्तक के किसी अंश का पुनः प्रकाशन अथवा फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य तरीके से पुनः प्रयोग नहीं किया जा सकता।

मूल्य : 80/- रुपए

मुद्रक : सीता फाईन आर्ट्स प्रा. लि., नई दिल्ली-110028

विषय सूची

जॉन बर्डोन सैंडरसन हाल्डेन के जीवन एवं कार्यों की एक झलक .... *v*

भूमिका .... *xv*

प्राक्कथन .... *xvii*

एक दावत जादूगर के साथ *2*

जादूगर की जिंदगी एक दिन *24*

श्री लीकी की पार्टी *70*

चूहे *96*

सोने के दांतों वाला सांप *112*

मेरे कालर का जादुई बटन *127*

जॉन बर्डोन सैंडरसन हाल्डेन के जीवन एवं कार्यों की एक झलक*

"मैं प्रकृति का एक हिस्सा हूं। बिजली की चमक या पर्वत शृंखला जैसी प्राकृतिक वस्तुओं की भांति, मैं भी अपने निश्चित समय तक जीवित रहूंगा और फिर मिट जाऊंगा। इस संभावना से मुझे भय नहीं लगता, क्योंकि मेरे कुछ कार्य मेरे साथ नहीं मिटेंगे।"

जे.बी.एस.हाल्डेन

बहुत से लोगों को जॉन बर्डोन सैंडरसन हाल्डेन के किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है और शायद 'उनके लेखन कार्य को स्वयं हाल्डेन से अच्छा कोई और नहीं समझा सकता'। हमारा उद्देश्य तो हाल्डेन के लेखन का परिचय छोटे बच्चों एवं विज्ञान से कम जुड़ाव रखने वालों से कराना है। इनमें ज्यादातर लोगों को यही मालूम नहीं होगा कि हाल्डेन कौन थे और उन्होंने क्या कार्य किए? हाल्डेन की प्रतिभा के कई आयाम बहुत प्रेरणाप्रद हैं और विज्ञान के विकास एवं समाज के साथ इसके संबंध के प्रति उनकी चिंता एवं विचारधारा, विज्ञान विधि, शिक्षा, साथी मनुष्यों की भलाई आदि की महत्ता, आज के संदर्भ में भी बहुत प्रासंगिक है। उन्होंने अपने जीवन के आखिरी पांच वर्ष भारत में बिताए और भारतीय नागरिकता ग्रहण की। इस बात को ध्यान में रखते हुए हमने हाल्डेन के कुछ कार्यों एवं उनके जीवन के कुछ पहलुओं को रेखांकित करने का प्रयास किया है। निश्चय ही इस वर्णन को किसी भी दृष्टि से पूरा नहीं कहा जा सकता।

हाल्डेन सही मानों में बहुशास्त्र ज्ञानी थे। वैज्ञानिक के रूप में उनका सबसे महान योगदान विकास का गणितीय सिद्धांत है। वे जनसंख्या आनुवंशिकी के जन्मदाताओं में से एक थे। परंतु उनके लिखने का ढंग ऐसा था कि वह जनसंख्या आनुवंशिकी एवं खगोलभौतिकी दोनों ही विषयों पर सफलतापूर्वक लिख सकते थे। हाल्डेन असल में विज्ञान की लगभग सभी शाखाओं में रुचि रखते थे।

** डॉ. सुबोध महंती द्वारा लिखित*

वह घोर विवादों से घिरे व्यक्ति थे। जहां विज्ञान में वह सबसे उदार विचारधारा रखते थे, वहीं राजनीति में हठधर्मिता की साक्षात् मूर्ति थे। वह दयालु व्यक्ति थे तो अक्खड़ भी कुछ कम न थे। वह मितव्ययी भी थे और कुछ भी व्यर्थ नहीं करते थे। उन्हें दिखावा पसंद नहीं था और अपने काम से काम रखने में विश्वास करते थे। उन्हें सामाजिक मेलजोल और अवैज्ञानिक विषयों की चर्चा में कोई रुचि नहीं थी।

पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं शिक्षा

जे.बी.एस. हाल्डेन का जन्म 5 नवम्बर 1892 को इंग्लैंड में ऑक्सफोर्ड में हुआ। हाल्डेन के परिवार के वंश की जड़ें मध्य तेरहवीं सदी तक गई हैं। उनके पिता, जॉन स्कॉट हाल्डेन (1860-1936 ई.) शरीरक्रिया विज्ञानी थे, जो मानव श्वसन के विषय में अपने शोध के लिए जाने जाते थे। उन्होंने यह प्रमाणित किया था कि सांस लेने की दर रक्त में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा से संचालित होती है। श्वसन क्रिया पर अधिक ऊंचाई एवं गहरे समुद्र के दबाव के असर पर उन्होंने शोध किया तथा कार्बन मोनोक्साइड के विषैले प्रभाव का प्रदर्शन कर खनन कार्य को अधिक सुरक्षित बनाने में भी सहायता की।

उनकी माता, लुईसा कैथलीन हाल्डेन (विवाह से पूर्व ट्रटार), "मानवीय जिजीविषा" को दूर करने वाले कार्यों में हाथ बंटाती थी। हाल्डेन अपने माता-पिता, विशेषकर अपने पिता से बहुत प्रभावित थे। एक बार उन्होंने कहा था, "मैं अपनी प्रगति का सबसे अधिक श्रेय अपने पिता को देता हूँ।" उन्होंने अपना आरंभिक विज्ञान प्रशिक्षण अपने पिता से पाया जिनकी निजी प्रयोगशाला में उन्होंने बचपन ही से अपना सहयोग दिया। इसलिए बाद में उन्होंने कहा, "मैंने अपना अधिकतर विज्ञान का ज्ञान सहायक के रूप में प्राप्त किया, जब मैं आठ वर्ष की आयु से ही पिता के कार्य में उनकी सहायता करता था। मेरी विश्वविद्यालय की डिग्री भी कला में है, विज्ञान में नहीं।"अपने बचपन के विषय में हाल्डेन ने लिखा : "बचपन में मुझे किसी भी धर्म के अनुसार नहीं पाला गया, क्योंकि हमारा घर एक ऐसा घर था जहां धर्म का स्थान विज्ञान एवं दर्शन ने ले लिया था। एक बालक के रूप में मुझे उस समय की विचारधारा जानने का पूरा मौका मिला, जिसके कारण आज मुझे आइंस्टाइन की बात समझ में आती है और फ्रायड के कथनों से आघात नहीं लगता। युवावस्था में मैंने युद्ध देखा और ऐसे समय में मानवीय व्यवहार के विभिन्न पहलुओं, जिससे अधिकतर एक साधारण विचारक का वास्ता नहीं पड़ता को जाना। एक व्यक्ति के रूप में मैं एक जीव वैज्ञानिक हूँ, और विश्व को एक अलग ही कोण से देख सकता हूँ जो मेरे विचार में पूरी तरह से गलत नहीं है।"

"विद्यालय में मैने "पूर्व निर्धारित रीति" को पूर्णतः त्याग दिया; इसका अर्थ है चौदह वर्ष की आयु में मैंने लैटिन एवं ग्रीक भाषा का अध्ययन किया। रसायन विज्ञान, भौतिकी, इतिहास एवं जीवविज्ञान अपने पिता के पूरे उत्साहवर्धन के साथ पढ़ा, परंतु मेरे प्रधानाध्यापक इससे रुष्ट रहते और कहते कि मैं केवल एक अल्पज्ञानी बालक बनता जा रहा हूँ।"

हाल्डेन के मन में साहित्य के प्रति बड़ी श्रद्धा थी। हमें बताया गया है कि वे शेक्सपीयर (1564-1616 ई.), दांते (1265-1321 ई.), शैली (1797-1851 ई.), कीट्स (1795-1821 ई.), रेमबॉव (1854-1891 ई.) एवं बाल्जाक (1799-1910) को बहुत पसंद करते थे। वह दोस्तोवस्की (1821-1881 ई.) और तॉलस्ताय (1828-1910) को भी पढ़ा करते थे। उनकी मित्रता जी.बी.शॉ (1856-1950) एवं एच.जी. वैल्ज़ (1866-1946) से थी। वे ग्यारह भाषाएं पढ़ सकते थे और तीन भाषाओं में भाषण दे सकते थे।

1911 में वह गणित में छात्रवृत्ति लेकर ऑक्सफोर्ड गए जहाँ उन्होंने गणित समभाव में प्रथम श्रेणी प्राप्त की। ऑक्सफोर्ड में पहले वर्ष में जंतु विज्ञान की अंतिम वर्ष की कक्षाओं में भी बैठे। 1911 में हुए एक जंतु विज्ञान के सेमीनार में हाल्डेन ने अपनी खोज की घोषणा की (जो दूसरों द्वारा प्रकाशित तथ्यों के विश्लेषण पर आधारित थी) जो पहले कशेरुकी जीवों के विषय में जानकारी देती है, जिसे इन जंतुओं की जीनों के बीच की कड़ी माना जाता है। परंतु उस समय उनके पास इसके पूरे प्रमाण नहीं थे, इसलिए उन्हें 1916 तक इसे प्रकाशित कराने के लिए रुकना पड़ा।

इससे पहले कि वह विज्ञान की डिग्री ले पाते, उन्हें 1914 में ऑक्सफोर्ड छोड़कर ब्रिटिश सेना में भर्ती होना पड़ा क्योंकि प्रथम विश्वयुद्ध प्रारंभ हो चुका था (1914-1918)। युद्ध के बाद ऑक्सफोर्ड वापस आने पर उन्हें न्यू कॉलेज का फैलो चुन लिया गया और उन्होंने शरीरक्रियाविज्ञान पढ़ाना प्रारम्भ कर दिया। पढ़ाने के कार्य के साथ-साथ उन्होंने शरीरक्रियाविज्ञान एवं आनुवंशिकी पर भी कार्य प्रारम्भ किया।

विज्ञान में उनका योगदान

विज्ञान में हाल्डेन का योगदान तीन प्रमुख क्षेत्रों यथा शरीरक्रियाविज्ञान, जीवरसायनविज्ञान एवं आनुवंशिकी में था।

उन्होंने मानव शरीर के विभिन्न आयामों का अध्ययन किया जिनमें प्रयोग के जंतु के रूप में उन्होंने अक्सर अपना ही इस्तेमाल किया। सच तो यह है कि हाल्डेन प्रयोग के लिए स्वयं को ही प्रमुख गिनीपिग की भांति प्रयोग करने के लिए जाने जाते थे। रक्त की क्षारीयता को नियंत्रित करने संबंधी हाल्डेन का काम मूलभूत पाठ्यपुस्तक सामग्री होने का दर्जा रखती थी।

1922 में फ्रेडरिक गोलैण्ड हॉपकिंस (1861-1947) के बुलाने पर हाल्डेन ने जैवरसायनविज्ञान रीडर के रूप में कैंब्रिज विश्वविद्यालय मे प्रवेश किया। उन्होंने वहां दस

वर्ष बिताए। कैंब्रिज में उन्होंने एंज़ाइमों के अध्ययन पर अपना ध्यान केंद्रित किया और जटिल गणित का प्रयोग कर एंज़ाइम अभिक्रिया दर की गणना की। हाल्डेन ने (जी.ई.ब्रिग्स के साथ) यह सिद्ध किया कि एंज़ाइम अभिक्रियाएं ऊष्मागतिकी के नियमों का पालन करती हैं। जैवरसायनविज्ञान में अपने योगदान के बारे में हाल्डेन लिखते हैं; "संभवतः मेरी सबसे महत्त्वपूर्ण खोज यह थी कि एक पदार्थ जिसके लिए कार्बन मोनोक्साइड आक्सीजन से प्रतिस्पर्धा करती है, जिसे अब साइटोक्रोम आक्सीडेज कहते हैं, पौधों, भृंगों एवं चूहों में पाया गया था। इस खोज में सर्वाधिक आश्चर्यजनक बात यह रही कि भृंगों के मस्तिष्क पदार्थ के विषय में बिना उन्हें काटे या मारे जाना जा सका। परंतु एंज़ाइम रासायनिकी संबंधी मेरे नियम संभवतः अधिक महत्त्वपूर्ण रहते।"

हाल्डेन को जनसंख्या आनुवंशिकी विज्ञान के संस्थापक सदस्यों में से एक माना जाता है। कैंब्रिज में उनकी विशेष आनुवंशिकी खोज संकर नस्ल के जंतुओं के लिंग का निर्धारण करने वाला नियम है: "यह नियम कहता है कि यदि संकर नस्ल की पहली पीढ़ी में एक लिंग नहीं है या वह क्षमताहीन है तो वह भिन्न युग्मिकी लिंग है।" 1933 में हाल्डेन ने यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ लंदन जाने के लिए कैंब्रिज छोड़ दिया जहां उनका ध्यान केवल आनुवंशिकी पर केंद्रित रहता था। उन्होंने (1935 में) 'X' गुणसूत्र (क्रोमोजोम) का एक सामयिक नक्शा तैयार किया जिसमें वर्णांधता, एक विशेष त्वचा रोग एवं दो किस्म की आँखों की विशिष्टताओं को जन्म देने वाले जीवों का स्थान दिखाया गया था। उनका प्राकृतिक वरण का गणितीय सिद्धांत आनुवंशिकी एवं जीवविज्ञान के विद्यार्थियों के लिए अति महत्त्वपूर्ण है। 1932 में अपनी पुस्तक *दी कॉज़िज़ ऑफ इवोल्यूशन* में हाल्डेन ने पहली बार मानव उत्परिवर्तन की दर का पता लगाया। आनुवंशिकी के क्षेत्र में उनका एक और योगदान *जर्नल ऑफ जेनेटिक्स* जिसका वह संपादन करते थे, के लिए किया गया उनका कार्य था।

पूर्व-जीवीय विश्व की अवायवीय स्थिति में जीवन के उद्भव की संभावित क्रियाविधि के बारे में हाल्डेन और ए.आई.ओपेरिन ने स्वतंत्र रूप से अपना मत रखा।

संभवतः विज्ञान हाल्डेन के योगदान का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पक्ष यह था कि अन्य विषयों में अर्जित अपनी संकल्पनाओं व ज्ञान का प्रयोग विज्ञान के नए क्षेत्रों में करने में वह सक्षम थे।

हाल्डेन के अपने शब्दों में विज्ञान में उनके योगदान का सार यह है, "मेरा विज्ञान संबंधी कार्य विविध रहा है। मानव शरीरक्रियाविज्ञान के क्षेत्र में मानव शरीर पर अधिक परिमाण में अमोनियम क्लोराइड और ईथर साल्ट लेने के परिणाम संबंधी अपने कार्य के लिए मैं सर्वाधिक जाना जाता हूँ। इसका प्रयोग लेड (सीसे) या रेडियम से हुए ज़हरबाद

को ठीक करने के लिए होता है। आनुवंशिकी के क्षेत्र में मैं पहला ऐसा व्यक्ति था जिसने स्तनपाई जीवों में संबंधों की खोज की, मानव गुणसूत्र का मानचित्रण किया एवं (पेनरोज के साथ) मानव जीन में उत्परिवर्तन की दर का मापन किया। मैंने गणित में भी कुछ छोटी-मोटी खोजें कीं।"

पुरस्कार एवं सम्मान

1932 में हाल्डेन को रॉयल सोसाइटी का फैलो चुना गया। "जीवित जनसंख्या की उत्पत्ति के आधुनिक समय के अध्ययन को आरंभ करने की पहल के उपलक्ष्य में" 1953 में रॉयल सोसाइटी ने उन्हें अपने डार्विन पदक से सम्मानित किया। 1937 में फ्रांसीसी सरकार ने उन्हें लीज़न ऑफ ऑनर दिया एवं ऐकेडेमिया नेशनल डी लिंसी ने उन्हें फैल्ट्रिनेली प्राइज़ (1961) से सम्मानित किया। उनके द्वारा अर्जित अन्य सम्मान थे : आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय का वेल्डन मेमोरियल प्राइज, लिनियन सोसाइटी का *डार्विन वॉलेस मैडल,* मानव विज्ञान संस्थान का *हक्सले मेमोरियल मैडल,* एवं संयुक्त राज्य नेशनल एकेडेमी ऑफ साइंसिस का *किंबलर जेनेटिक्स अवार्ड*। वह जेनेटिकल सोसाइटी के अध्यक्ष भी रहे (1932-36)।

एक विलक्षण लोकप्रिय विज्ञान संचारक

हाल्डेन एक लोकप्रिय विज्ञान संचारक थे। उनका लोकप्रिय लेखन बहुत स्पष्टता लिए हुए था। उनमें विज्ञान की जटिल बातों को, उनका अर्थ बिगाड़े बिना, अत्यंत साधारण रूप से कहने की क्षमता मौजूद थी। उनके लेख, भाषणों एवं प्रसारणों ने उन्हें विश्व के जाने-माने वैज्ञानिकों में से एक का दर्जा दिला दिया।

समाज के प्रति विज्ञान की जिम्मेदारियां पर उन्होंने हमेशा बल दिया। हाल्डेन यह मानते थे कि वैज्ञानिक का प्रमुख कर्त्तव्य विज्ञान को जन साधारण के लिए ग्राह्य बनाना है। जन साधारण को विज्ञान समझाने के लिए उन्होंने बहुत लेख लिखे।

विज्ञान संचारकों को हाल्डेन की सलाह

"आप कोई दिखावा नहीं कर रहे हैं, न ही आप इतना सूक्ष्म वर्णन करना चाहते हैं कि आपके पाठक कोई प्रयोग सही प्रकार कर पाएं। आपका ध्येय उनमें रूचि जगाना या उन्हें उत्तेजित करना है, उन्हें पूरी जानकारी देना नहीं। इस प्रकार आपको अपने विषय के बारे में बहुत गहराई से जानकारी होनी चाहिए, अर्थात् जो आप लिख रहे हैं उससे कहीं अधिक। इन सभी विषयों में से आपको ऐसा विषय चुनना होगा जो सबसे आसानी से समझा जा सके ...इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि आप अल्पबुद्धि पाठकों के लिए लिख रहे हैं। इसका अर्थ केवल यह है कि आपको विज्ञान के

साधारणतः अनजाने तथ्यों से प्रतिदिन होने वाली अनुभूतियों पर वापस आना है . ..जब आप अपना लेख लिख चुकें तो उसे अपने किसी मित्र को पढ़ने के लिए दें, एक ऐसा मित्र जो इन सब बातों से सर्वथा अनभिज्ञ हो या उसे छः माह के लिए उठाकर रख दें और फिर से देखें कि क्या इसके बाद आप उसे समझ सकते हैं। आपको लगेगा कि कुछ ऐसे वाक्य जो आपको उस समय बहुत साधारण लगे थे, अब जटिल लग रहे हैं। यहां इन जटिलताओं को दूर करने के कुछ उपाय दिए जा रहे हैं ...क्या आप एक अर्धविराम के स्थान पर पूर्ण विराम लगा सकते हैं? यदि हां तो उसे लगा दीजिए। इससे आपके पाठक को सांस लेने का समय मिल सकेगा। क्या आप एक अकर्मक क्रिया या क्रियावाचक संज्ञा के बदले एक सकर्मक का प्रयोग कर सकते हैं?''

उनकी मान्यता यह थी कि विज्ञान न जानने वाले पाठक को... ''यह हक़ है कि वह जाने कि प्रयोगशालाओं में क्या हो रहा है, जिसमें से कुछ के लिए वही पैसा देता है।''

शिक्षा के विषय में उनके विचार

करके सीखने की विचारधारा के वह प्रबल पैरोकार थे। उदाहरण के लिए, एक बार उन्होंने लिखा, ''संख्याओं के लिए संवदेना अभ्यास से ही पैदा की जा सकती है। यह अभ्यास कैसा होना चाहिए? उदाहरण के लिए, यदि मैं चाहता हूँ कि मेरे विद्यार्थी बी.टी.रोड के 203 एवं 204 नंबर के बगीचों के सभी पेड़ों की गणना करें तो उनके सामने अनेक कठिनाइयां आएंगी। यह एक पेड़ है या झाड़ी? यह केले का एक पेड़ या एक दर्जन पेड़ हैं? यह इस बात का फैसला करने से दुष्कर कार्य नहीं है कि यह एक घर है या कारखाना? मेरे अनुमान से 203 नंबर में 100 से कम सुपारी के पौधे हैं। हो सकता है कि मेरा कहना गलत हो, क्योंकि मैंने उन्हें गिना नहीं है। परंतु मैं चाहता हूं कि इन बच्चों को यह आभास हो सके कि 100 वृक्ष कैसे लगते हैं, तो यह काम उनसे ऐसे प्रश्न पूछ कर किया जा सकता है, ''कितने वृक्ष हैं?'', ''कितनी बार?'', ''कितना सशक्त?'' आदि।

उन्होंने अपने विद्यार्थियों को अदृश्य वैज्ञानिक मान्यताओं को साधारण जीवन के अनुभवों से जोड़ने की सलाह दी, जो उन्होंने अपने जीवन में भी आत्मसात की। इस प्रकार उन्होंने यह माना, ''आपको लगातार विज्ञान के नए तथ्यों से प्रतिदिन के अनुभवों की ओर वापस आना होगा।''

उस समय की शिक्षा प्रणाली पर हाल्डेन की टिप्पणियां आज भी विचारोत्तेजक समझी जा सकती हैं। उन्होंने कहा, ''हमारी सामयिक शिक्षा प्रणाली बच्चों के साथ न्याय नहीं करती क्योंकि उनमें से अधिकतर को इसके अंतर्गत विज्ञान को मानवीय कोण से समझने का अवसर नहीं मिलता और किसी को भी इस दृष्टिकोण से पढ़ाया नहीं जाता। विज्ञान पढ़ाना कल्पना मात्र से प्रारंभ नहीं होना चाहिए, जो या तो जड़ है या समान गति से चलती है, परंतु इसका आरंभ मानव शरीर से होना चाहिए। मेरी शिक्षा तीन वर्ष की आयु में इसी से प्रारंभ हुई।''

राजनैतिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण

जे.बी.एस.हाल्डेन मानवमात्र की भलाई चाहते थे। ऑक्सफोर्ड में अपने विद्यार्थी जीवन में मुक्त विचारधारा के होने के कारण वे वामपंथी होते गए और अंततः उन्होंने 1942 में कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्यता ले ली। परंतु इससे पहले उन्होंने *द मार्कसिस्ट फिलोसाफी एंड द साइंसेस* (1938) लिखी और एंगिल्स की *डायलेक्टिक्स ऑफ नेचर* के अनुवाद के लिए कुछ शब्द एवं नोट्स लिखे जो 1882 में अधूरे रह गए थे। इससे ऐसा लगता है कि हाल्डेन एंगिल्स से बहुत प्रभावित थे। इस प्रकार उन्होंने लिखा, ''यदि डार्विनवाद के विषय में उनके (एंगिल्स के) विचार पहले से प्रचलित होते, तो बहुत लोग, जिनमें मैं भी एक होता, इस गड़बड़ सोच से बच जाते।'' वे *डेली वर्कर* के सम्पादन मंडल के अध्यक्ष थे जिसमें उन्होंने वैज्ञानिक विषयों पर 300 से अधिक लेख लिखे, जिनमें अनेक राजनैतिक टिप्पणियां भी थीं। उन्होंने *रेनाल्ड न्यूज़* जैसी वामपंथी समाचार पत्रों में भी 100 से अधिक लेख लिखे। हाल्डेन समाजवादी इसलिए बने क्योंकि वह अपने जैसे अन्य नर-नारियों को जीवन में सुख पाते देखना चाहते थे। उनके सामाजिक एवं राजनैतिक विचार उनकी दृढ़ परिमाणात्मक विचारधारा, आनुवंशिकी में उनके गहन ज्ञान एवं कर्त्तव्य की भावना से अत्यधिक प्रभावित थे। कम्युनिस्ट पार्टी के संशयवाद के पूर्ण अभाव की विचारधारा के साथ सहमत न हो पाने के कारण हाल्डेन चुपचाप उससे अलग हो गए।

आदर्श समाज के बारे में हाल्डेन ने निम्नलिखित बातें कहीं :

''एक आदर्श समाज प्रत्येक नर व नारी को उसकी जन्मगत विशेषताओं को निखारने का पूरा मौका देगा। इसलिए इसमें दो विशेष गुण होने चाहिए। पहला स्वतंत्रता, जो हर व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व के स्वतंत्र विकास का अवसर दे और सभी को एक जैसे सांचे ढालने का प्रयास न करे, फिर चाहे वह सांचा कितना भी प्रशंसनीय क्यों न हो। दूसरे, सभी को समान अवसर प्रदान करना जिसका अर्थ होगा कि जहां तक हो सके प्रत्येक व्यक्ति समाज में वह स्थान अवश्य पा सके जिसके लिए वह प्राकृतिक रूप से उपयुक्त हो।''

हाल्डेन यह जानते थे कि अपने इन सामाजिक एवं राजनैतिक विचारों को फलीभूत करने के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें समाज के सभी वर्गों का समर्थन मिले।

भारत में

हाल्डेन 1957 में भारत आ गए, संभवतः इसलिए कि वह स्वेज़ के ब्रिटिश-फ्रांसीसी आक्रमण के विरुद्ध अपनी नाराज़गी जताना चाहते थे। उनका यह फैसला इस बात से भी प्रेरित था कि यहां आनुवंशिकी एवं जैवमिति पर शोध करने की सुविधा थी। उन्होंने भारतीय सांख्यिकी संस्थान, कलकत्ता में पी.सी. महालनोबिस के आमंत्रण पर प्रवेश लिया। भारतीय सांख्यकी संस्थान में उन्होंने सैद्धांतिक एवं अनुप्रयुक्त शोध कार्य के क्षेत्र में मात्रात्मक जीवविज्ञान पर कई शोध परियोजनाएं आरंभ कर अभूतपूर्व तेज़ी ला दी। उन्होंने (पी.सी. महालनोबिस के साथ) इस संस्थान के सांख्यिकी स्नातक (ऑनर्स) के शैक्षणिक पाठ्यक्रम के संरुपण में भी बड़ा योगदान दिया।

हाल्डेन में भारतीय सांख्यकी के साथ अपने कार्य के विषय में कहा, "मैं इस संस्थान का अनेक बातों के लिए आभारी हूं, पर उनमें से सबसे अधिक आभार इस बात का है कि इसने मुझे कई सी खोजें करने का अवसर दिया। जैसे, अपने से युवा ऐसे बहुत से व्यक्तियों की खोज जो वैज्ञानिक शोध की महान परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं।"

उन्होंने 1961 में भारतीय सांख्यिकी संस्थान से इस्तीफा दे दिया और वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद् (सीएसआईआर) एवं अपने सहकर्मियों की सहायता से अपने घर में ही एक शोध इकाई खोली। 1962 में वह भुवनेश्वर चले गए जहां उन्होंने एक आनुवंशिकी एवं जैवमिति प्रयोगशाला खोली।

हाल्डेन भारतीय संस्कृति के गहन प्रशंसक थे और आधुनिक विज्ञान के साथ इसके संबंध के बारे में उन्होंने विस्तार से लिखा। भारतीय दर्शन शास्त्र में भी वह गहरे उतरे। उन्हें संस्कृत का अच्छा ज्ञान था। 1961 में वह भारतीय नागरिक बन गए।

उनके महत्वपूर्ण कार्य*

हाल्डेन ने विभिन्न विषयों पर लिखा और 1964 में अपनी मृत्यु तक वह अनवरत लिखते रहे। उन्होंने 24 पुस्तकें (जिनमें बच्चों के लिए विज्ञान कथाएं एवं कहानियां भी हैं), 400 से अधिक वैज्ञानिक शोध पत्र एवं असंख्य लोकप्रिय लेख लिखे। अपने लेखों के विषय में हाल्डेन

*सूची एन. डब्ल्यू. पाइरी द्वारा बनाई गई है *(बायोग्राफिकल मेमोयर्स ऑफ फैलोज ऑफ द रॉयल सोसाइटी,* लंदन 12, 1966 में) और जिसे रोनाल्ड डब्ल्यू. क्लार्क द्वारा दोबारा निम्नलिखित पुस्तक में दिया गया है - *जे.बी.एस. : द लाइफ एंड वर्क ऑफ जे.बी.एस. हाल्डेन,* न्यूयार्क : हॉडर एंड स्टाउटन लि., 1968।

कहते हैं, "वैज्ञानिक पुस्तकों के अलावा मैंने बहुत से लोकप्रिय लेख भी लिखे हैं, जिनमें बच्चों की कहानियों की एक पुस्तक भी शामिल है। मैं सोचता हूं कि एक वैज्ञानिक को, यदि हो सके तो, विज्ञान को साधारण व्यक्तियों के लिए आसानी से समझने योग्य बनाना चाहिए और मैंने अपने कार्यों में इसे लोकप्रिय बनाने का प्रयास किया है।" उनकी कुछ विशेष पुस्तकें इस प्रकार हैं :

उनकी कुछ विशेष पुस्तकें इस प्रकार हैं :-

डेडालस : ऑर साइंस एंड फ्यूचर (1924); केलीनिकस : ए डिफेंस ऑफ केमिकल वारफेयर (1925); द लास्ट जजमेंट (1927); एनिमल बायोलॉजी (1927 में जे.एस.हक्सले के साथ); पॉसिबल वर्ड्र्स एंड अदर एसेज (1927); द ओरिजिन ऑफ लाइफ इन रेशनेलिस्ट एनुअल (1929, पृष्ठ 3 से 10); साइंस एंड लाइफ इथिक्स (1928); एंज़ाइम (1930); द इनइक्वेलिटी ऑफ मैन एंड अदर ऐसेज (1932); साइंस एंड ह्यूमन लाइफ (1933); फैक्ट एंड फेथ (1934); द कॉज़ेज़ ऑफ इवोल्यूशन (1933); साइंस एंड सुपरनेचुरल (1935 में एलन के साथ); माई फ्रेंड : मिस्टर लीकी (1937 में बच्चों के लिए); द मार्कसिस्ट फिलोसॉफी एंड द साइंसेज़ (1938); हेरिडिटी एंड द पॉलिटिक्स (1938); साइंस एंड यू (1939); साइंस एंड एवरीडे लाइफ (1940); प्रीफेस एंड नोट्स टू डायलेक्टिक्स ऑफ नेचर (एफ.एंगिल्स, डी.दत्ता द्वारा संपादित एवं अनूदित)(1940); साइंस इन पीस एंड वार (1940); न्यू पाथ्स इन जेनेटिक्स (1941); साइंस एडवांसेस (1947); व्हाट इज़ लाइफ (1947)।

अंतिम वसीयत

उनकी मृत्यु 1 दिसंबर, 19964 को हुई। वसीयत के अनुसार उनके शव को काकीनाड़ा स्थित रंगराय मेडिकल कॉलेज भेज दिया गया। हाल्डेन ने अपनी वसीयत में लिखा, "मेरे शरीर का दोनों प्रकार से जीवनकाल में प्रयोग हो चुका है और मेरी मृत्यु के पश्चात्, चाहे मेरा अस्तित्व रहे या न रहे, इसका मेरे लिए कोई प्रयोजन नहीं रहेगा, इसलिए मैं चाहता हूं कि इसका प्रयोग कोई दूसरा कर सके। मेरे बाद इसके प्रशीतन पर होने वाला व्यय मेरी सम्पत्ति से होने वाला पहला व्यय होना चाहिए।"

हाल्डेन के जीवन एवं कार्यों के विषय में जानकारी के कुछ स्रोत :

1. एन.मिशिसन, द *कांकर्ड,* लंदन : जोनाथन केप, 1923 (नाओमी मिशिसन जे. बी.एस.हाल्डेन की बहन हैं)।
2. एन.मिशिसन, द *बुल एंड काव्स,* लंदन; जोनाथन केप, 1947।
3. हाल्डेन, एल.के., *फ्रेंड्स एंड किंड्रड,* लंदन : फेबर एंड फेबर लि. 1961 (हाल्डेन की माता लुईसा कैथलीन हाल्डेन की यादें)।

4. हाल्डेन, जे.बी.एस., *एन ऑटोबायोग्राफी इन ब्रीफ,* बम्बई : इलस्ट्रेटिड वीकली ऑफ इंडिया, 1961।
5. *साइंस रिपोर्टर,* नई दिल्ली : प्रकाशन एवं सूचना निदेशालय (जिसका नाम अब बदलकर राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान कर दिया गया है), 2, 1965 (हाल्डेन पर एक विशेषांक जिसमें उनके जीवन एवं कार्यों पर कुछ लेख हैं)।
6. एन. डब्ल्यू. पाइरी, बायोग्राफिकल मेमॉयर्स ऑफ फैलोज़ ऑफ द रॉयल सोसाइटी, लंदन, 12, 1966 में।
7. ड्रोनामराजू, के.आर. (संपादक) *हाल्डेन एंड मॉडर्न बायोलॉजी,* बाल्टीमोर, जॉन हापकिंस यूनिवर्सिटी प्रेस, 1968।
8. रोनाल्ड डब्ल्यू.क्लार्क, *जे.बी.एस. : द लाइफ एंड वर्क ऑफ जे.बी.एस.हाल्डेन,* न्यूयार्क : हॉडर एंड स्टाउटन लि. 1968।
9. राइट, एस., हाल्डेंस कांट्रिब्यूशन टू पापुलेशन एंड इवोल्यूशनरी जेनेटिक्स, प्रोसिडिंग्स XII *इंटरनेशनल जेनेटिक्स;* 3:445-451, 1969।
10. ड्रोनामराजू, के आर., *हाल्डेन : द लाइफ एंड वर्क ऑफ जे.बी.एस.हाल्डेन विद स्पेशल रेफरेंस टू इंडिया,* एबरडीन : एबरडीन यूनिवर्सिटी प्रेस-परगामॉन प्रेस, 1985।
11. ड्रोनामराजू, के.आर., (संपादक) *सेलेक्टेड जेनेटिक पेपर्स ऑफ जे.बी.एस. हाल्डेन,* न्यूयार्क : गारलेंड पब्लिशिंग, इंकार्पो., 1990।
12. जे.बी.एस.हाल्डेन : ए ट्रिब्यूट, कलकत्ता : इंडियन-स्टेटिस्टिकल इंस्टीट्यूट, 1992।

भूमिका

रोनाल्ड क्लार्क की लिखी जे.बी. एस. हाल्डेन की अत्यंत पठनीय जीवनी पढ़ने के बाद मुझे उनकी 'माई फ्रेंड मिस्टर लीकी' पुस्तक के बारे में पता चला। तब मैं पुणे में था। विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में यह किताब नहीं थी। कुछ मित्रों ने बताया कि मैं ब्रिटिश काउंसिल लाइब्रेरी में इसे तलाशूं । ब्रिटिश काउंसिल लाइब्रेरी, जगह की कमी की वजह से, समय-समय पर पुरानी घिसे पन्नों वाली किताबों की छंटनी करती रहती है। असल में सबसे ज्यादा लोकप्रिय किताबें ही बार-बार पढ़ी जाती हैं और गंदी तथा पुरानी नजर आने लगती हैं इसीलिए इन्हीं की ज्यादा छंटनी होती है। मेरा अंदाज है कि 'माई फ्रेंड मिस्टर लीकी' के साथ भी ऐसा ही हुआ होगा।

मुझे प्रोफेसर डी. बालासुब्रह्मणियम के जरिये *हाल्डेन कलेक्शन* से इस किताब की जेराक्स कॉपी मिल गई । 'हाल्डेन कलेक्शन' की किताबें अब हैदराबाद के सेंटर फॉर सेलुलर एंड मोलीक्यूलर बायोलॉजी में रखी गई हैं। हाल्डेन की पत्नी हेलेन स्परवे की मृत्यु के बाद उनकी किताबें हैदराबाद की रीजनल रिसर्च लेबोरेटरी ने संरक्षित कर लीं।

'माई फ्रेंड मिस्टर लीकी' पहली बार 1937 में प्रकाशित हुई । हाल्डेन द्वारा बच्चों के लिए लिखी गई यह एक मात्र पुस्तक है। बच्चे हाल्डेन के जादूगर पात्र मिस्टर लीकी के पहेले जैसे चरित्र को कभी नहीं भुला सके । 1963 में भुवनेश्वर में हाल्डेन का निधन होने तक, यानी लगातार 25 वर्षों तक, उनके पास दुनिया भर के बच्चों के पत्र आते रहे । इनमें से ज्यादातर कहानियों का हिंदी में अनुवाद हो चुका है और ये एकलव्य प्रकाशन की पत्रिका 'चकमक' में छप चुकी है। *केरल शास्त्र साहित्य परिषद* द्वारा इनका मलयालम में भी अनुवाद कराया जा चुका है।

हाल्डेन बड़े साहसी प्रयोगकर्ता थे। कई बार तो उन्होंने खुद पर ही प्रयोग कर डाले। अनेक बार उन्होंने स्वयं को कार्बन मोनो आक्साइड की अधिक मात्रा वाले कमरे में बंद कर लिया। एक बार उन्होंने पेशियों की मरोड़ का इलाज ढूढने के लिए सोडियम बाईकार्बोनेट और हाइड्रोक्लोरिक एसिड पी लिया। उन्हीं के शब्दों में, *"मुझे लगता है कि मेरा वैज्ञानिक कॅरियर दो साल की उम्र में ही शुरू हो गया था जब मैं अपने पिता को उनकी प्रयोगशाला में 'प्रयोग' कहे जाने वाले ऐसे जटिल खेल खेलते देखता था जिनके नियम मुझे मालमू नहीं थे"*।

हाल्डेन असीमित कल्पना शक्ति और अद्भुत याददाश्त के धनी थे। साहित्य, दर्शन और विज्ञान पर उनका समान अधिकार था और भारतीय धर्म का उन्होंने प्रेम और उल्लेखनीय तत्परता से अध्ययन किया।

ब्रिटेन द्वारा स्वेज नहर पर हमले से वह बेहद नाराज हुए और उन्होंने 1957 में अपनी पत्नी के साथ भारत में बसने का फैसला कर लिया। उन्हें लगा कि जिस तरह का शोधकार्य वह करना चाहते हैं, उसके लिए पश्चिमी देशों की तुलना में भारत में ज्यादा गुंजाइश है। उन्होंने कोलकाता के भारतीय सांख्यिकी संस्थान (इंडियन स्टैटिस्टिकल इस्टीट्यूट) में काम करना शुरू किया लेकिन बाद में भुवनेश्वर में बस गये। भुवनेश्वर में ही 1964 में उनका कैंसर से निधन हो गया । उन्होंने चिकित्सा विज्ञान में अनुसंधान के लिए अपना शरीर दान कर दिया था।

कई पीढ़ियों ने 'माई फ्रेंड मिस्टर लीकी' को चाव से पढ़ा है। ऐसी किताबें हमेशा दिलचस्प लगती हैं। मुझे विश्वास है कि इस प्रथम भारतीय संस्करण के बाद यह पुस्तक कई भारतीय भाषाओं में अनूदित होगी।

अरविंद गुप्ता

प्राक्कथन

'विज्ञान प्रसार' विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विविध विषयों पर पुस्तकों का प्रकाशन कर रहा है। विगत अनेक वर्षों के दौरान लोकप्रिय विज्ञान के क्लासिक ग्रंथों के साथ ही भारत की वैज्ञानिक विरासत, प्रकृति-विज्ञान, स्वास्थ्य तथा 'स्वयं करके देखो' जैसी पुस्तक मालाएं प्रकाशित की गई हैं। हमारा यही प्रयास रहा है कि विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के विभिन्न पहलुओं पर उचित मूल्य में उच्चस्तरीय पुस्तकें प्रकाशित की जाएं।

"मेरा दोस्त मिस्टर लीकी" पुस्तक जे.बी.एस. हाल्डेन द्वारा बच्चों के लिए लिखी गई पहली पुस्तक है। इसका प्रथम संस्करण सन् 1936 में प्रकाशित हुआ। तदोपरांत इस पुस्तक की लोकप्रियता को देखते हुए विज्ञान प्रसार ने अंग्रेजी में इस पुस्तक का प्रथम भारतीय संस्करण सन् 1998 में प्रकाशित किया। बच्चों के बीच पुस्तक की लोकप्रियता को देख कर इसे अंग्रजी में दुबारा सन् 2001 तथा 2005 में पुनर्मुद्रित किया गया। हिंदी भाषी पाठकों के लिए इस महत्वपूर्ण पुस्तक को हिंदी में भी प्रकाशित किया जा रहा है ताकि वे भी बहुमुखी प्रतिभा के धनी, विश्वविख्यात वैज्ञानिक तथा कुशल विज्ञान-लेखक जे.बी.एस.हाल्डेन की इस पुस्तक से लाभान्वित हो सकें। विज्ञान के प्रति बच्चों में रुचि पैदा करने की जे.बी.एस. हाल्डेन की इच्छा को ध्यान में रख कर विज्ञान प्रसार इस पुस्तक को हिंदी में प्रकाशित कर रहा है।

मेरा दोस्त मिस्टर लीकी विज्ञान प्रसार द्वारा प्रकाशित शास्त्रीय महत्व की लोकप्रिय वैज्ञानिक कृतियों की शृंखला की नवीं कड़ी है। हाल्डेन ने शरीर विज्ञान, जैव रसायन और आनुवंशिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे जनसंख्या आनुवंशिकी के संस्थापकों में से एक थे और विकास का गणितीय सिद्धांत उनका बहुचर्चित योगदान माना जाता है। सच तो यह है कि उनकी रुचि विज्ञान के लगभग

हर क्षेत्र में थी। व्यस्ततम वैज्ञानिक होने के बावजूद उन्होंने विज्ञान को लोकप्रिय बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

आशा है, विज्ञान में रुचि रखने वाले सभी पाठक इस पुस्तक का पूरे उत्साह के साथ हार्दिक स्वागत करेंगे।

फरवरी 2009

विनय बी. काम्बले
निदेशक, विज्ञान प्रसार

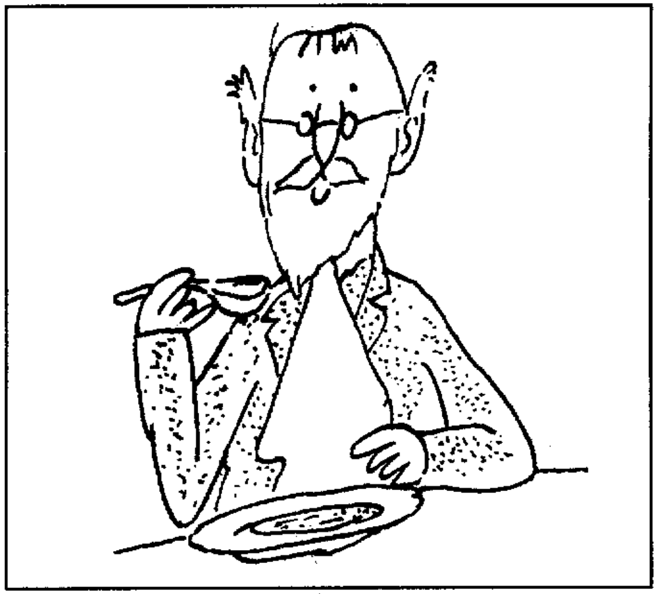

एक दावत जादूगर के साथ

एक दावत जादूगर के साथ

मैंने बीते दौर में कुछ अजब-गजब दावतें खाई हैं। मैं चाहूं तो खदान में खाई, या मास्को में खाई, या फिर एक रईस के साथ खाई गई, दावत का किस्सा सुना सकता हूं। पर मेरा ख्याल है कि एक शाम एक जादूगर के साथ हुई दावत के किस्से में आपको ज्यादा मजा आएगा, क्योंकि वह कुछ ज्यादा ही अजीबो-गरीब थी। लोगों को ऐसी दावतें कोई रोज-रोज तो मिलतीं नहीं। वजह? कितने लोगों की एक जादूगर के साथ अच्छी जान-पहचान होती है, और फिर इंग्लैंड में जादूगर हैं ही कितने? हां, जी हां, मैं असली जादूगर की बात कर रहा हूं। कुछ मदारी अपने आपको जादूगर कहते हैं, और वे बहुत सफाई से काम करते हैं। पर एक जादूगर जो कर सकता है, वह उनके बस की बात नहीं है। मेरा मतलब है कि एक मदारी खरगोश को सुनहरी मछली बना सकता है, लेकिन यह काम हमेशा किसी चीज की ओट, या आड़ में किया जाता है, ताकि तुम्हें पता ही न चले कि दरअसल हो क्या रहा है। पर असली जादूगर, लोगों की आंखों के सामने एक गाय को पेंडुलम घड़ी में बदल सकता है। हां, पर है यह बड़ा ही मुश्किल काम। कोई भी हर रोज दो बार, या हफ्ते में छह दिन वैसा नहीं कर सकता है, जैसा कि मदारी खरगोशों के साथ करते रहते हैं।

पहली बार जब मैं मिस्टर लीकी से मिला तो मुझे नहीं लगा कि वे जादूगर हैं। हमारी मुलाकात कुछ इस तरह से हुई। एक बार शाम को कोई पांच बजे मैं घासमंडी से गुजर रहा था। मैं बीच सड़क की पटरी पर लेम्प पोस्ट की शरण में ठिठक गया, पर उसी बीच गंठा सा एक आदमी, जो अब तक मेरे ही साथ चल रहा था, सीधा आगे निकल गया। तभी उसकी नजर उधर ढलान की तरफ से आ रही एक बस पर पड़ी तो वह छलांग मारकर पीछे आ गया, जो हमेशा बेवकूफी का काम होता है। वह पीछे से आती एक कार के रास्ते में आ पड़ा। अगर मैंने उसके ओवरकोट का कॉलर पकड़कर उसे ऊपर पटरी पर नहीं खींच लिया होता, तो मेरा ख्याल है कि कार ने उसे उड़ा दिया होता। उस नम मौसम में सड़क काफी फिसलन भरी थी, ड्राइवर के ब्रेक लगाने के बावजूद कार रपटती हुई आगे बढ़ गई।

नाटा आदमी मेरा बहुत शुक्रगुजार हुआ पर, वह बुरी तरह से सहम गया था। इसलिए मैंने हाथ पकड़कर उसे सड़क पार कराई। उसका घर, जो पास में ही था, मैं उसे वहां तक छोड़ने चला गया। हां, पर उसका पता नहीं बताऊंगा, क्योंकि हो सकता है कि तुम वहां उसे तंग करने पहुंच जाओ, और उसे अगर यह नागवार हुआ तो बेशक, तुम्हारे लिए मुसीबत खड़ी हो सकती है। मेरा मतलब है कि कहीं अगर उसने तुम्हारे कान करमकल्ले के पत्ते जैसे बना दिए या बालों की रंगत हरी कर दी, दाएं-बाएं पैर आपस में बदल दिए, या फिर ऐसा ही कुछ और कर दिया तो तुम्हारी बड़ी भद्द पिटेगी। लोग देखेंगे और चिढ़ाएंगे, "आया रे आया डगमग डड्डू", या फिर "टेढ़ा टपोरी", या जो भी तुम्हारा नाम हो।

उसने कहा, आजकल का ट्रैफिक मेरी बर्दाश्त के बाहर है, बसों से तो मेरी जान सूख जाती है। अगर लंदन में मेरा कारोबार न होता तो किसी ऐसे छोटे से टापू पर, जहां सड़कें न हों, किसी पहाड़ की चोटी पर, या वैसी ही किसी जगह रहना पसंद करता।' जान बचाने के एहसास से दबा हुआ, वह खाना खाकर जाने की जिद करने लगा। इसलिए मैंने कहा कि बुधवार के रोज डिनर पर आऊंगा। इस दौरान मुझे उसमें कुछ भी अजीब नहीं लगा। सिवाय इसके कि उसके कान बड़े-बड़े थे और दोनों कानों पर बालों के छोटे-छोटे गुच्छे थे, जैसे की चिड़ियाघर में लाइंक्स (एक जंगली बिल्ली) के होते हैं। मैंने सोचा कि मेरे वहां पर बाल होते तो काट डालता। उसने बताया, उसका नाम लीकी है

और वह दूसरी मंजिल पर रहता है।

खैर, बुधवार के दिन मैं उसके घर डिनर पर गया। फ्लेटों के उस ब्लाक की पहली मंजिल पर मैं सीढ़ियों से होकर पहुंचा और बेहद मामूली से दिखने वाले दरवाजे को खटखटाया। फ्लैट का छोटा हॉल भी कुछ खास नहीं था। पर जैसे ही अंदर बैठक में घुसा तो कमरे का ऐसा नजारा मैंने पहले कभी नहीं देखा था। चारों ओर दीवारों पर पेंट या वॉल पेपर की जगह परदे टंगे थे, जिन पर जानवरों और आदमियों की तस्वीरें कढ़ी थीं। एक तस्वीर में दो आदमी एक मकान बना रहे थे, दूसरी में एक शिकारी क्रॉसबो (एक किस्म का तीर कमान) लिए अपने कुत्ते के साथ खरगोश का शिकार कर रहा था। मुझे मालूम था कि वह कसीदाकारी थी क्योंकि मैंने उसे टटोलकर देखा था, पर थी कुछ मजेदार किस्म की, क्योंकि तस्वीरें हर पल बदलती रहती थीं। जब तक उन्हें ताकते रहोगे, कुछ नहीं होगा, पर जैसे ही निगाह हटी कि तस्वीर बदल गई। डिनर करते-करते राजमिस्त्रियों ने एक मंजिल पूरी कर ली, शिकारी ने क्रॉसबो से एक चिड़िया मार गिराई और उसके कुत्ते ने दो खरगोश धर दबोचे।

फर्नीचर भी मजेदार था। बुक केस जो कांच जैसी चीज से बना दिखता था, उसमें मैंने अपनी जिंदगी की सबसे बड़ी किताबें देखीं, कोई भी एक फुट से कम नहीं और उन पर चमड़े की जिल्दसाजी थी। बुक केस के ऊपर-ऊपर अलमारियां थीं। ऊंची-ऊंची पीठों वाली लकड़ी की कुर्सियों पर खूबसूरत नक्काशी थी। दो मेजें थीं। एक तांबे की, जिस पर एक बड़ा सा कांच का जादुई गोला (क्रिस्टल) रखा था। पर दूसरी मेज तो काठ की, दस फीट लम्बी, चार फीट चौड़ी और तीन फीट ऊंची शहतीर थी, जिसमें टागें अंदर डालने के लिए छेद कटे थे। अजीब-अजीब तरह की कई चीजें लटक रहीं थीं। पहले तो मुझे समझ में नहीं आया कि कमरे को रोशन कैसे किया गया है, फिर मेरी नजर पड़ी कि रोशनी गमले में लगे ऐसे पौधों से निकल रही है, जिन्हें मैंने पहले कभी नहीं देखा था। उन पर लाल-पीले, नीले, टमाटर जितने बड़े फल लगे थे जो रोशनी से जगमगा रहे थे। वो कोई सजावटी बिजली के लेम्प नहीं थे क्योंकि मैंने उन्हें छुआ तो वे फलों की तरह नरम और ठंडे थे।

'अच्छा तो' मिस्टर लीकी ने कहा, 'खाने में आप क्या लेंगे?'

'जो भी होगा, सब चलेगा', मैंने कहा।

उसने कहा 'जो भी आपको पसंद है, मिल सकता है, कोई सूप पसंद करिए?'

मैंने सोचा कि उसने खाना रेस्तरां से मंगवाया होगा, मैंने कहा 'मैं बोर्श लूंगा' जो लाल रंग की क्रीम वाला रूसी सूप है।

उसने कहा 'ठीक है, मैं तैयार करवाता हूं।'

'सुनिये, मैं अपने रोजमर्रा के ढंग से डिनर लगवाऊं क्या? आपको यूहीं डर तो नहीं लगता है? '

'नहीं तो', मैंने कहा।

'ठीक है, फिर मैं अपने नौकर को बुलाता हूं, पर ध्यान रहे, वह थोड़ा अजीब सा है।'

इसके साथ ही मिस्टर लीकी ने अपने बड़े-बड़े कान फड़फड़ाए। उनसे ताली बजने की सी आवाज आई पर उतनी तेज नहीं। तभी कोने में रखी तांबे की डेगची, जैसी कि कपड़े धोने की होती है, उसमें से कुछ निकला, एक पल के लिए तो वह मुझे कोई भीगा हुआ सांप लगा। तभी मुझे दिखा, उसके पूरे शरीर के एक तरफ चूसक हैं, वो दरअसल ऑक्टोपस की भुजा थी। उस भुजा ने एक अलमारी खोलकर बड़ी सी तौलिया निकाली, और बाहर निकल आई, दूसरी भुजा को पोंछ कर सुखाया। सूखी भुजा दीवार पर चूसकों की मदद से चिपक गई

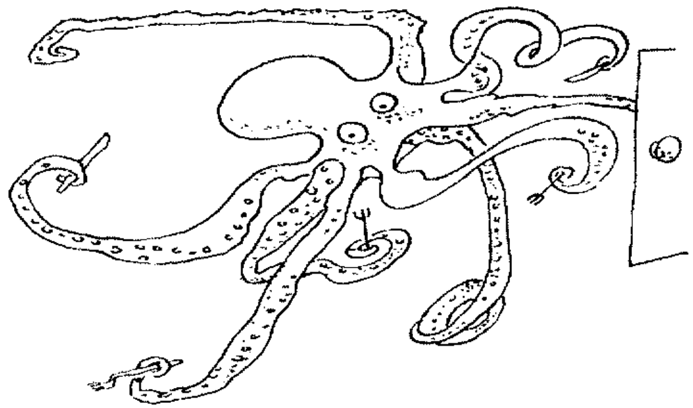

फिर और धीरे-धीरे उस जानवर ने पूरा शरीर निकाला, उसे सुखाया, और दीवार पर रेंगने लगा। मैंने इतना बड़ा ऑक्टोपस पहले नहीं देखा था, उसकी एक-एक भुजा करीब आठ फुट लंबी थी और बोरे जितना बड़ा उसका शरीर था। वह दीवार पर रेंगता हुआ छत पर जा पहुंचा, चूसकों की मदद से वह उससे मक्खी की तरह चिपका हुआ था। जब वह मेज के ठीक ऊपर आ गया तो सिर्फ एक भुजा से टंग गया, और दूसरी सात भुजाओं से बुक केस के ऊपर की अलमारियों से प्लेट, कांटे, छुरे-चम्मचें निकाल कर उन्हें मेज पर सजा दिया।

'वह मेरा नौकर ओलिवर है' मिस्टर लीकी ने कहा। 'इंसान से बेहतर है, क्योंकि काम करने के लिए उसके पास ज्यादा हाथ हैं, और फिर प्लेट को दस चूसकों से पकड़ सकता है, इसलिए उसने कभी कोई प्लेट नहीं गिराई।'

जब ओलिवर ने प्लेट जमा दीं, तो हम जा बैठे और उसने सात भुजाओं से पानी, सोडा, बीयर और चार तरह की शराबें पेश कीं, हर भुजा एक अलग बोतल थामे हुए थी। मैंने पानी और बरगंडी की बेहतरीन लाल शराब पसंद की।

यह सब कुछ इतना हैरत-अंगेज था कि मुझे अपने मेजवान के सिर पर रखा ऊंचा टोप देखकर अचरज नहीं हुआ, पर जब

उसने टोप उतार कर उसमें से दो प्लेट भर सूप परोस दिया तो मुझे कुछ अजीब लगा।

उसने कहा, 'अरे हां, क्रीम भी तो चाहिए, फिलिस यहां आओ'

तो उस पर एक खरगोश जितनी बड़ी हरी गाय दड़बे से दौड़ती हुई निकली, और छलांग मारकर टेबल पर मिस्टर लीकी के सामने खड़ी हो गई, जिन्होंने उससे क्रीम को चांदी के एक जग में दुह लिया, जिसे ओलिवर ने उन्हें इसी लिए थमाया था। क्रीम बहुत जायकेदार थी। मुझे सूप भी बहुत मजेदार लगा।

'आप क्या लेंगे इसके बाद? ' मिस्टर लीकी ने कहा।

'यह मैं आप पर छोड़ता हूं', मैंने जवाब दिया।

'ठीक है' उसने कहा, 'हम भुनी हुई टरबोट मछली और टर्की लेंगे इसके बाद। ओलिवर एक टरबोट तो पकड़ना, और पोम्पेई जरा इसे भूनने की तैयारी करना।'

इतना सुनते ही ओलिवर मछली पकड़ने की बंसी और कांटा अपनी एक भुजा में लेकर उसे हवा में ऐसे फैंकने लगा जैसे कोई सजावटी कीड़े से मछली पकड़ रहा हो। तभी भट्टी में से कुछ सरसराहट सुनाई दी और पोम्पेई उसमें से निकल पड़ा। वह फुटभर का नन्हा सा ड्रैगन था, पूंछ अलग से, कुल मिलाकर एक

फुट और। वह सुलगते अंगारों पर आराम फर्मा रहा था, और सुर्ख लाल हो रहा था। इसलिए मुझे बड़ी तसल्ली हुई कि जैसे ही वह बाहर आया उसने एस्बेस्टस के जूते चढ़ा लिए जो कि उसके पिछले पैरों के पास भट्टी की जाली में पड़े थे।

मिस्टर लीकी ने कहा, ऐ पोम्पेई, अपनी दुम को ठीक से ऊपर रखना। अगर कहीं कालीन दुबारा जला दिया तो तेरे पर बाल्टी भर ठंडा पानी डाल दूंगा।' (निश्चित ही मैं तो ऐसा नहीं करूंगा, एक नन्हे से ड्रैगन पर, जिसकी पतली सी खाल हो, ठंडा पानी डालना बड़ी निर्दयता का काम है)। ये शब्द उसने काफी धीरे से कहे, जिन्हें सिर्फ मैं सुन सकता था।

पर बेचारे पोम्पेई ने धमकी को कुछ ज्यादा गम्भीरता से लिया। वह किकियाया और उसके नथुनों से निकलती पीली लपटों का रंग हल्का नीला पड़ गया। वह दुम और अपने शरीर के अगले हिस्से को ऊपर उचकाए लड़खड़ाता छपर-धपर करता आया। मुझे लगता है कि एस्बेस्टस के जूतों के चलते उसे चलने में काफी मुश्किल हो रही थी, हालांकि उनके चलते कालीन बचा रहा और उसके पिछले पैरों की गर्मी भी बरकरार रही। यूं तो ड्रैगन चारों पैरों पर चलते हैं और शायद ही कभी जूते पहनते होंगे। इसलिए मुझे तो इस पर ही अचरज था कि पोम्पेई चल कैसे रहा था।

मेरा ध्यान पोम्पेई पर इस तरह लगा था कि मैं देख ही नहीं पाया कि ओलिवर ने कब और कैसे टरबोट मछली पकड़ ली, जब तक उस पर दुबारा नजर पड़ी, वह मछली की सफाई खत्म कर चुका था। उसने मछली पोम्पेई की तरफ उछाली। पोम्पेई ने उसे अपने अगले पंजों में लपक लिया जो अब तक थोड़े ठंडे पड़ चुके थे, पर मछली भूनने के लिए उनमें सही आंच थी। उसकी पतली उंगलिओं के पोरों पर नाखून थे, वह मछली को कभी इस हाथ पर, कभी उस हाथ पर पलटता, और खाली हाथ

को अपने सुर्ख लाल गर्म सीने पर सेंकता। जब तक मछली सिकी, और पोम्पेई ने उसको ऑलिवर की दी हुई प्लेट पर रखा, उस वक्त तक ठंड से ठिठुरने लगा था, और उसके दांत बजने लगे थे। दौड़कर आग में वापस जाते समय उसकी खुशी साफ झलक रही थी।

'हां', मिस्टर लीकी ने कहा, 'मैं जानता हूं कुछ लोग कहेंगे कि एक ड्रैगन के बच्चे को इस तरह ठंडाना बड़ी बेरहमी की बात है, उसे जुकाम भी हो सकता है। पर मेरा मानना है कि किसी भी ड्रैगन को देर-सवेर सीखना होगा, कि दुनिया कोई आंच का बिछौना नहीं है, उसे भले नागवार लगे, पर दुनिया उसकी पसंद से उलट, एक ठंडी जगह है। और फिर अगर उनको जमकर गंधक खिलाओ तो जुकाम भी नहीं पकड़ता है। वैसे एक नाक सुड़कता ड्रैगन खुद के लिए, और दूसरों के लिए मुसीबत है। मैंने एक ड्रैगन को छींकने पर सौ गज तक लपटें फेंकते देखा है, पर वह पूरा जवान ड्रेगन था। उसने चीन के सम्राट के महल फूंक डाले। इसके अलावा, ड्रैगन पालने की मेरी औकात नहीं, अगर उससे कोई काम न करा सकूं। पिछले हफ्ते ही मैंने उसकी सांसों से दरवाजे का पुराना पेंट जलाकर साफ किया, और उसकी पूंछ से अच्छी वेल्डिंग हो जाती है। फिर वह सेंधमारों से निपटने के लिए कुत्ते से ज्यादा भरोसेमंद है। कुत्ते को तो वे गोली भी मार सकते हैं, पर पोम्पेई को छूते ही लेड से बनी गोलियां पिघल जाती हैं। खैर, जो भी हो, मेरी राय है कि ड्रैगन कोई सजावटी चीज

नहीं है, वे काम में आने के लिए ही होते हैं।

'क्या, आपको मालूम है' मैंने जवाब दिया, 'मुझे कहते हुए संकोच होता है कि मैंने अब तक पोंपेई के अलावा कोई और जीवित ड्रैगन नहीं देखा।

'क्यों नहीं', मिस्टर लीकी ने कहा, 'मैं भी कितना बुद्धू हूं।' दरअसल मेरे ज्यादातर मेहमान मेरे हमपेशा होते हैं। मैं भूल ही गया कि तुम जादूगर नहीं हो। वो अपने हैट से मछली पर सॉस उड़ेलते हुए कहता रहा, 'वैसे मुझे मालूम नहीं, खाने के दौरान तुम्हें कोई चीज अजीब लगी, या नहीं। हां, पर कुछ लोगों की निगाहें बहुत तेज होती हैं।'

मैंने कहा, 'हां, इससे पहले ऐसा नजारा मैंने आज तक नहीं देखा है।'

नमूने के लिए उस वक्त मैं एक इंद्रधनुषी रंग वाले काफी बड़े बीटल को मुग्ध हो देख रहा था। वह मेज पर अपनी पीठ पर एक नमकदानी लादे मेरी ओर चला आ रहा था।

मेरे मेजवान ने कहा, 'फिर तो आपको शायद अब तक अंदाज लग गया होगा कि मैं जादूगर हूं। सिर्फ पोम्पेई ही असली ड्रैगन है। बाकी सारे जानवर वे लोग हैं, जिन्हे मैंने जानवर बनाया है। ओलिवर को ही लो, जब वह इंसान था, उसकी दोनों टांगें रेलगाड़ी के नीचे आकर कट गईं थीं, मैं टांगें नहीं जोड़ पाया क्योंकि मेरा जादू मशीनी चीजों के खिलाफ नहीं चलता है। बेचारे ओलिवर की खून बहने से जान ही जानेवाली थी। इसलिए मैंने सोचा, उसकी जान बचाने का एक ही रास्ता है, कि उसे कोई बिना टांगों वाला जानवर बना दो। तो फिर उसकी कोई कटी हुई टांग ही नहीं होंगी। इसलिए मैंने उसे घोंघा बना दिया और जेब मैं डालकर घर ले आया। फिर जब कभी मैं उसे कोई ज्यादा मजेदार जीव जैसे कुत्ता बनाने लगता, तो उसकी पिछली टांगें नदारद रहतीं। पर ऑक्टोपस की तो टांगें ही नहीं होती हैं। उसके सर से ही आठ हाथ उग आते हैं। तो जब मैंने उसे ऑक्टोपस बनाया तो मामला ठीक रहा। जब वह इंसान था तो वेटर था, इसलिए जल्दी ही काम सीख लिया। वह एक नौकरानी से तो बेहतर है, क्योंकि छत से लटके हुए ऊपर से प्लेट उठा सकता है, इसलिए वह परसते वक्त आपकी गर्दन के ऊपर नहीं चढ़ा होता है। ओलिवर मुझे मालूम है, तुम्हें क्या पसंद है, तुम बाकी बची मछली और बियर की एक बोतल ले सकते हो।'

ओलिवर ने अपने एक हाथ से मछली उठा कर तोते सी चोंच में रख ली जो काफी बड़ी थी और आठों हाथों के बीचों-बीच थी। फिर उसने आलमारी से बियर की बोतल निकाली और चोंच से उसका कार्क खींचकर खुद को अपने दूसरे दो हाथों की मदद से समेट कर छत पर चढ़ा लिया, जिससे उसका मुंह ऊपर की ओर हो गया। बोतल खत्म होते ही उसने अपनी बड़ी-बड़ी आंखों में से एक से आंख मारी। तब जाकर मुझे यकीन हुआ कि वह जरूर आदमी होगा, क्योंकि मैंने कभी किसी साधारण ऑक्टोपस को आंख मारते नहीं देखा था।

टर्की वैसे ही आई जैसे कि हमेशा ही आती है। ओलिवर ने एक प्लेट नीचे उतार कर उसे एक ढक्कन से ढक दिया। मुझे ढक्कन के नीचे कुछ नहीं दिख रहा था। लेकिन मिस्टर लीकी उठे और छाता स्टैंड से एक बड़ी सी जादुई छड़ी उठाकर प्लेट के आवरण की ओर इशारा किया। कुछ शब्द बुदबाये, और ओलिवर के ढक्कन उठाते ही ताजा भाप उगलती टर्की मौजूद थी।

'यकीनन यह आसान है', मिस्टर लीकी ने कहा, 'कोई भी अच्छा मदारी यह काम कर सकता है, पर खाना एकदम ताजा

होगा, यह यकीन से नहीं कहा जा सकता। इसलिए मैं अपने लिए हमेशा मछलियां पकड़वाता हूं। पर चिड़िया तो कुछ दिन पुरानी हो जाने पर ही ज्यादा अच्छी लगती हैं। आहा, सॉसेज भी चाहिए हमें, यह लो आसान है।'

उसने अपनी जेब से मिट्टी का पाइप निकाला और उसमें फूंका। दूसरी ओर से सॉसेज जैसा एक बादामी लाल बुलबुला सा निकल आया। ओलिवर ने उसे एक हाथ से पकड़ लिया और एक गर्म प्लेट पर डाल दिया, मुझे मालूम है, वह सॉसेज ही थी क्योंकि बाद में मैंने उसे खाया। मेरे देखते-देखते उसने इस तरह छः सॉसेज बनाईं और मैं जब उसे देख रहा था, उसी बीच ओलिवर ने सब्जियां पकड़ाईं। मुझे पता नहीं, वह उन्हें कहां से ला रहा था। सॉस और शोरबा मिस्टर लीकी के टोप से आया, हमेशा की तरह।

इसके तुरंत बाद ही उस शाम का इकलौता गड़बड़झाला हुआ, नमकदानी ला रहे बीटल की टांग मेजपोश की एक सलवट में उलझ गई और सारा नमक मिस्टर लीकी के सामने गिर गया।

वे उससे गुस्से में तमतमाकर बोले, 'तुम्हारी किस्मत अच्छी है लीओपॉल्ड, कि मैं समझदार हूं , अगर कहीं मैं वहमी होता, जो मैं नहीं हूं, तो सोचता मेरे साथ अपशकुन हो गया। पर हां किस्मत तो तुम्हारी ही खराब है, किसी और की नहीं, क्योंकि मेरा इरादा है कि तुम्हें फिर से आदमी बनाकर उड़नकालीन पर बिठा सीधे नजदीक के थाने में भेज दूं। फिर जब पुलिस यह पूछेगी कि तुम कहां छिपे थे, तो क्या तुम सोचते हो कि वो तुम्हारी यह बात मान लेंगे कि "हुजूर मैं साल भर से कीड़ा बना हुआ था?" शर्म भी नहीं आती तुम्हें क्या!

लीओपॉल्ड, बड़ी मुश्किल से अपने पट्टे से निकलकर उलट गया फिर एक शर्मिंदा कुत्ते की तरह अपनी टांगे, हवा में धीरे-धीरे चलाने लगा।

मिस्टर लीकी ने बताया, ''जब लिओपॉल्ड आदमी था, वह लोगों के साथ धोखाधड़ी कर पैसा ऐंठता था। जब पुलिस को पता चला और वह इसे पकड़ने ही वाली थी, ये मदद के लिए मेरे पास आया। मैं सोचता हूं ठीक ही किया मैंने इसके साथ। मैंने इससे कहा, अगर वो तुम्हें पकड़ लेते, तो तुम सात साल के लिए सजा काटते। अगर मुनासिब समझो तो पांच साल के लिए कीड़ा बना दूं तुम्हें, ये कुछ लंबा वक्त नहीं है। अगर तुम एक शरीफ कीड़े की तरह रहे, तो मैं तुम्हें दूसरी शक्ल का आदमी बना दूंगा और पुलिस तुम्हें पहचान नहीं पाएगी। इस तरह लिओपॉल्ड अब कीड़ा है। मैं समझता हूं, अब वह नमक गिराने के लिए शर्मिंदा है। लियोपॉल्ड, अब सारा नमक समेटो, जो तुमने फैलाया है।''

उसने लियोपॉल्ड को पलटकर सीधा कर दिया और मैं उसे नमक बटोरते देखने लगा। उसको एक घंटे से भी अधिक समय लगा। पहले तो वह अपने मुंह से एक बार में एक दाना उठाता फिर खुद को अपने अगले पैरों की मदद से उठाता और तब दाने को नमकदानी में डालता। फिर उसने एक अच्छी तरकीब सोची। उस किस्म के कीड़े की पंखे जैसी छोटी-छोटी मूंछे होती हैं। उसने उनसे नमक समेटना शुरू किया। इस तरह काम जल्दी निबटने लगा। पर थोड़ी देर में उसे तकलीफ होने लगी। उसकी मूंछों में खुजली या कोई और तकलीफ होने लगी, जिससे कि वह उन्हें अपनी टांगों से झाड़ने लगा। फिर उसे कागज की चिंदी मिल गई। जिसे वह अगले पैरों से पकड़कर बेलचे की तरह इस्तेमाल करने लगा, अपने दांतों में पकड़कर।

'बीटल है तो बड़ा चतुर', मेरे मेजबान ने कहा। जब मैं इसे वापस आदमी बनाऊंगा, तो बड़ा कारसाज बनेगा। मुझे उम्मीद है कि अब यह रोटी ईमानदारी से कमा कर खाएगा।

जब हम टर्की निबटा रहे थे, मिस्टर लीकी बार-बार बैचेन हो बीच-बीच में ऊपर की ओर ताक रहे थे।

'मुझे उम्मीद थी, अब्दुल मक्कार स्ट्राबेरी लाने में देर नहीं लगाएगा।'

'स्ट्राबेरी? ' मैंने अचरज से पूछा, 'अभी, बीच जनवरी में।'

'हां भाई, अब्दुल मक्कार को, जो एक जिन्न है, थोड़ी सी स्ट्राबेरी न्यूजीलैंड से लाने भेजा है। वहां तो इस वक्त गरमी का मौसम है। अगर ढंग से चला तो उसे ज्यादा देर नहीं लगानी चाहिए। पर आपको तो पता ही है कि जिन्न कैसे होते हैं। हमारी ही तरह उनकी अपनी कमजोरियां होती हैं। खासतौर पर उत्सुकता। जब उन्हें किसी लंबी यात्रा पर भेजा जाता है, तो बस, ऊंचें उड़ लिए कि स्वर्ग के पास से गुजरते हुए देवदूत क्या कह सुन रहें हैं, जरा सुन लिया जाए; फिर देवदूत उल्काओं की ऐसी मार मारते हैं कि या तो अपने पार्सल यहां-वहां गिरा देते हैं, या फिर अधझुलसे हुए भागे-भागे घर आते हैं। अब तक तो उसे वापस आ जाना चाहिए घंटा-भर हो गया है उसे गए। चलो, अगर उसे देर हो रही है, तो हम तब तक दूसरे फल खाते हैं। वह उठा और टेबल के चारों कोंने अपनी जादुई छड़ी से खटखटाए। हर कोने पर लकड़ी थोड़ी सी फूल गई, फिर चटख गई तथा उसमें से तने फूट पड़े और बढ़ने लगे। एक मिनट में ही वे करीब फुटभर लंबे हो गए, जिनके ऊपर की तरफ ढ़ेर सारी पत्तियां थीं, और निचला हिस्सा पेड़ के तने जैसा था। पत्तियों के बीच कहीं चेरी, कहीं नाशपाती और कहीं आडू झांकते हुए दिख रहे थे पर चौथा फल कौन-सा था, मैं नहीं जानता।'

जब ओलिवर अपने चार हाथों से बची-खुची टर्की साफ कर रहा था और पांचवे से सॉसेज चट कर रहा था, अब्दुल मक्कार आ पहुंचा। पहले तो छत से उसकी टांगें प्रकट हुईं, छत पीछे सिमटती हुई सी लग रही थीं, जैसे कि चिड़ियाघर में पानी में गोता लगाती चिड़िया के पीछे पानी सिमटता जाता है, जब तुम पानी के अंदर पेंगुइन को गोता लगाते देखते हो, पानी बस पल भर के लिए कंपकपाता है। वह ऑलिवर के एक बाजू से बाल-बाल बचकर फर्श पर सही-सलामत आ पहुंचा। झटके को रोकने के लिए उसने अपनी टांगें मोड़ लीं और खूब झुककर मिस्टर लीकी को सलाम बजाने लगा। उसकी रंगत बादामी थी और नाक लंबी। वह दिखने में बिल्कुल आदमी जैसा ही था, सिवाय इसके कि उसके चमड़े के दो पंख थे, जो पीठ पर सिमटे हुए थे और हां, उसके नाखून सोने के थे। वह सर पर पगड़ी और हरे रेशमी कपड़े पहने था।

हे दुनियां के मयूर, इंसाफ के रखवाले, आपका नाचीज नौकर ताजातरीन, और आसानी से हासिल न होने वाले फलों को लेकर हाजिर है।

आपके इस नामुराद गुलाम की खुशी, डेविड के साहबजादे, बादशाह सुलेमान को हुई उस खुशी जैसी ही है, (उसे अमनो चैन नसीब हो, अगर अब तक न हुआ तो) जो उसे मलिका ए शेबा बिलकिस, को देखकर हुई थी। खुशियों और दोस्ती के दुश्मनों का साया इस दर से बहुत दूर रहे।'

'बुद्धि भरमाने वाले आपकी समझ की अथाह थाह को छू तक न सकें।'

हे दानवों का दमन करने वाले बेतालों के अफसर, कैसे-कैसे नामवर तांत्रिक, और महान ओझा आपके दरबार की शान में चार चांद लगाते हैं।

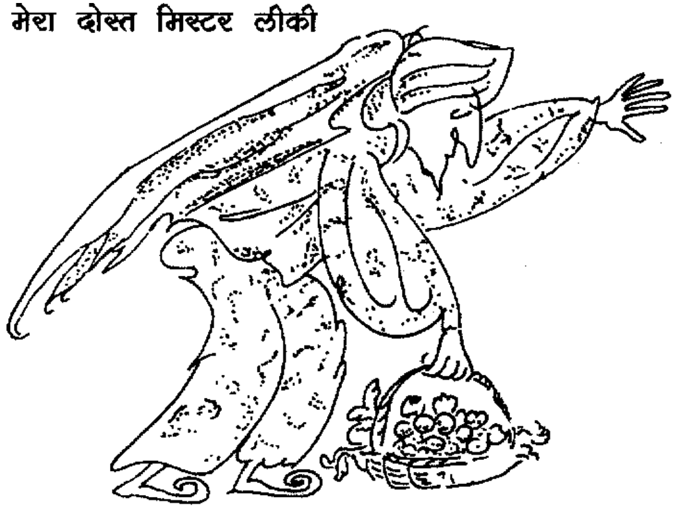

'ओ अब्दुल मक्कार, पैगंबर शोएब के उपदेशों की पोथी में दर्ज है कि मिस्र के सम्राट फराओ की बिल्ली की जान उत्सुकता की वजह से गई थी।'

'बजा फरमाया मेरे आका।'

'अब जाने की इजाजत है तुम्हें। मुझे रोज के ही वक्त मुझे जगाना। पर ठहरो ! मेरा सेफ्टी रेजर ब्लेड बिना पड़ा है और लंदन की दुकानें बंद हो चुकीं हैं। इसलिए मोंट्रियाल की ओर रवाना हो जाओ, जहां अभी भरी दोपहर है, वहां से मेरे लिए एक पैकेट ब्लेड खरीद लाओ।'

कांपता हूं थरथर, पर बजाऊंगा हुक्म। 'क्यों कांपते हो तुम, ऐ साहसी जिन्न।'

ओ वशीकरण विद्या के बादशाह, निचले आकाश की हवाओं में उड़ने वाले हवाई जहाजों की भरमार है, जो जादुई कालीनों को पछाड़ने वाली रफ्तार से उड़ते हैं और हर जहाज शेबा के महान बांध के ढहने से भी ज्यादा कानफाडू शोर करते जाते हैं और ऊपर उल्कापिडों का खतरा है।'

'इसलिए पांच मील ऊपर उड़ो, इससे दोनों ही मुसीबतों से बचे रहोगे और अब ऐ हुक्म बजाने वाले, मेरी तरफ से तुम्हें रवाना होने की इजाजत है।'

'अफलातून की अक्ल, शिक्क की लंबी उम्र, सुलेमान का खजाना और सिकन्दर की कामयाबी आपकी दासी हो।'

'ये सौगातें तुम्हें भी मिलें, लेकिन अब रवाना होओ।'

जिन्न इस बार फर्श से होकर गायब हो गया। जब तक वो और मिस्टर लीकी बतिया रहे थे, पेड़ चार फुट ऊंचे हो चुके थे, उनमें फूल आ चुके थे। फूल अब झड़ रहे थे और फल बड़े हो रहे थे।

'आपको जिन्न से ऐसे ही पेश आना पड़ता है, नहीं तो वे तुम्हारी इज्जत नहीं करेंगे। मुझे उम्मीद है कि तुमने इस बात का बुरा नहीं माना होगा कि मैंने उससे तुम्हारा परिचय नहीं कराया, पर कभी-कभी ये जिन्न जरा बेढभ हो जाते हैं वक्त-बेवक्त। मेरे मेजबान ने कहा, 'हां, अब्दुल मक्कार भला बंदा है और उसका दिल भी नेक है, पर अगर तुम्हें उसे वापस भेजने का मंत्र नहीं मालूम हो, तो वह परेशानी का सबब बन सकता है। मान लो तुम क्रिकेट खेल रहे हो और तेज गेंदबाज से मुकाबला हो, तभी वो बीच में आ टपके, और फरमाने लगे कि स्टंपों के रखवाले, हुक्म हो तो आपके दुश्मन का वध कर दूं, या कहें तो उसे खुजली भरा बदसूरत बकरा बना दूं? तुम्हें पता है, मैं क्रिकेट देखने का शौकीन था, पर अब कहां देख सकता हूं, जरा सा जादू सारा मैच चौपट कर सकता है। पिछले साल मैं आस्ट्रेलिया के खिलाफ ग्लूसेस्टर का मैच देखने गया था, और चूंकि ग्लूसेस्टरशायर से थोड़ी सी सहानुभूति थी मेरी, आस्ट्रेलिया के विकेट, आंधी में पके हुए आम की तरह टप-टप टपक गए। अगर मैच खत्म होने के पहले ही मैं खिसक नहीं लिया होता, तो आस्ट्रेलिया की तो 'धुलाई' हो गई होती। इसके बाद तो मैं कोई टेस्ट मैच देखने नहीं जा सका। आखिरकार, हर कोई चाहता है

कि बढ़िया टीम जीते।'

इसके बाद, फिलिस गाय की क्रीम के साथ हमने न्यूजीलैंड की स्ट्राबेरी खाईं, जो बहुत जायकेदार थीं । उस बीच पोम्पेई, जो चलता फिरता स्टोव था, फिर आया, उस पर हमने कुछ पनीर पकाया वेलिश रेअरबिट बनाने के लिए। फिर हम लोग डिज़र्ट (मीठा) खाने लगे। अब तक फल पूरे पक चुके थे। चौथे पेड़ पर कोई आधा दर्जन खूबसूरत सुनहरे फल लगे थे जो खूबानी जैसे थे, पर थे काफी बड़े। मेरे मेजबान ने बताया कि ये आम हैं जो आमतौर पर हिन्दुस्तान में उगते हैं। इंग्लैंड में उनको बिना जादू के नहीं उगाया जा सकता है।

तो मैंने कहा, 'मैं आम खाकर देखूंगा।'

'आहा', मिस्टर लीकी ने कहा, 'इसी के चलते मेरी पहुंच लोर्ड मेलचेट, या वेस्टमिनिस्टर के ड्यूक, या किसी भी रईस तक है। ये लोग हवाई जहाज से आम तो मंगा सकते हैं, पर किसी शानदार डिनर पार्टी में बतौर डिज़र्ट पेश नहीं कर सकते हैं।'

'क्यों? ' मैंने पूछा।

ऐसा लगता है, तुमने आम कभी नहीं खाया है। आम खाने की सही जगह तो स्नानघर में ही है। इधर देखो। इसका छिलका कड़ा है, और अंदर से यह रसीला गूदेदार है, तो जैसे ही छिलका कटा कि सारा रस पिचकारी सा पिच्च से बाहर निकल आता है। और लोगों की सफेद कमीज का सत्यानाश हो जाता है। क्या तुमने कभी कड़क कलफदार छाती वाली कमीज पहनी है? '

'अक्सर नहीं।'

'अच्छा करते हो। तुम्हें शायद पता नहीं होगा कि लोग उन्हें क्यों पहनते हैं। बड़ी अजीब कहानी है। कोई सौ साल पहले व्हिज़टोपैकोटल नाम का एक महान मेक्सीकन मांत्रिक यूरोप आया। वह रईस लोगों से बहुत चिढ़ गया। उसको रईसों की रईसी से कुछ एतराज नहीं था, पर उसका मानना था कि वे लोग अपना रुपया भौंड़ी चीजों पर जाया करते थे, और ये बेहद नीरस, तथा खुद में ही मगन रहने वाले लोग हैं। तो उसने तय किया कि उन सभी रईसों को कछुआ बना दिया जाए। पर इसके लिए किसी को एक साथ दो मंत्रों का जाप करना होता है जो बड़ा मुश्किल काम है। इस खातिर व्हिज़टोपैकोटल, अंग्रेज ओझा मिस्टर बेनेडिक्ट बैरेन्कल के पास उसके दो सिर वाले तोते को मांगने के लिए पहुंचा। वह वैसा ही था जैसा कि रूस और आस्ट्रेलिया के झंडों पर दो सिर वाला बाज होता है। वह दो सिर वाले तोते के एक मुंह को एक, और दूसरे मुंह को दूसरा मंत्र सिखा रहा था। जब तोता दोनों मंत्रों को एक साथ जपता तो यूरोप के सारे रईस फौरन कछुआ बन जाते, लेकिन मिस्टर बेनेडिक्ट बैरेन्कल ने उसको समझा-बुझा कर थोड़ी कम सख्ती करने के लिए राजी कर लिया, तो अंत में वह इस बात के लिए मान गया कि अगले सौ सालों तक यूरोपियन रईस सिर्फ कछुओं के काबिल कपड़े पहनेंगे। चूकिं कछुओं का सीना सख्त और सपाट होता है, इसलिए उस किस्म के जानवरों को ही सख्त सीने वाली कमीज में आराम मिलेगा। उन दोनों ने सारी कमीजों को सख्त बनाने का मंत्र पढ़ा, और उसका भरपूर असर हुआ। पर अब उसका असर कम हो रहा है, थोड़े ही वक्त के बाद कोई भी ऐसे बेवकूफाना कपड़े नहीं पहनेगा।

'जहां तक तुम्हारे आमों की बात है, तुम इन्हें आराम से खा सकते हो, अगर जरा सब्र करो तो मैं एक मंत्र पढ़ता हूं फिर वह तुम्हारे ऊपर नहीं चुएगा।'

छोटा सा मंत्र और जादुई छड़ी के कुछ इशारे पर्याप्त थे, फिर मैंने आम खाए। वे अद्भुत थे। मैंने अब तक जितने फल खाए थे, उनमें से केवल यही फल सबसे अच्छी स्ट्राबेरी से भी अधिक जायकेदार था। उसके जायके का बयान मेरे बस की बात नहीं

है। क्योंकि उसका छोटी किसमिस सहित कई चीजों का घुला-मिला स्वाद लगता था। उसमें जैसे गर्मी के दिनों में चीड़ के जंगलों की खुशबू घुली थी। उसकी बीच में बड़ी चपटी गुठली थी जो मुंह में ना समाए, जिसके चारों ओर पीला गूदा था। मंत्र की ताकत को परखने के लिए थोड़ा सा रस मैंने अपने वेस्ट कोट पर टपकाया तो वह उछलकर मेरे मुंह में चला गया। मिस्टर लीकी ने एक नाशपाती खाई और मुझे पांच आम दिए, लेकिन मुझे उन्हें अपने स्नान घर में खाना पड़ा क्योंकि वे मंत्रित नहीं थे।

जब हम लोग कॉफी पी रहे थे (जो टोप में से ही निकली

थी) मिस्टर लीकी ने अपनी छड़ी से मेज के एक कोने को रगड़ा तो उससे बढ़िया मुलायम हरी घास उगने लगी। जब वह तकरीबन लॉन की घास जितनी ऊंची हो गई, तो उसने फिलिस को उसके दड़बे में से बुलाया और उसने थोड़ी घास खाई। थोड़े वक्त तक हम लोग जादू, फुटबाल मैच और खास किस्म के कुत्तों, जैसे बेडलिंगटन टेरियर और झबरीले बालों वाले डचहाउन्ड के बारे में बात करते रहे। फिर मैंने कहा कि मुझे अब घर चलना चाहिए।

'मैं तुम्हें घर तक छोड़ दूगां' मिस्टर लीकी ने कहा, 'जब कोई फुरसत का दिन हो तो साथ दिन बिताने के लिए मेरे यहां आ जाओ'। अगर मेरे काम-काज को देखने में तुम्हारी रुचि हो तो, हम लोग किसी दोपहर में घूमने के लिए हिन्दुस्तान, जावा या कही और घूमने जा सकते हैं। किस दिन फुरसत है, मुझे बताना। अभी जरा इस कालीन पर खड़े हो जाओ, और आंखे मूंद लो, क्योंकि अक्सर लोगों को शुरू में दो-तीन बार जादुई कालीन पर चक्कर आते हैं।

हम कालीन पर सवार हो गए। मैंने चलते-चलते आखिरी बार मेज को देखा तो लिओपॉल्ड अब तक नमक समेट चुका था और आराम फरमा रहा था। फिलिस जुगाली कर रही थी। फिर मैंने आंखे बंद कर लीं, मेरे मेजबान ने कालीन को मेरा पता बताया। उसने अपने कान फड़फड़ाए ही थे कि सर्द हवा के थपेड़े मेरे गालों पर बजने लगे, मैंने सिर में हल्का सा चक्कर महसूस किया। मिस्टर लीकी ने मुझसे आंखें खोलने के लिए कहा, और मैं पांच मील दूर अपने घर की बैठक में था। चूंकि कमरा छोटा था, जिसमें किताबें, तथा और भी चीजें फर्श पर बिखरी पड़ीं थी, कालीन नीचे नहीं उतर सकता था इसलिए वह फर्श से एक फुट ऊपर मंडराता रहा। किस्मत

से वह काफी सख्त था, इसलिए मैं उससे नीचे उतर आया और बत्ती जलाई।

'शुभरात्रि' मिस्टर लीकी ने झुककर मुझसे हाथ मिलाते हुए कहा और अपने कान फड़फड़ाते हुए कालीन समेत गायब हो गए।

मैं अपने कमरे में अकेला रह गया था, पर मन खुशी से भरा था, और हाथों में मौजूद आमों का पेकेट यह यकीन दिला रहा था कि मैं सपना नहीं देख रहा था।

अगर आपको इस कहानी में मजा आया तो बाद में मैं आपको उस दिन का किस्सा सुनाऊंगा, जब मैंने एक दिन मिस्टर लीकी की मदद करते हुए गुजारा, और कैसे शरारती पोम्पेई भाग कर एक ज्वालामुखी के अंदर घुस गया। पर वह और ही किस्सा है। फिर भी मुझे उम्मीद है कि आप भी मेरे दोस्त मिस्टर लीकी को बढ़िया इंसान मानेंगे, क्योंकि मेरा यही मानना है।

जादूगर की जिंदगी एक दिन

जादूगर की जिंदगी एक दिन

अपने दोस्त मिस्टर लीकी के साथ किए एक डिनर के बारे में मैं पहले बता चुका हूं, जो एक जादूगर हैं और लंदन में रहते हैं। पिछली बार जुदा होने के पहले मैंने उनसे कोई एक और दिन साथ गुजारने का वादा किया था। तो अब उसी दिन का किस्सा सुनाता हूं।

सालों पहले ही मैं क्रिसमस की पूर्वसंध्या पर लंबी जुराब टांगना छोड़ चुका हूं। एक वजह तो यह है कि मरे पास लंबी जुराबें हैं ही नहीं क्योंकि मैं हमेशा पैंट पहनता हूं। जब कभी हाफ पैंट पहनता हूं तो उसके साथ मोजे पहनता हूं, जिससे पिंडलियां गोरी बनी रहें। और मैं नहीं मानता कि फादर सांता क्लाज को जुराबों में उन सभी चीजों को घुसेड़ने की जगह मिल जाएगी जिनकी मैं तम्मना रखता हूं। इसलिए जब क्रिसमस की सुबह मेरी आंख खुली तो पलंग के पायताने पर लटकी जुराब को देखकर चौंक उठा, यही नहीं वो पलंगपोश पर चलती हुई मेरी ओर बढ़ने लगी। जब जुराब मेरे सीने पर पहुंची तो काफी झुक कर अर्शी सलाम सा किया, और उसने अपने अंदर से एक मुहरबंद चिट्ठी, टर्की का अण्डा, पन्ना जड़ी टाईपिन, एक फल, जिसके बारे में बाद में पता चला कि वह शरीफा है, और एक पाकेट डायरी उलट दी। मुझे तुरंत ही अंदाज लग गया कि ये मिस्टर लीकी के तोहफे हैं, क्योंकि मेरा कोई भी दोस्त इस अंदाज से भेंट नहीं भेज सकता था। जब चिट्ठी खोली तो उसमें बॉक्सिग वाले दिन के अगले दिन साथ-साथ दिन बिताने का आमंत्रण था। इसके अलावा उसमें बताया गया था कि अंडा और फल किसलिए भेजे गए हैं, साथ ही यह भी बताया गया था कि डायरी और टाइपिन अभिमंत्रित हैं, इसलिए वे खोएंगीं नहीं, जैसा कि मेरी डायरियों और टाईपिनों के साथ अक्सर होता है।

बाक्सिंग वाले दिन के अगले दिन नाश्ते के बाद मैं मिस्टर लीकी के फ्लैट पर जा पहुंचा। इस बार दरवाजा मिस्टर लीकी के जिन्न अब्दुल मक्कार ने खोला। वह बैरे की तरह सजा था, कोट में पीतल के बटन जड़े थे। उसने मेरा कोट-हैट स्टैंड पर टांगने के लिए ले लिए। इसमें हैरत की बात इतनी ही थी कि वह मुझसे दो फुट की दूरी पर खड़ा था और जब मेरा कोट उतार रहा था तो उसने उसे हाथ भी नहीं लगाया। पर इस घर के अजब अनुभवों की आदत पड़ती जा रही थी।

जब मैं कमरे में पहुंचा तो मिस्टर लीकी ने गर्मजोशी से मेरा स्वागत किया। अगींठी पर बैठे ड्रैगन पोम्पेई ने भी वैसा ही किया। जब मैं अंदर पहुंचा तो वह अपने पंख फड़फड़ाने लगा, जिससे अंगारों से धुआं उठने लगा, लेकिन मिस्टर लीकी ने जैसे ही मेज पर पड़ी जादुई छड़ी उठाई, वह अपने पंजों में सर दुबका कर

शांति से पसर गया।

'मैं सोचता हूं कि लंच के लिए हम जावा चल सकते हैं', मेरे मेजबान ने कहा, 'पर चलने से पहले इस सुबह मुझे दो चार काम निबटाने हैं। क्या तुम मेरे साथ जाना चाहोगे, या नहीं तो फिर यहीं ठहर कर पाइप पियो। मैं मन बहलाने का इंतजाम कर दूंगा।'

'मैं आपके साथ रहूंगा, अगर मुझसे कोई अड़चन न हो तो', मैंने जवाब दिया।

'अरे नहीं, मुझे तो तुम्हारे साथ से खुशी होगी, पर तुम्हें अदृश्य होना पड़ सकता है, इसलिए इसका रियाज कर लो, क्योंकि पहली बार यह बड़ा अटपटा लगता है। अंधकार की यह टोपी पहनकर कमरे के एक दो चक्कर लगा लो। अगर नीचे देखा तो चक्कर आ सकते हैं। अगर तुम्हें लगे कि तुम संभल नहीं पा रहे हो तो सीधे अपने सामने देखना।'

उन्होंने मुझे काले रंग की नोकीली टोपी थमाई, जो वैसी ही थी जैसी कागजी टोपियां क्रिसमस क्रेकरों से निकलतीं हैं। इतनी काली चीज मैंने अब तक नहीं देखी थी, उसकी रंगत आमतौर पर दिखने वाले काले कागज या कपड़े जैसी नहीं, बल्कि ब्लैक होल सी थी। तुम्हें पता ही नहीं चलेगा कि यह किस चीज की बनी है, खुरदरी है या चिकनी। वह कपड़े या किसी और आम चीज जैसी लगती ही नहीं थी। पर थी बेहद नरम इंडिया रबड़ जैसी। जैसे ही उसे सर पर रखा, मेरे हाथ अदृश्य हो गए। पहले तो मुझे पता नहीं क्यों, हर चीज अजीब सी लगी। फिर दिखा कि वे दो भुतही नाकें जो बिना ध्यान में आए हमेशा ही मेरे आगे रहती थीं, अब गायब थीं। मैंने अपनी एक आंख मूंदी, जैसा सभी लोग अपनी नाक को साफ तौर पर देखने के लिए करते हैं, पर आंख बंद करने के बाद भी कोई फर्क नहीं पड़ा। बेशक, मैं अदृश्य हो चुका था। पलकें, नथुने एक दम पारदर्शी हो चुके थे!

तब मैंने उस तरफ देखा, जहां मेरा धड़ और पैर होने चाहिए, पर मुझे कुछ नहीं दिखा। मुझे दहशत से चक्कर आते लगने लगे, मुझे अपने अदृश्य हाथों से मेज थामनी पड़ी। जैस-तैसे मैंने खुद को संभाला और ठीक सामने देखने लगा। थोड़ी ही देर में मैं कमरे में आसानी से घूमने-फिरने लगा।

'जब हम बाहर निकलें तो टोपी जेब में डाल लेना।' मेरे मेजबान ने कहा, 'फिर जब तुम्हें गायब होना हो तो अपने टोप के नीचे इसे पहन लेना। यह उसे भी तुम्हारे कपड़ों की तरह अदृश्य बना देगी।'

हम बाहर सड़क पर निकल आए। इस बार हाल में कोई नहीं था, पर मेरा हैट और कोट खूंटी से उड़कर मेरे शरीर पर खुदबखुद आ गए।

मिस्टर लीकी ने टैक्सी में बैठते ही कहा, "पहले मैं एक कुत्ते से निबटूंगा, वह दिक्कत का सबब बना हुआ है। लोगों को काट खाता है। इसके लिए मैं कुछ करूं तो ठीक, वरना पुलिस तो उसे मार डालेगी। पर मैं कुछ न कुछ जरूर करूंगा, इसके लिए।" इसके बाद मैं एक चेक को अदृश्य बना दूंगा। बस ऐसे ही एक-दो काम करने हैं। दरअसल, लंदन में कोई बड़े पैमाने पर तो जादू कर नहीं सकता है। उससे लोगों का ध्यान उस तरफ खिंच जाएगा और वे मुझे तंग करने लगेंगे, जो मुझे नापसंद है। पर मैं चाहता हूं कि लोगों के थोड़े-बहुत काम आऊं। नमूने के तौर पर, मुझे लगता है कि हमारा टैक्सी ड्राइवर उन दागों के बिना अधिक अच्छा दिखेगा, है ना?

निश्चित ही टैक्सी ड्राइवर का मुंह मुंहासों की उन नायाब दवाइयों के लिए इश्तहार सा था जिनके बारे में अखबारों में आप पढ़ते रहते हैं। इतना कह कर मिस्टर लीकी ने अपनी छतरी उठाई, जिसका हैंडल इतना अजीब था कि मैंने फौरन समझ लिया, वह जरूर जादुई छड़ी ही होगी। वह उसे घुमाने लगे। मुझे टैक्सी

के अगले शीशे में दिख रहा था कि ड्राइवर के मुंह के दो मुहांसे एकाएक गायब हो गए। जब तक हम अपने ठिकाने पर पहुंचे। उसका चेहरा टमाटर जैसा चिकना हो चुका था, हांलाकि ड्राइवर को पता नहीं चला कि क्या हो रहा है।

मिस्टर लीकी ने उसे एक सिक्का दिया। 'अरे साहब आपने मुझे एक गिन्नी दे दी है, ड्राइवर ने कहा।

'फिर से देखो।'

'हां, मैंने 1914 के बाद से ऐसी एक भी गिन्नी नहीं देखी है।'

'बिल्कुल सही', मिस्टर लीकी ने मुझसे चलते-चलते कहा, 'मेरे पास जादुई बटुआ है, जिसमें से सोने की गिन्नियां तो निकलती हैं, नोट नहीं, क्योंकि जादुई बटुओं की खोज छपाई शुरू होने से काफी पहले हुई थी। ये समस्या है। पहले विश्वयुद्ध के पहले कोई भी गिन्नियों में भुगतान कर सकता था, और कोई चौंकता भी नहीं था, पर आजकल ज्यादातर लोगों ने कभी सोने की गिन्नी, या वैसी आधी गिन्नी नहीं देखी है, जो मैंने ड्राइवर को दी थी। हां, अब आसपास भीड़भाड़ नहीं है, मैं सोचता हूं, तुम्हें अपनी टोपी पहन लेनी चाहिए। भीड़ में अदृश्य होने का कोई फायदा नहीं है। लोग तुमसे टकराऐंगे और भयभीत हो उठेंगें।'

मैंने टोपी लगाई और गायब हो गया। मिस्टर लीकी ने अपने छाते से अपनी ओर इशारा किया तो वे खुद छाते समेत गायब हो गए। केवल उनके छाते की नोक दिख रही थी जो अब फुटपाथ पर चिड़िया की तरह फुदक-फुदक कर चल रही थी।

उन्होंने कहा, 'अब मेरे पीछे इस बगीचे में आओ और देखो मैं उस कुत्ते से कैसे निबटता हूं। पीछे का दरवाजा बंद कर देना। वह अगर हम दोनों में से किसी को काटने की कोशिश करे तो रोकना मत उसे। वह ऐसा नहीं कर पाऐगा।'

जैसे ही मैंने दरवाजा बंद किया एक बड़ा मोंग्रेल कुत्ता गुर्राता हुआ हमारी ओर बढ़ा। वह गुस्से में था, पर परेशान दिखता था, लेकिन जल्दी ही उसने गुर्राना छोड़ दिया, और इधर-उधर सूंघने लगा।

अचानक उसने इरादा पक्का कर लिया। मुझे लगता है, सिर्फ ग्रेहाउंड को छोड़कर बाकी सारे कुत्ते दिखाई देने वाली चीजों की तुलना में गंध पर ज्यादा भरोसा करते हैं। जो भी हो, वो कुत्ता अचानक मिस्टर लीकी की ओर झपट पड़ा। मुझे दिख रहा था कि वे कहां हैं क्योंकि उनकी छतरी की नोक दिख रही थी। कुत्ता उनकी ओर लपक ही रहा था कि छतरी की नोक उठी और उससे गुलाबी धुएं का गुब्बारा निकला। कुत्ता रुका तो नहीं, पर अचानक वह पहले से अधिक उलझन में दिखने लगा। तभी मिस्टर लीकी का बांया पांव टखने के नीचे से दिखने लगा। बड़ा अजीब नजारा था। कुत्ते को आखिरकार कुछ काटने के लिए मिला, और गुर्राता हुआ उस पर टूट पड़ा। मिस्टर लीकी, या कम से कम उनका बांया पांव वैसे ही बिना हिले-डुले खड़ा रहा, इससे पहले कि मैं उसको रोकूं, उसने पांव को काट खाया। तुम तो जानते ही होगे कि जब कुत्ते गुस्से में होते हैं तो वे अपने ऊपरी होंठ कैसे ऊपर की ओर खींच लेते हैं, जिससे उसके सारे दांत साफ नजर आने लगते हैं। मैं साफ देख पा रहा था कि इस कुत्ते के शानदार दांत हैं। पर जब उसने मिस्टर लीकी की पैंट

में उन्हें धंसाया तो वे उसमें घुसने के बजाय मुड़ गए। 'मैंने उनको सफेद इंडियन रबड़ का बना दिया है।' उसने कहा, 'सिवाय पीछे के चार चबाने वाले दांतों के, जो बिस्कुट चबाने के लिए ठीक रहेंगे। अहा, वो रहा इसका मालिक। मुझे अपना पैर फिर से छुपा लेना चाहिए।' जैसे ही कुत्ते का चिड़चिड़ा मालिक दिखा, पैर गायब हो गया। पर साफ था कि मिस्टर लीकी ने उस लात से कुत्ते को हवा में उछाल दिया था। जहां वह कुछ पल टंगा रहा। मैंने किसी कुत्ते को ऐसी अजीब हालत में पहले कभी नहीं देखा था। वह अपने मुड़े-तुड़े दांतों वाला मुंह बाए हवा में टंगा था, कि अचानक धपाक से नीचे आ गिरा और दुम टांगों के बीच समेटे भाग लिया।

चिड़चिड़ा आदमी, अचरज से मुंह बाये और टांगें चौड़ाए जड़ खड़ा रहा। इससे पहले कि उसका मुंह और खुलता, उसने देखा कि बगीचे के गेट का कुंडा घूमा, दरवाजा खुला, जैसे ही हम बाहर निकले, फिर से बंद हो गया। जैसे ही हम गली के मोड़ पर पहुंचे, हम फिर से दिखने लगे जिससे मुझे बड़ी राहत मिली। क्योंकि खुद को बिना देखे, अपने होने को महसूस करना बड़ा अजीब होता है।

जब हम दूसरी टैक्सी में बैठ रहे थे, मिस्टर लीकी ने कहा, 'अगर उस आदमी को अकल होगी, जो उसके पास नहीं है, तो वो मेले ठेलों में फिडियो के इंडिया रबड़ के सफेद दांतों का तमाशा दिखाकर अपनी किस्मत बना सकता है। लोगोंको उससे कटवाकर आठ आने वसूल सकता है। अरे हां, वैसे अगर कोई कहीं किसी मेले में रबड़ के दांतों वाले कुत्ते की खबर पढ़े तो मैं चाहूंगा कि वह मुझे जरूर खत लिखे, क्योंकि मैं यह जानने के लिए फिडियो से एक बार फिर मिलना चाहूंगा, कि उसको रबड़ के दांतों की आदत पड़ी कि नहीं, जैसे लोगों को नकली दांतों की पड़ जाती है।'

"मुझे उम्मीद है तुम्हें जरूर अचरज होगा कि मैं जादू से किसी चीज को रबड़ का कैसे बना सकता हूं, क्योंकि यूरोप में रबड़ नए किस्म का पदार्थ है, और हमारे पास नये किस्म की चीजों, जैसे स्टील, अल्यूमिनियम, एस्पिरिन या नकली रेशम पर असर डालने वाले मंत्र नहीं हैं। मैंने यह तरकीब 1912 में, जर्मनी के शहर ब्रोकेन में हुई ओझाओं की अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस के दौरान एक ब्राजीली जादूगर से सीखी थी। मैंने उसे कुछ स्टील और लोहे के जादू सिखाए, बदले में उसने मुझे दांतों को रबड़ का बना देने का गुर दिखाया। उन लोगों को यह जादू जगुआर, मगरमच्छों और एनाकोंडा से निबटने में बड़ा उपयोगी लगा। वहां तो रबड़ पेड़ों से निकलता है, इसलिए जादूगर रबड़ के बारे में सब कुछ जानते हैं। अब हम लोग एक सूदखोर से मुलाकात करने जा रहें हैं जो अपना परिचय मेकस्टीवार्ट कह कर देता है। पर यह उसका असली नाम नहीं है। उसका असली नाम बहुत भोंड़ा है। उसमें जेड अक्षर की भरमार है। अगर तुम्हें किसी का असली नाम न पता हो, तो तुम जादू से उसका बाल भी बांका नहीं कर सकते हो। इसलिए सूदखोरों के नाम अकसर नकली होते हैं, ताकि वे अच्छे जादूगरों से अपना बचाव कर सकें, जो उन्हें कबाब, दरवाजे का हत्था, पांवपोश, आराम कुर्सी या कोई और उपयोगी चीज में बदलना चाहेंगे। अगर तुम्हारा जादू से कुछ भी लेना देना है, तो असली नाम छुपा कर हमेशा फायदे में रहोगे, और काले जादू के मामले में तो यह और भी फायदेमंद साबित होगा। मेरा असली नाम कोई नहीं जानता। ठीक वैसे ही, जैसे लोग लंदन का असली नाम नहीं जानते हैं। उसका एक गुप्त नाम है, जिसे सिर्फ मेयर साहब जानते हैं, वो उसे हर साल नये मेयर को बता देते हैं। अगर किसी बदमाश जादूगर को लंदन का असली गुप्त नाम पता चल गया तो वह शहर को स्टो-आना-द-वोल्ड, बैलीबुनियन, टिंबकटू, या ओम्ब्रोरोम्बोंगा बना देगा, जो बड़ा अखरेगा।'

'इसीलिए राजाओं और राजकुमारों के इतने सारे नाम होते हैं जिससे उन पर टोटका करना मुश्किल हो जाए। हां, किसी को मंत्रबिद्ध करना है तो सामान्य तौर पर उसका पूरा नाम एक दम सही उच्चारण के साथ लेना होता है, और पूरा मंत्र और नाम एक सांस में पढ़ना आना चाहिए। इसलिए राजा महाराजों के नाम ऐसे होते हैं जैसे, ऑगस्टस बेनहैदाद चार्लमैग्ने डैगोबर्ट, ऐथेलवुल्फ, फेड्रिक जेन्सरिक हार्डीकैन्यूट इक्झसटलिलकोकिटल जेहोइयाकिम कामेहामेहा लिओनिडस मैक्सिमिलिअन नेपोलियन, ओबाडिया पोलीक्रेट्स, क्विरीनस रेहोबोम, सुबीलुलियुमा टैरासीकोडिस्सा उम्मिलिकाजी वैलेंटिनियन वेन्सेस्लास, झेरेक्सेस योशीहितो जेडेकियाह एक सौ सत्रहवां।*

इतना बोलने के बाद, खासतौर पर इक्झसटलिलकोचीतलस और झेरक्सेस में झ शब्द का सही उच्चारण करने के बाद मंत्र पढ़ने के लिए अधिक सांस नहीं बचेगी।

'लो हम पहुंच गए। मिस्टर मैकस्टीवार्ट गरीब गुरबों के लिए कुछ ज्यादा ही मुसीबत हो गए हैं, कुछ तो जितना लिया था, उससे दो तीन गुना ज्यादा बापस देने का वादा कर चुके हैं। मैं पहले ही उसे चेता चुका हूं, इसलिए मुझसे ज्यादा खुन्नस खाता है, इसलिए मैं गायब हो जाऊंगा। पर जब कोई अदृश्य आदमी दरवाजों को खोलता है तो काफी बेतुका दृश्य उपस्थित हो जाता है, इसलिए बेहतर रहेगा कि तुम दिखते रहो, मैं तुम्हारे ठीक पीछे रहूंगा। इस बार मैं उसे कबाब नहीं बनाऊंगा, सिर्फ कुछ दस्तखतों को मिटाऊंगा, जिससे वह लोगों को रुपये वापस करने के लिए मजबूर नहीं कर सके।'

*अरे हां, शायद तुम्हें इनमें से बहुत से राजाओं का नाम मालूम नहीं हो, तो बता दूं डैगोबर्ट फ्रांस का राजा था। वैसे वह अच्छा राजा था पर अपने पतलून का पिछवाड़ा आगे की तरफ करके पहनता था। इक्सटलिलकोचीटल मेक्सिको में टेक्सकुका का राजा था और कोर्टेज का मित्र था। कामेहामेहास नाम वाले कई राजा हवाई में हुए हैं। सुबिलुलियुमा हाइती का राजा था। टारासीकोडिस्सा कस्तुनिया का सम्राट बना पर उसने लोगों के दबाव से अपना नाम बदलकर इसौरियन रख लिया, इसलिए वह अपने को जेनो कहलवाता था। उम्सिलिकाजी दक्षिण अफ्रीका में माटाबेलेस का राजा था। कुछ लोग उसे मोसेलिकैट्ज और कुछ सिल्काटस कहकर पुकारते थे। बाकी सारे नाम इतिहास और बाइबिल से लिए गए हैं।'

हम एक कांच के दरवाजे वाले शानदार आफिस में पहुंचे। मिस्टर लीकी बीच रास्ते में सीढ़ियों पर अदृश्य हो गये। मैंने 1000 पौंड उधार लेने की इच्छा जाहिर की तो मुझे मैकस्टीवार्ट के चेम्बर में ले जाया गया। मैं दरवाजों से काफी धीरे-धीरे गुजरा, ताकि मिस्टर लीकी भी मेरे पीछे आसानी से आ सकें। मुझे मेक्स्टीवार्ट को देखकर अरुचि हुई। अगर पैसे जल्दी न लौटाने हों, चक्रवृद्धि ब्याज या सामान्य ब्याज न देना हो, तो भी ऐसे आदमी से पैसे लेना मुझे गवारा नहीं है। मुझे जब भी उधार चाहिए होता है, मैं अपने दोस्त डा० बारनेट वुल्फ के पास जाता हूं, जिनका मानना है, उधार से ब्याज कमाना धूर्तता है। मुझ पर उनका एक-डेढ़ रुपया अब भी बकाया है।

जब मैं मिस्टर मैकस्टीवार्ट से 1000 पौंड उधार लेने के लिए बात कर रहा था, तभी मैंने देखा कि छतरी की नोंक हवा में नाच कर इधर-उधर कागजों की ओर इशारे कर रही है, जिससे उनकी स्याही मिट जाए। मैकस्टीवार्ट उधर कनखियों से देखता रहा, पर कुछ बोला नहीं। शायद वह सोच रहा था कि इस बारे में कुछ बोलेगा तो मैं उसे पागल समझूंगा। कोई तीन मिनट के बाद छतरी की नोंक फर्श पर टिकी, तब जाकर मैंने मिस्टर मैक स्टीवार्ट से कहा कि मैं 1000 पौंड पर जितना ब्याज में दे सकता हूं, वह उससे ज्यादा मांग रहा है। इस तरह मैं और मेरे पीछे-पीछे छतरी की नोंक वहां से निकल लिए। जैसे ही मैं दरवाजा खोल रहा था, छतरी की नोक हवा में उठकर तेजी से हिलने-डुलने लगी। अपने पीछे वह विज्ञापन के साइनबोर्ड पर निऑन ट्यूब से निकलने वाली लाइट जैसी

गुलाबी चमक छोड़ती जा रही थी। वह कुछ लिखावट जैसी दिख रही थी, जिसे मैंने पीछे से पढ़ा क्योंकि उसकी सीधी साइड मिस्टर मैकस्टीवार्ट की ओर थी। लेकिन फिर भी मैं उसे ठीक उसी तरह पढ़ पा रहा था, जैसे कोई दुकान के अंदर से शीशों की लिखावट पढ़ सकता है।

मैंने जो पढ़ा वो था :

अगली बार कबाब

मिस्टर मैकस्टीवार्ट की आंखे फटी पड़ रही थीं और उसके चीकट बाल जूते पालिश करने के ब्रश जैसे खड़े हो गए थे, और उसका चेहरा पसीने-पसीने हो रहा था।

'मुझे भरोसा है कि अगली बार की नौबत नहीं आएगी, मिस्टर लीकी ने तीसरी टैक्सी में बैठते-बैठते कहा, ऐसे लोगों को डराना बहुत आसान होता है, मैं उससे अपना धंधा छोड़ने के लिए नहीं कह रहा हूं, बस, उसे थोड़ा कम बेरहम होना चाहिए। बस, आज मुझे इतना ही काम निबटाना था। हम लंच के लिए कहां चलें। मेरे ख्याल से जावा ठीक जगह रहेगी। अरे नहीं, काफी देर हो चुकी है, वहां पर तो सूरज ढ़ल रहा होगा। वहां पहुंचते-पहुंचते अंधेरा हो जायेगा। चलो हिंदुस्तान में कहीं चलते हैं। इस समय मांडू का मौसम एकदम ठीक रहेगा। हम लोग उड़नकालीन से चलेंगे।' नीचे गिर जाने पर बचने के लिए तुम्हें पैराशूट चाहिए, राक्षसों, जिन्नों से बचने के लिए ताबीज और मच्छरों से बचने के लिए अकरकरा का तेल भी चाहिए। कुछ हल्के कपड़े भी। तुम्हें सनहेलमेट की जरूरत नहीं पड़ेगी, वहां अभी दोपहर के तीन बजे हैं, पर वहां लंदन के बाद अच्छी खासी गर्मी होगी।

करीब ग्यार बजे जब हम घर पहुंचे तो वहां जमकर हड़कंप मचा हुआ था। हर तरफ कोई न कोई जादुई करतब हो रहा था। आलमारियों के पल्ले खुल रहे थे, और उनमें से कपड़े, ताबीज, जादुई छड़ियां, मंत्रों की पोथियां, और पता नहीं क्या-क्या उछल कूद मचाते एक बड़ी सी टोकरी में समा रहे थे। जब टोकरी भर गई, तब उसने अपने आप को खुद बंदकर लिया, तभी एक सांप दूसरी टोकरी से निकल आया और उसने अपने सिर को दो बार टोकरी के नीचे घुसाया, ताकि टोकरी किसी पार्सल की तरह डोरियों से बंध जाए। और आखिरकार टोकरी के ऊपरी छोर पर अपने सर और पूंछ में गांठ लगा कर टोकरी को बांध दिया।

'क्लीमेंटिना से मेरा डोरियों पर होने वाला काफी खर्च बच जाता है', मिस्टर लीकी ने बताया, 'और इस तरह वह दुनिया देखने के साथ-साथ उन चोरों से मेरी टोकरी की रक्षा भी करती है, जो उसे चुराने की तम्मना रखते हैं। हम लोग काफी ऊंचाई से होकर उड़ेंगे, इसलिए मुझे तुम पर कुछ जादू करना होगा। जब हम पांच मील से ऊपर पहुंचते है तो हवा बहुत हल्की हो जाती है, वहां जिंदा रहने के लिए तुम्हें अधिक खून और कई अन्य चीजों की जरूरत होगी। वैसे मैं तुम्हें हवाबाजों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला ऑक्सीजन मास्क भी दे सकता हूं, पर अगर उसमें कुछ गडबड़ हो गई तो क्या करना होगा, मुझे नहीं पता। मैं इन मशीनी यंत्रों की परवाह नहीं करता। पुराने जादू-मंत्रों से उनका भला क्या मुकाबला। अगर मैं तुम्हें जादुई दवा की खुराक पीने को दूं तो उसके असर में कोई आधा घंटा लगेगा, इसलिए तुम्हें खोलकर खुराक सीधे शरीर में उड़ेल देना बेहतर रहेगा। यहां बैठो और अपना बांया पांव इस स्टूल पर रखो, मैं उसे खोलता हूं। ओलिवर, जरा हर्मेस ट्रिसमेगिस्टस की तीसरे खंड वाली पोथी देना।

ओलिवर ऑक्टोपस ने जो अब तक अपने तांबे के कड़ाहे में

बड़ी तसल्ली से बैठा था, फटाक से अपनी दो भुजाएं निकाल, एक भुजा के सिरे को दूसरी में लिए तौलिए से पोंछकर कोई दो फुट लंबी, और एक फुट चौड़ी भारी-भरकम पोथी बुकशेल्फ से निकालकर पेश की। मिस्टर लीकी ने कुछ पन्ने पलटे और एक मंत्र पढ़ा। फिर उसने जूते मौजे समेत मेरा बांया पांव शरीर से अलग कर दिया। मुझे जरा भी दर्द नहीं हुआ, बल्कि मजा आया। वह एड़ी के जरा ऊपर से खुलकर अलग हो गया। उसने जब पांव शरीर से अलग किया, तो मुझे उसकी दो हड्डियां साफ दिखाई दीं। उसने सुनहरे मोटर पंप जैसा कुछ निकाला और उससे मेरे पांव के ठूंठ में कुछ डाल दिया। पैर से होकर मीठी सी गरमाहट मेरे शरीर में फैलती जा रही थी। उसने मेरा पैर मेरे शरीर पर फिर जोड़ दिया। मुझे जोड़ दिखाई दे रहा था, लेकिन फिर उसने एक मंत्र पढ़ा तो मेरा पैर पहले जैसा हो गया। तब तक अब्दुल मक्कार आ गया। इस बार वह जिन्न की ही तरह पगड़ी और हरे रेशमी लबादे में सजा हुआ था, उसके पंख भी दिख रहे थे, जो पहले उसके टेलकोट में छुपे थे। 'दिखता तो यह ऐसे ही अच्छा है, पर जब वह आम लोगों के लिए दरवाजा खोलता है तो

मैं चाहता हूं कि वह टेल कोट से अपने पंख ढांके रहे, ताकि वे डर न जाएं। हां, यह सही है कि टेल कोट का चलन ईरान से आया है। सम्राट चार्ल्स द्वितीय के जमाने में लोगों ने इसे पहनना शुरू किया। टेल कोट का अविष्कार ईरान के बादशाह नुशीखां ने किया था, उसके दरबार में ढेरों जिन्न थे, उनमें से अधिकतर के पंख थे। वह बहुत इंसाफ पसंद राजा था, और अपने सिवाय बाकी लोगों के बीच बराबरी में यकीन करता था। वह नहीं चाहता था कि लोग जिन्न और इंसानों में भेदभाव करें, इसलिए उसने ऐसी पोशाक इजाद की जिसे दोनों पहन सकें। बाद में जिन्न वहां से चले गये क्योंकि उसकी जादुई अंगूठी चोरी हो गई थी। लेकिन ईरानी लोग टेलकोट फिर भी पहनते रहे।

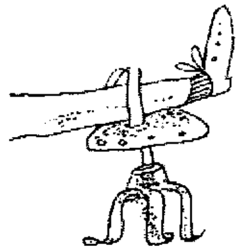

'ओ जादूगरों के सम्राट', दोहरे होकर सलाम करते अब्दुल मक्कार ने कहा, "आपके नाचीज़, टुकड़खोर, गुलाम पोम्पेई की एक प्रार्थना है।"

'क्या प्रार्थना है, ऐ अबाबील से भी तेज उड़ने वाले।'

'उसकी ख्वाहिश है कि वह हमारे साथ सफर पर चले, और उसका वादा है कि उसका निर्दोष व्यवहार वैसा ही निर्दोष रहेगा जैसा कि पैगंबर के ऊंट का था, उन्हें अमनचैन नसीब हो।'

'वाकई, शनिवार को संत लुसी के साथ लिए गए भोज के बाद से, जब उसने मेरे कबाब जला दिये थे, तब से तो उसका व्यवहार सच में दोषरहित है। उसकी प्रार्थना पूरी की जाएगी, उसकी ख्वाहिश पूरी होगी। लेकिन, पहले उसके बैठने के लिए एक अंगीठी लाओ, और उसे उड़नकालीन पर एस्बेस्टस की चटाई के ऊपर रख देना। मेरे मेहमान को पैराशूट से लैस करो और इन्हें एक लाइफ बेल्ट भी दो, उड़नकालीन से नीचे गिरने की हालत में बचने के लिए पैराशूट, और लाइफ बेल्ट समंदर में गिरने पर

बचाव के लिए।'

मैंने पैराशूट और लाइफ बेल्ट पहन लिए और एक जादूई छड़ी भी ली, जो उसने मुझे दी थी। मैं अपने आपको सितम्बर 1918 में नोर्ड नहर की लड़ाई में शामिल एक अंग्रेज सिपाही जैसा महसूस करने लगा, जब लाइफ बेल्ट पहने ब्रिटिश सिपाहियों की दो डिविजनों ने जर्मन सिपाहियों पर हमला किया था। वहां उन्हें नहर पार करने के लिए लाइफबेल्ट पहननी पड़ी थी। अब्दुल मक्कार एक बड़ी सी कालीन लपेट कर ले आया। और उसे आधा खोल डाला। उस पर अजीब आकृतियां थीं और अरबी लिपि में कुछ लिखा था। बाकी कालीन खोलने के लिए जगह ही नहीं थी। हम उस पर सवार हो गए, और अब्दुल मक्कार ने क्लेमेंटिना सांप के छल्ले को पकड़कर टोकरी को हमारी बगल में रखी मसनदों और गद्दियों के साथ रख दिया। फिर वह दूसरे कमरे से लाल गरम कोयलों से भरी एक वैसी ही अंगीठी उठा लाया, जैसी चौकीदार लोग सर्दी में खुद को गर्माने के लिए रखते हैं। मैंने देखा कि उसने तपता लाल गर्म लोहा नंगे हाथों से उठा रखा था, लेकिन सभी जानते है कि जिन्न ऐसे कई काम बिना जख्मी हुए कर सकते हैं। पोम्पेई भट्ठी से उठकर आया और आराम से अंगारों के ऊपर कुंडली मारकर बैठ गया। हम लोग गद्दियों पर बिराजे।

'उड़ान शुरू होते वक्त तुम्हें चक्कर आ सकते हैं, इसलिए अपनी आंखे बंदकर लो', मिस्टर लीकी ने कहा, मैंने वैसा ही किया।

तभी मुझे उनके कानों के फड़फड़ाने की आवाज सुनाई दी, और मुझे लगा कि कालीन ऊपर उठ रहा है। हम छत से बाहर कैसे निकले, मेरी समझ में नहीं आया, पर जरा तकलीफदेह लगा। मुझे लगा, हम तेजी से ऊपर उठ रहें हैं। फिर लगा कि गिर रहे हैं, लेकिन मैंने दांत कसकर भींच रखे थे, और उम्मीद थी कि

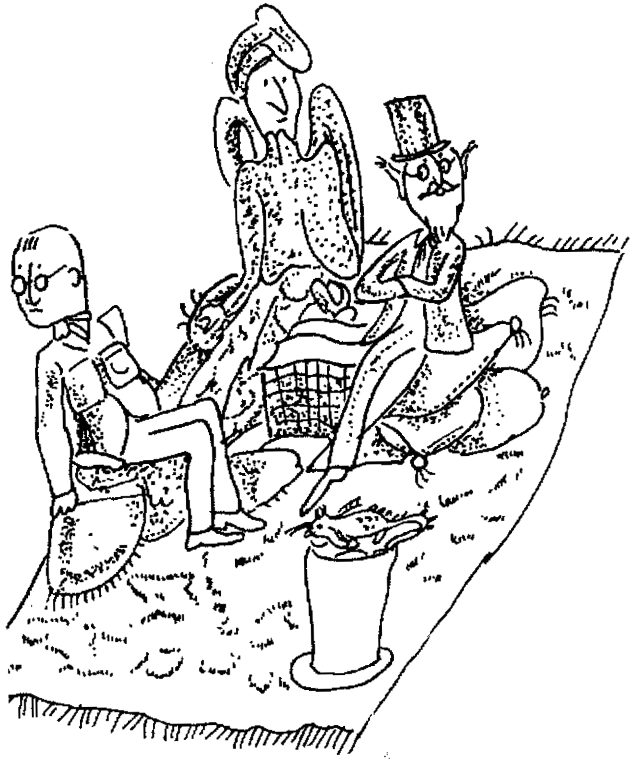

सब अच्छा होगा। जब मुझे आंखे खोलने के लिए कहा गया तब सूरज चमक रहा था, जब कि लंदन में बदली छाई थी। मैं रेंग कर कालीन के किनारे तक गया, जो अब पूरा खुल चुका था और नीचे झांका तो, पर वहां बादलों के समुद्र के सिवाय कुछ नहीं था। हम लोग उनके ऊपर से दक्षिण पूर्व की ओर गजब की रफ्तार से बढ़ रहे थे, पर मुझे हवा का एक झोंका तक नहीं लग रहा था।

'दरअसल जादुई कालीन के इर्द-गिर्द की हवा भी उसके साथ-साथ चलती है, वरना वह हम लोगों को उड़ा ले जाती, और उसे गर्म रखने के लिए एक खास मंत्र है मेरे पास', मेरे मेजबान ने मुझे समझाते हुए कहा। बादलों के बीच की एक खाली जगह से मुझे कुछ पलों के लिए इंग्लिश चैनल दिखाई दिया, तभी फ्रांस आ पहुंचा। पेरिस हमारी बाईं बगल से गुजरा। एफिल टावर तथा सैक्रे कोइअर चर्च की बस झलक ही दिखाई दी, तभी हमारे नीचे बादलों का झुंड़ आ गया, और जो अगली चीज नजर आई, वह थी आल्पस पर्वतमाला। उसका ज्यादातर हिस्सा हमारी बांईं ओर से गुजरा। बिना किसी रुकावट के हम उन्हें पारकर गए क्योंकि मो ब्लां शिखर से हम कोई दो मील ऊपर थे, वहां से हम उत्तरी इटली, फिर नीचे एड्रियाटिक सागर की ओर उड़ चले। सफर शुरू होने के दस मिनट बाद हम दक्षिण यूनान पार कर रहे थे। सूरज पहले ही आकाश में खूब ऊंचा चढ़ चुका था। जब हम भूमध्य सागर, जो इंग्लिश चैनल के मुकाबले ज्यादा खूबसूरत और नीला था, पार कर रहे थे, मिस्टर लीकी ने मेरे गले में तावीज पहना दी।

मेरे दोस्त ने कहा, 'हो सकता है कि अगले दस मिनटों में कुछ लफड़ा हो। तुम्हें याद होगा कि बादशाह सुलेमान ने कई दुष्ट जिन्नों को बोतल में बंदकर समंदर में फैंक दिया था। खैर, अब लोग फिलिस्तान के तट पर हैंका में नया बंदरगाह बना रहे हैं, और इन बोतलों को खोद निकाल रहे हैं। यदा-कदा कोई मूर्ख किसी बोतल को खोल देता है तो ये जिन्न निकल भागते हैं। जाहिर है, वे गुस्से में आग बबूला हैं। तुम भी होगे, अगर तुम्हें हजार बरस के लिए ऐसी जगह में बंद कर दिया जाय, जहां करवट लेने की भी जगह न हो। मेरा ख्याल है कि सुलेमान को इन्हें मुझसे भी बड़ी बड़ी बोतलों में क़ैद करना चाहिए था। वे निकलकर यहा-वहां हवाओं में उड़ते फिरते हैं। पर अब हवाएं जिन्नों के लिए पहले जैसी नहीं रहीं। रेडियो तरंगें हवा को चीरती निकल जाती हैं जिससे उनका पेट पिराता है, तथा वे और गुस्सा हो जाते हैं। जब ब्राडकास्टिंग शुरू हुई, तो बेचारे अब्दुल मक्कार को बड़ी तकलीफ हुई थी, तब मैं अपने एक भौतिक शास्त्री मित्र के पास गया जिसने इससे बचाव के लिए एक यंत्र बना दिया जो इसकी रक्षा करता है। पर मुझे यकीन है कि जब वह तेजी से उड़ता है तो नीचे रेडियो रिसीवरों में बाधा डालता है, और लोग कहते हैं, डिस्टर्बेंस आ रहा है।'

'खैर, मैं कह रहा था कि जिन्न बौखलाये रहते हैं, और कभी-कभी मेरे जैसे नुकसान न पहुंचाने वाले मुसाफिरों पर हमला कर डालते हैं। हां, यकीनन वे यूरोप की ओर रूख करने की हिम्मत नहीं कर पाते हैं। कितने सारे रेडियो हैं वहां। यह ताबीज तुम्हारी रक्षा करेगी। इसमें कुरान की सूरा अल मुविधेत्तानी के दो आखिरी अध्याय हैं। अगर कोई जिन्न तुम्हें नजर आए तो अपनी जादुई छड़ी उसकी ओर फेरके इसका जाप करना। अरे राम! तुम्हें नहीं याद है, स्कूल में क्या सीखा है तुमने? मेरे पेशे में तुमको कम से कम आठ धर्म अपनाने पड़ते हैं, जिससे तुम्हें किस्म-किस्म की रूहों से निपटना आ सके, पर लगता है ज्यादातर लोग एक ही धर्म अपनाते हैं, और कोई-कोई तो एक भी नहीं। मेरी तो राक्षसों से जान ही निकल जाती है, अगर मैं सच्चा हिंदू न होता, और अगर मैं ताओ नहीं होता तो विशाल हरा स्फटिक मेंढक मेरी छाती फाड़ डालता। जहां तक

तिब्बत की बात है, मैं पूछता हूं, अगर तुम महायान बौद्ध न हो तो क्या वहां जाने की सोच सकते हो। वहां तुम्हारे हैट जैसे कलूटे दैत्य भटकते-फिरते हैं, जिनके शार्क जैसे दांत और बाज से पंजें होते हैं। खैर, तुम इंग्लैड के सम्राटों से संबंधित तिथियों का पाठ करो, एगबर्ट की फिक्र छोड़ो, तुम विजेता विलियम से शुरू कर सकते हो।,

तब तक हम भूमध्य सागर के नक्शे के निचले दाहिने कोने तक पहुंच चुके थे। हमें दिख रहा था कि सुएज नहर से होकर बहुत सारे जहाज आ जा रहे थे, जो हमारे दाहिने से होकर गुजर गई थी, और फिर हम सिनाई पर्वत पर पहुंचे, जो बहुत उजाड़ सा पड़ा था, पर उतना ऊंचा नहीं दिख रहा था, जितनी मुझे उम्मीद थी। अब सूरज बहुत तप रहा था। ताबीज, पैराशूट और लाइफ बेल्ट के चलते मैं अपना कोट भी नहीं उतार सकता था, लेकिन मिस्टर लीकी ने दया कर मेरी ऊनी जाकेट और पैंट को अपनी जादुई छड़ी के एक इशारे से रेशमी बना दिया, जिससे मुझ आराम मिला। जल्दी ही हम अरब देश के ऊपर से उड़े जा रहे थे। शुरू में थोड़ी हरियाली थी, पर बाद में दूर तक लाल रेत की विशाल लहरों के सिवाय कुछ नहीं दिख रहा था, कहीं-कहीं कुओं के गिर्द खजूर के पेड़ थे बस।

तभी हमें सामने रेगिस्तान को ढांकता फीके भूरे रंग का गुबार नजर आया। 'रेतीली आंधी', मिस्टर लीकी ने कहा, फिर कहा, मटियाला जिन्न'। जैसे ही हम रेतीली आंधी तक पहुंचे, बिजली कड़काते बादल-सा कुछ हमारे ऊपर उठकर आया। हमारे देखते-देखते उसमें से लगभग आधा मील चौड़ा विशाल चेहरा उभर आया। पर मिस्टर लीकी ने जादूई छड़ी का बस इशारा भर किया तो वह भसक कर बैठ गया। 'पीछे नजर रखो', जिन्न पर से गुजरते हुए उन्होंने कहा। ठीक था, जैसे ही हम उसके ऊपर से गुजरे, वह फिर से उभर आया। 'मैं व्यस्त हूं' मिस्टर लीकी ने कहा। मेरी हिम्मत ही नहीं हुई कि पलट कर पीछे देखूं कि क्या हो रहा है, लेकिन मुझे लगा कि शायद उड़नकालीन अपनी राह से भटक गया है। जिन्न अब एक विशाल काले बादल की तरह हमारी ओर झपट रहा था। मैं उसके मुंह के भीतर देख सकता था, जो दहक रहा था। वह नजदीक ही था, पर बहुत ज्यादा नहीं, किसी फटते सरकते बांध सा खतरनाक बिजली भरी काली घटा सा चला आ रहा था, और अपनी दहलाने वाली गरजन की ओर से और भी दुष्ट लग रहा था। वह शायद जिन्न और भयानक शोर करता आ रहा पर हमें पूरी तरह सुनाई नहीं दे रहा था क्योंकि जादुई कालीन आवाज पछाड़ रफ्तार से उड़ रहा था।

मैंने अपनी ताबीज़ उसकी ओर कर विलियम लड़ाके को याद किया। जिन्न को तुरन्त ही बैचेनी होने लगी, उसका चेहरा जरा सा रह गया, बस, एक मकान जितना। मैं उसका धड़ भी देख सकता था। उसकी घिनौनी कथ्थई काई जैसी रंगत थी। वह अब भी हमारे पीछे था। मेरे लिए वह पल परेशानी भरा था, जब मैं हेनरी जेम्स की तारीख पर अटक गया, तो मैंने देखा कि उसका चेहरा फिर से फूल रहा था, लेकिन तभी मुझे ठीक तारीख याद आ गई और वह फिर से सिकुड़ गया। साफ दिख रहा था कि सौ गज से नजदीक आने की उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी। उसने बड़ा गलीज मुंह बनाया और आग उगलने लगा, पर वह इतनी रफ्तार से उड़ रहा था कि उसने उसका ही मुंह झुलसा दिया, अगर मेरा अंदाज ठीक है तो एक सेकेंड में कोई तीन मील। जब तक मैं विलियम और मेरी खत्म कर सोच रहा था कि क्या जॉर्ज पंचम 1910 के बाद फिर से दुहराऊं कि मिस्टर लीकी दोनों हाथों में एक-एक जादुई छड़ी लिए पलटे, और बोले, 'मैंने आगे वालों को तो निबटा दिया है। अब अब्दुल मक्कार उन पर नजर रख सकता है। उन्होंने यह कहा ही था कि उनकी जादुई छड़ी से आग की तेज लपट का एक फंदा निकल कर जिन्न की गर्दन

से जा लिपटा। मुझे तब झटका सा लगा जब मिस्टर लीकी जादुई कालीन के दो फंदों में दोनों पैर जमा जिन्न को अपने साथ उसी तरह घसीटने लगे, जैसे कोई मछेरा मछली को बंसी में फंसा कर घसीटता है। उन्होंने दूसरी जादुई छड़ी जिन्न की ओर फिराई तो वह तड़पता हुआ काफी छोटा सा रह गया। जब उसकी देह कोई बीस फीट की रह गई तो मिस्टर लीकी ने कहा, 'पोम्पेई उसकी नाक काट खाओ', पोम्पेई ने उड़कर अपने चारों पैर उसके चेहरे पर जमा दिए और उसकी नाक चबा डाली। अपने होंठ चाटता और दुम लहराता हुआ वह उड़कर वापस अंगारों पर आ बैठा।'

मिस्टर लीकी ने जिन्न को जाने दिया, जो अब तक उड़ना छोड़ अगले ही पल दूर होता हुआ ओझल हो गया। 'इससे उसको ट्रैफिक में अड़चन न डालने का सबक मिलेगा', उन्होंने कहा, 'दो से तो सामने की तरफ अच्छी तरह निबट चुका हूं । अरे यह रहा चौथा।' मैंने बाईं तरफ सुअर जैसे दो दांत वाला राक्षसी बैंगनी चेहरा देखा, लेकिन एकाएक उसका चेहरा विकृत होने लगा, मानो उसे दर्द हो रहा हो, और वह गायब हो गया। 'अब बाकी सफर में इन महाशयों से कोई परेशानी नहीं होगी। वह रग्बी से आस्ट्रेलिया को पोर्ट लेण्ड सीमेंट और स्पेल्टर (या जो भी हो) के दाम के बारे में भेजा गया तरंगीय बेतार संदेश था, जिसकी हमारे उस बैंगनी बंधु के पेट पर सीधी तगड़ी चोट पड़ी, और उसकी हवा ही निकल गई। हम लोग तरंग की सीधी मार से हट कर थे। यह जिन्नों को रास्ते से साफ करते हुए ईरान के ऊपर से गुजरती है, पर उनके लिए वह यहां भी खतरनाक है। मेरा ख्याल है कि अब तुम अपनी छड़ी नीचे कर रख सकते हो। मुझे उम्मीद है, यह जरा सा एडवेंचर बुरा नहीं लगा होगा तुम्हें। अगर महीने भर में एक बार ऐसा कुछ न हो तो मुझे जिंदगी बड़ी बोर लगेगी।'

'मैं मानता हूं, मैं सच में डर गया था। देखिए भाई, मैंने यहां बैठे अपने इस साथी के सिवाय पहले कभी जिन्न नहीं देखे।'

'दोस्ती का यह बयान मेरी रूह के लिए उतना ही कीमती है जैसे बियाबान में भटकते इजराइल के बच्चों के लिए ईश्वरीय अन्न था, अब्दुल मक्कार ने कहा। 'मेरे लिए इतने काबिल अफरीत जिन्न की दोस्ती को सुलेमान को दिए गए ओफिर के सोने से कहीं ज्यादा कीमती है, जिन्हें अमन नसीब हो', मैंने जवाब दिया। इस तरह से बतियाना इतना मुश्किल नहीं है, जितना लगता है। 'मुझे खुशी है कि तुम रूहानी ताकतों से शालीन गुफ्तगू की तहजीब सीख रहे हो', मिस्टर लीकी ने कहा। 'वैसे कोई खतरे की बात तो नहीं थी, पर नौसिखिए के लिए ये जिन्न थोड़ी मुश्किल पैदा कर सकते हैं। मुझे लगता है कि लड़ाई के दौरान सही जगह पर पहुंचने और टिके रहने की कोशिश में हम अपने रास्ते से थोड़ा भटक गए हैं। वो ईरान की खाड़ी है हमारे नीचे। मैं सोचता हूं कि हम लोग मांडू की बजाए, उत्तर भारत में कहीं चलते हैं। दिल्ली के बार में क्या ख्याल है ?'

हम लोग एक दो मिनट तक दक्षिणी ईरान और बलूचिस्तान पर से उड़े। मैंने भारत और बगदाद के बीच रास्ते में कुछ जहाज और दो हवाई जहाज देखे। बेशक, वे हमसे बहुत नीचे थे, और हम इतनी तेजी से उड़ रहे थे कि वे बिल्कुल ठहरे से दिख रहे थे। हम सिंधु नदी के मुहाने और कराची होते हुए एक रेगिस्तान के ऊपर पहुंचे। रेगिस्तान के छोर तक पहुंचने के बाद ही मुझे लगा की जादुई कालीन की रफ्तार धीमी हो रही है और एक विशाल नदी नजर आई। मैंने अनुमान लगाया कि शायद यमुना होगी, तभी मुझे एक शहर दिखा, जिसमें एक बड़ा भारी लाल गुम्बद था, और जिसके गिर्द चार सफेद मीनारें थीं। शहर से परे बगीचे में और भी लाल और सफेद इमारतें थी, उससे भी और आगे एक गगनचुम्बी पत्थर की मीनार और एक सब्ज नीला

गुम्बद दिखा। उड़नकालीन अब नीचे उतरने लगा, जिससे भयानक बेचैनी होने लगी। तुम सोचते होगे कि तुमने भी लिफ्ट से उतरते हुए इसका अहसास किया है, पर नहीं, तुम इसका अहसास किसी गहरी खदान में उतर कर ही कर सकते हो। तुम्हें लगेगा कि तुम्हारे अंदर की सारी चीजें पीछे छूट गई हैं। खदान में यह अहसास सिर्फ कुछ एक सेकेंड के लिए होता है, पर इस बार काफी देर तक होता रहा। फिर ऐसा लगा कि हम फिर से ऊपर उठ रहे है, निश्चित इसका मतलब यह था कि नीचे उतरने की रफ्तार धीमी हो रहा थी। मैंने किनारे से नीचे झांक कर देखा तो सड़कों पर बहुत से लोग थे, पर ऊपर कोई नहीं ताक रहा था। हमारी ओर जैसे उनका ध्यान ही नहीं था।

वे हमें देख नहीं सकते हैं' मिस्टर लीकी ने कहा, 'जादूईकालीन उड़ने के वक्त नीचे के लोगों के लिए अदृश्य हो जाते हैं। नहीं तो उन जिन्नों ने नीचे से ही हमला कर दिया होता। कई जानवर, जैसे कि कई मछलियां, अपने सफेद रंग के पेट की मदद से अदृश्य होने की कोशिश करती हैं। पर बिना जादू के तुम बिलकुल अदृश्य नहीं हो सकते हो। अब हम लोग मेरे दोस्त मिस्टर चंद्रज्योतिष से मिलने जा रहे हैं, जो काफी पहुंचे हुए तांत्रिक हैं।'

उड़नकालीन, नारंगी के पेड़ों, फव्वारों और संगमरमर के खंबों से सजे छोटे से सुंदर बगीचे में उतरा। उड़नकालीन से हम नीचे उतरे, और अब्दुल मक्कार ने पोम्पेई और टोकरी को उतारा। उड़नकालीन खुदबखुद लिपटकर कोने में टिक कर खड़ी हो गई। घर से दो बहुत खुबसूरत महिलाएं निकल कर आयीं, एक का चेहरा गोल तांबई रंग का था, और दूसरी की रंगत पीली और आंखे थोड़ी चीनियों जैसी थी, जिसकी नाक में लाल जड़ी चांदी की नक्काशी वाली नथुनी झूल रही थी।

'श्रीमती सीताबाई चंद्रज्योतिष और श्रीमती राधिका

चंद्रज्योतिष।'

मिस्टर लीकी ने उनसे परिचय कराया और उनसे इतनी फर्राटेदार ऊर्दू में बात करने लगे, जो मेरी समझ के बाहर थी, पर मेरी समझ में इतना आया कि श्री चंद्रज्योतिष बाहर गए हैं। तभी तीसरी श्रीमती ज्योतिष आ गईं। अरे हां, हिंदुस्तानियों की मर्जी हो तो उन्हें कई शादियां करने की इजाजत है। उसका चेहरा जर्द था और कान नुकीले। मेरा अनुमान है, वह जिन्ननी होगी, दरअसल मैंने किसी महिला जिन्न को पहली बार देखा था। उसने पोम्पेई को उठा कर अपनी गोद में ले लिया, जब कि वह सुर्ख लाल अंगारा हो रहा था। फिर उसने उसे पिछले पैरों बैठने का हुक्म दिया गंधक, तथा सुर्ख अंगारों सी किसी खाने की चीज को गिड़गिड़ा कर मांगने के लिये उकसाने लगी, चूकि मैं ड्रैगनों के बारे में ज्यादा नहीं जानता, इसलिए बता नहीं सकता कि वह क्या था।

तब मिस्टर लीकी को उसे रोकना पड़ा, 'मुझे थुल-थुल मोटे ड्रैगन नापसंद हैं' उसने मुझसे कहा,'ड्रैगन को जर्मन हाउंड नस्ल

के कुत्तों जैसा दुबला-पतला होना चाहिए। हां, यह सच है कि अलग-अलग किस्मों की अलग-अलग ढंग की कद कांठी होती है यूरोपियन ड्रैगन इतने पतले नहीं होते, पर चीनी किस्म के ड्रैगन के गले में टाई की चार गांठें बांध सकते हो, जबकि और अच्छी नस्लों के जिराफों के गले में एक गांठ बांधी जा सकती है। अगर तुम सर्कस के लिए जिराफ पालने का धंधा शुरू करने की सोच रहे हो, तो कोई फायदा नहीं अगर उनके गले में एक गांठ तक न बांध सको।'

बेशक, मैंने इस्तेमाल में आने वाला जो एक मात्र जिराफ देखा था, उसकी गर्दन काफी मोटी थी, वह ओस्वाल्डव्हिसिल के टॉमकिन नामक आदमी के पास था, जो सेंधमारों से इतना डरता था कि बिना सीढ़ियों वाले दुमंजिले मकान में ऊपर की मंजिल में रहता था। वह ऊपर से नीचे, और नीचे से ऊपर अपने पालतू जिराफ पर चढ़कर आया-जाया करता था, वो जिराफ सिर्फ उसकी आवाज पहचानता था। उसने उसे सिखा रखा था कि अगर कोई चोर सीढ़ी लगाए तो उसे ठोकर मारकर गिरा दे। पर इससे भी फायदा नहीं हुआ। एक चोर ने उसकी आवाज की टेप रिकार्डिंग कर जिराफ को चकमा दे दिया, जिराफ ने इसे ऊपर चढ़ जाने दिया, और उसने मिस्टर टॉमकिन की शाम की पोशाक के कीमती बटन और उनके दादाजी की घड़ी चुरा ली, उस समय वह सिनेमा हाल में बैठा मार्लिन डिट्रिच को देख रहा था। मेरा यकीन करो, चोरों से निबटने के लिए जादू से बेहतर कोई चीज नहीं है। अगर मेरे फ्लैट में कोई सेंध मारने की कोशिश करे तो मुझे बड़ा मजा आएगा, पर कोई ऐसा करेगा नहीं।'

'श्री चंद्र ज्योतिष दजुनगढ़िया में हैं, पर वहां से वे पौन घंटे में अपने डिनर और हमारे लंच के लिए लौट आएंगे। चलो तब तक शहर देख करके आते हैं।'

ऐ, अब्दुल मक्कार, तुम्हें मेरी ओर से दो घंटे के लिए अपने देश रुबा अलखली जाने की इजाजत है, ताकि अपनी बूढ़ी चाची के दर्शन कर सको, उन्हें अमनोचैन नसीब हो। पर लौटना मत भूलना। किताबों में दर्ज है कि जल्दी आने वाले बाज को तो सांप हासिल होता है, पर सुस्त मेहमान को सुराही खाली ही मिलती है।'

'शुभ दोपहर, देवियों, पोम्पेई को इतना मत खिलाओ।'

'श्री चंद्र ज्योतिष की स्त्रियां सुंदर हैं ना? उन्होंने एक संकरी गली में घुसते हुए कहा। पर मिस्टर चंद्र ज्योतिष को अपनी पत्नियों की जवानी और तेवर ठीक रखने के लिए दिन में दो-तीन घंटे उनकी झाड़-फूंक में गुजारने पड़ते हैं। उसका कहना है कि इससे लाभ तो होता है पर है यह मेहनत का काम। सुलेमान भी हमेशा ऐसा नहीं कर पाता था, हालांकि वह महान जादूगर था, पर उसकी तो तीन सौ बीबियां थीं, जो मेरी समझ के मुताबिक बहुत ज्यादा थीं।'

दिल्ली के बारे में मैं तुम्हें कुछ नहीं बताऊंगा, क्योंकि उसके बारे में तुम भारत के बारे में लिखी किताबों से जान सकते हो। पर मैं यकीन से कह सकता हूं कि पुराना किला और महान जामा मस्जिद बहुत खूबसूरत हैं , साथ ही तुम्हें एक बहुत ही खास बात बताता हूं जो मिस्टर लीकी तो जानते हैं, पर तुम्हें टूरिस्ट गाइड वाली किसी भी किताब में नहीं मिलेगी। दुनिया की सबसे स्वादिष्ट मिठाई किनारी बज़ार के उत्तरी छोर पर एक छोटी सी दुकान में मिलती है। जब हम मिठाई खरीद रहे थे तो मैंने देखा एक प्यारा सा, गुलाबी आंखों वाला नेवला अगले घर की नाली में चूहे का शिकार कर रहा था।

हम लंच के लिए वापस आ गए, जो बहुत शानदार था। श्री चंद्र ज्योतिष वापस आ गए थे। वो मस्त, गोल-मटोल इंसान थे जिनकी पगड़ी में बड़ा सा लाल जड़ा था, और वह फर्राटेदार अंग्रेजी बोलते थे। पर स्टेशन को इस्टेशन और बॉक्स को बोकस

बोलते थे।

'हम चाहें तो मंत्र-शक्ति से रेडिओ अनाउंसर के माफिक इंग्लिस बोल सकते हैं', उन्होंने कहा, पर हमारा ख्याल है कि इंग्लिस ऐसे ही बोलने में ज्यादा मजा आता है। जब अंग्रेज पहले-पहले उर्दू बोलता है, तो "घोड़े पर काठी कसो की जगह यूरोपियों पर काठी कसो कहता है, तो फिर हम भी फिर क्यों न गलत-सलत बोलें।"

हमने मछली, मसालेदार मुर्गा, और चावल, सोने की तश्तरी में खाया, शराब पन्ना रत्न से बने प्यालों में पेश की गई, और फिर बेमौसम के आम और मिठाइयां परोसीं गईं। श्री चंद्र ज्योतिष के नौकर ने आम की एक गुठली एक टोकरी के नीचे जमीन में दबा दी, और बीच-बीच में तीन-चार बार टोकरी उठाई, तो हमें दिखा कि पहले तो कल्ले फूटे, फिर झाड़ उग आया, बौर खिले और आखिर में फल आ गए। मुझे वह तरीका मिस्टर लीकी

के आम उगाने के तरीके से बेहतर नहीं लगा, जहां मैंने पेड़ उगते देखा था। पर मुझे उस समय मजा आ गया, जब नौकर ने रस्सी का एक सिरा हवा में उछाला, और उस पर चढ़कर गायब हो गया और अपने पीछे रस्सी ऊपर खींच ली।

'मैं इसमें बहुत माहिर नहीं हूं', मिस्टर लीकी ने कहा। 'मेरा ख्याल है, आप मंत्र का शुद्ध उच्चारण नहीं करते होंगे', श्री चंद्र ज्योतिष ने समझाया। 'स्मृत शब्द में र के उच्चारण के लिए जबान को तालू के पिछले हिस्से से टकराना होता है। यूरोपीय जादूगर यहीं पर गलती कर जाते हैं।'

मिस्टर लीकी ने कई बार रियाज किया और आखिरकार मंत्र सही ढंग से पढ़ने में सफल हो गए। 'बहुत-बहुत शुक्रिया', उन्होंने कहा। अरे हां, मैं भी अपनी टोकरी में जादू की कुछ किताबें लाया हूं, आप शायद उन्हें देखना चाहें।

हम लोग बाहर बगीचे में चले गए, और मिस्टर लीकी पहली बार वास्तव में परेशान नजर आए।

'चच्च' उन्होंने कहा। 'ये वाकई परेशानी की बात है'

टोकरी का मुंह पूरा खुला था, और चीजें बिखरी पड़ी थीं। क्लीमेंटिना, जिसे उसके चारों ओर बंधे होना चाहिए था, उसके आधे शरीर ने कुंडली मार रखी थी, बाकी आधा शरीर घास में तन कर खड़ा था, और ऐसे लहरा रही थी, जैसे नशे में धुत्त हो।

'मेरी जवानी में जैसे सांप होते थे, अब कहां हैं वैसे', मिस्टर लीकी ने कहा। 'मेरा ख्याल है, मेरा नौकर प्यारे लाल उसे बस में कर रहा था', श्री चंद्र ज्योतिष ने कहा, 'उसे बुलाओ तो यहां'। हमने पुकारा, पर कोई निकलकर नहीं आया। वहां अजीब सी लिखावट वाली एक किताब खुली पड़ी थी, जिसे मैं नहीं पढ़ सकता था। 'क्या वह देवनागरी लिपि पढ़ सकता है?' मिस्टर

लीकी ने पूछा। 'अरे हां', श्री चंद्र ज्योतिष ने कहा, 'पर वह जादूगरी ढंग से नहीं जानता। और यह अच्छा है, किताब में आदमी को टिड्डा बनाने वाले मंत्र का पन्ना खुला है। उसने तो हमें टिड्डा बना दिया होता, मुझे तो ठीक से टिरटिराना भी नहीं आता। पर ठीक है, भद्द तो उसी की पिटी। अगर उसने पहले सत्रहवें पन्ने का मंत्र नहीं पढ़ा होगा, तो उसने अपने को ही टिड्डा बना लिया होगा।'

'खैर वह बड़ा भला नौकर था, अब उसे फिर से इंसान बनाना होगा। किस्मत से मुझे ऐसा मंत्र आता है जिससे मील भर के दायरे के सारे टिड्डे यहां जमा हो जाएंगे। दरअसल यह काला जादू है, जिसका इस्तेमाल मूर्ख नौसिखिए तांत्रिक पड़ोसी की फसल चौपट करने के लिए करते हैं। जरा मेरा कैलिको ड्रम तो लाना प्रिये। श्रीमान लियर की बेहतरीन ईजाद है यह। इंग्लैंड से गए सौ साल में जादू का यह सबसे बढ़िया तोहफा हमें मिला है। मिस्टर लीकी मेरे संतरे के पेड़ों के इर्द-गिर्द तीन सुरक्षा चक्र बना दीजिए, मैं नहीं चाहता कि टिड्डे चट कर जाएं उन्हें और जरा घास भी बचाइएगा।'

श्रीमती नूरजहां चंद्र ज्योतिष (जो की उनकी जिन्न पत्नी का नाम था) एक बड़ा सा केलिको ड्रम लेकर निकल आई, वह उसके चारों ओर घूम-घूम के नाचने लगे, मैंने नहीं सोचा था कि एक मोटा आदमी इतनी तेजी से नाच सकता है। घूमते-घूमते वह उसे एक बैंगनी छतरी से पीट-पीट कर बजाने और मंत्र का पाठ करने लगे। मिस्टर लीकी ने कहा कि वह मुझे उस मंत्र के बारे में बता सकते हैं, क्योंकि वह किताब में पहले से ही लिखा हुआ है, लेकिन तुम नाच की सही ताल न जानो तो इसका असर नहीं होता है। मंत्र कुछ इस तरह का था :

कैलिको ड्रम ठोक बजैय्या,
टिड्डे का पूता आजा रे भइय्या,

तितली तिलचट्टा और ततैय्या।
गोल-गोल घूमें फिरैय्या,
फिर ऊंची कूद और मेरे भइय्या,
वापस न अइयो फिर मेरे भइय्या,
वापस न अइयो फिर,
मेरे भइय्या,
मेरे पास नारे ना भइय्या।

इस बीच नूरजहां हमारे सरों के ऊपर जादू चलाती उड़ती फिर रही थी। 'वह तितलियों, तिलचट्टों और ततैय्यों को भगा रही है', मिस्टर लीकी ने दो सुरक्षा चक्रों के बीच में खड़े होकर समझाया। हवा में जबरदस्त गुंजन हो रही थी, और कीड़े-मकोड़े उमड़ने लगे थे। कुछ तितलियां और गैंडे जैसे सीगों वाला एक कीड़ा भगाने वाले मंत्र के पूरे होने से पहले ही आ गए थे। पर बाद में बगीचे में सिर्फ टिड्डे आने लगे। और बाकी घर के ऊपर मंडराते रहे। एक ही मिनट में सर के ऊपर का आसमान टिड्डों से काला पड़ गया, और कुछ चिड़ियां उन्हें पकड़ कर खाने के लिए आ पहुंची। यह नहीं चलेगा, श्री चंद्र ज्योतिष ने कहा। 'मेरे मेहमानों को कोई खा जाए, यह नहीं चलेगा, फिर उन्होंने कहीं प्यारे लाल को चटकर लिया तो। चिड़ियों को डरा कर भगा दो मेरी प्यारी।' नूरजहां टिड्डों के झुंड को चीरती हुई उड़ी और चिड़ियां चारों ओर छितरा कर उड़ भागीं। जब मैंने जमीन को देखा तो वह हर तरह के और हर आकार के टिड्डों से पटी पड़ी थी, इंग्लैंड के नन्हे से टिड्डों से लेकर झीगों जितने बड़े लोकस्ट टिड्डे वहां मौजूद थे, और हर पल उनकी तादाद बढ़ती जा रही थी।

हमारे सरों के ऊपर इतनी सारी तितलियां, कीड़े और ततैये मंडरा रहे थे कि अंधेरा घिर आया था, और नौकरों को लालटेनें, और बहुत बड़ा हीरा निकालना पड़ा, जो भीतर से रोशनी फेंक रहा था। उनकी रोशनी में हमने देखा कि टिड्डों का भारी जमावड़ा एक दूसरे पर चढ़ता-पड़ता सारी जमीन और दीवारों पर लदा पड़ा है। वे बिजली की सैकड़ों घंटियों की माफिक शोर मचा रहे थे। हमें ऊंची आवाज में चीख-चीख कर बात करनी पड़ रही थी ताकि वह सुनाई दे सके, पर मिस्टर लीकी ने अपनी एक किताब से मंत्र पढ़ कर उन्हें चुप करा दिया।

क्या तुम प्यारे लाल को पहचान सकते हो? उन्होंने पूछा। 'नहीं, बिल्कुल नहीं। मैं कुछ टेढ़े-मेढ़े टिड्डों पर मंत्र फेंक कर देखता हूं । पर वह एक बार में सिर्फ सात टिड्डों पर काम करता है, पर यहां तो करोड़ों हैं।'

'फिक्र मत कीजिए, अब्दुल मक्कार अब यहां पहुंचता ही होगा, और वह मंत्र से जानवर बने आदमी या औरत को तुरंत ताड़ लेता है। वह कहता है, वे मिकी माउस जैसे दिखते हैं। अरे भाई, वह तो पांच मिनट लेट हो चुका है। अब मुझे जादुई अंगूठी रगड़नी ही पड़ेगी। हालांकि, मुझे ऐसा करना नापसंद है, क्योंकि इससे उसे ऐसी बेचैनी होती है जैसे कि कोई तश्तरी को चाकू से खुरच रहा हो, पर अगर वह लेट हो रहा है तो यह उसकी अपनी समस्या है। यह लो ! बड़े काम की चीज है यह अंगूठी भी, पर यह बड़ी क्रूरता का काम है, जब चाहा रगड़ा और जिन्न को बुलावा भेज दिया, जैसा कि अलादीन के जमाने में होता था। उसका चिराग अब वियेना की एक महिला के पास है, पर उसके जिन्न के काम के घंटे बंधे-बंधाये हैं, और उसे महीने में एक बार भी चिराग नहीं घिसना पड़ता है।

तभी टिड्डों के एक छोटे से झुंड को छितराता हुआ अब्दुल मक्कार जमीन से प्रकट हुआ। वह बड़ा परेशान दिख रहा था और लंबे-लंबे जुमलों में सफाई पेश ही कर रहा था कि मिस्टर लीकी ने उसे चुप करा दिया और कहा की प्यारे लाल को ढूंढो। उसने उसे तुरंत ही पहचान कर आसानी से पकड़ लिया। फिर श्री चंद्र ज्योतिष ने उसपर मंत्र पढ़ा और वह आदमी बनने लगा।

देखने में बड़ा मजा आ रहा था। पहले तो वह फूलने लगा फिर उसकी खाल फट कर वैसे ही झड़ने लगी, जैसे कि एक टिड्डी की झड़ा करती है। उसमें भीतर से जो निकला, वह एक मेगोट (कीट) जैसा था, जो थोड़ी ही देर में एक गुलाबी रंगत वाले बड़े कीड़े जैसा हो गया। उस पर चार घुंडियां जैसी उग आई जो पांवों और हाथों में बदलने लगीं। उस कीड़े की छाती भीतर धंसकर, और दोहरी होकर सर बन गई, तब तक हाथों और पांवों से उंगलियां फूट निकली। इस दौरान वह बड़ा, और बड़ा होता जा रहा था। कोई दो मिनट में हमारे सामने घास पर एक आदमी पड़ा था, पर इतना डरा आदमी मैंने पहली बार देखा था। एक चीज जो मुझे बड़ी अजीब लगी, वह यह थी कि टिड्डे की पीठ प्यारे लाल का सीना बन गई । पर जब मैंने यह बात अपने एक जीव विज्ञानी दोस्त को बताई, तो उसने समझाया की यह तो ठीक ही हुआ, क्योंकि टिड्डे का दिल पीठ की तरफ होता है, फिर उसकी आंतें होती हैं, और सबसे नीचे उसका स्नायु तंत्र होता है। मतलब यह है कि टिड्डे की पीठ उसका सीना है, या फिर आदमी की छाती टिड्ढे की पीठ है।

प्यारे लाल पलटकर सीधा हो गया था और पड़ा-पड़ा डर के मारे किंकिया रहा था। श्री चंद्र ज्योतिष ने एक और मंत्र पढ़ा तो वह उठकर खड़ा हो गया, पर उसका एक तरफ का चेहरा लाल और दूसरी तरफ का हरा था, तथा बाल बैंगनी थे। 'वह एक सप्ताह तक ऐसा ही रहेगा, पर मुझे नहीं लगता कि कल शाम वह टहलने निकलेगा।' फिर हमने ड्रम के आसपास की घास पर पड़े कुछ टिड्डे साफ किए, और श्री चंद्र ज्योतिष अब उलटे फेरे लेते हुए मंत्र का 'वापस ना आए फिर से' वाला हिस्सा दोहराते हुए नाचने में लगे। सारे टिड्डे और दूसरे कीट-पंतगे कानफाड़ू शोर मचाते उड़ गए। पर फिर भी अंधेरा नहीं छटा क्योंकि सूरज डूब चुका था।

टोकरी ने खुद को फिर से पैक किया, और क्लीमेंटिना ने, जो अब ठीक हो चुकी थी, अपने आप को उसके चारों ओर लपेटकर बांध लिया। पोम्पेई की अंगीठी में ताजे कोयले भरे थे, और जादुई कालीन पसर चुका था।

'मेरा मन है कि दुनियां घूम ली जाय', मिस्टर लीकी ने फरमाया। 'बेशक हमारे पूर्व में तो रात हो गई होगी। पर रेडियो संदेशों की तरह जादुई कालीन भी रात में अधिक अच्छी तरह उड़ते हैं। अमेरिका में कहां जाना चाहोगे? '

मैंने कहा, दक्षिण या मध्य अमेरिका में कहीं चला जाए, क्योंकि उत्तर अमेरिका तो बिना जादू के ही हो आने की उम्मीद है, और वैसे भी सिनेमा में काफी कुछ देखा हुआ है।

हमने श्री चंद्र ज्योतिष और उनकी आकर्षक पत्नियों से विदा ली, सिवाय नूरजहां के, जिसने पूछा, क्या हम उसे वकवक द्वीप तक अपने जादूई कालीन पर लिफ्ट देंगे, क्योंकि वह वहां अपनी बहन से मिलकर सोने के वक्त तक वापस आ जाना चाहती है। पर दुतरफा उड़ान भरने में उसे आलस आ रहा था। तो फिर हम दक्षिण पूर्व की ओर उड़ चले। उजले शुक्ल पक्ष का चांद बढ़त पर था, पर पांच मील ऊपर तारे साफ चमचमा रहे थे। जैसी ही हम दक्षिण की ओर बढ़े तरह-तरह के नक्षत्र दिखाई पड़ने लगे, जो मेरे लिए नये थे। शिकारी (ओरायन) तारा मंडल के सामने छोटे-छोटे तारों की एक लम्बी सी नदी बलखाती दक्षिण में उतर रही थी। जिसके मुहाने पर बहुत चमकीला तारा अचेरनार था, और जब शिकारी और उसका कुत्ता तारामंडल आकाश में ऊपर उठते हुए लग रहे थे, तभी मैंने बड़े कुत्ते की पूंछ के पास केनोपस को उगते देखा। एक दो मिनट में हम हिंद महासागर के ऊपर थे, जो चांदनी में चांदी सा झिलमिला रहा था। हम निकोबार द्वीप समूह और मलय प्रायद्वीप के निचले छोर को पार कर गए। ध्रुव तारा उत्तरी क्षितिज के नीचे लुप्त हो

गया। अब्दुल मक्कार और नूरजहां अपनी जिन्नी जुबान में बातें कर रहे थे। मिस्टर लीकी ने भी माना कि उन्हें भी उनकी बातें अच्छी तरह समझ में नहीं आ रही हैं। पर मुझे कुछ समझ में आया कि अब्दुल मक्कार की चाची तकलीफ में है क्योंकि उसके फालतू के दांत उग रहे थे। और उसकी आंखों की रोशनी इतनी बढ़ गई थी कि दूधिया कांच की ऐनक न पहनने पर वह लोगों के आर-पार वैसे ही देख लेती थी, जैसे कोई सर्जन एक्स रे की मदद से देखता है, और इसलिए जिस-तिस से टकरा जाती थी। खैर बूढ़े जिन्नों को यह सब वैसे ही होता है, जैसे बुढ़ापे में हम लोगों के दांत झड़ जाते हैं और आंखों की रोशनी कम पड़ जाती है।

थोड़ा समुद्र और गुजर जाने के बाद हमें अपने दाहिने ओर चमकीली लाल आभा दिखाई दी। 'वह जावा का एक ज्वालामुखी है। मिस्टर लीकी ने बताया, 'हम लोग रास्ते से थोड़ा भटक चुके हैं। हम थोड़ा बाईं तरफ मुड़ गए और बस एक दो मिनट में मोलुका द्वीप समूह जा पहुंचे। मुझे पता है कि उन्हें वकवक द्वीप समूह कहा जाता था, क्योंकि मैंने अलिफ लैला के किस्सों में बसरा के हसन की कहानी पढ़ी थी।'

नूरजहां ने अलविदा कहकर मिस्टर लीकी को विदाई का चुम्बन दिया और शान से पंख फड़फड़ाती कालीन से उड़ गई।

मिस्टर लीकी ने कहा, 'अब' हम मध्य अमरीका की ओर चलेंगे, कोई फर्क नहीं पड़ता है कि इधर से चलें, या उधर से। हम लोग ब्रिटिश गुएना के लगभग सामने हैं, इसलिए दोनों ही तरफ से 20,000 किलोमीटर की दूरी है। 'चलो दक्षिण की ओर चलते हैं।'

मैंने कहा, 'ध्रुव पर, वहां दिन होगा।' 'तुम ठीक कहते हो', मिस्टर लीकी ने हामी भरते हुए कहा, और हम दक्षिण की ओर चल दिए।

हमने आस्ट्रेलिया को उसी हवाई मार्ग से पार किया जिस रास्ते एयरमेल भेजी जाती है, पर दो सौ गुना तेज रफ्तार से, और फिर हम विशाल दक्षिणी रेगिस्तानी बीहड़ पर पहुंच गए। हमें चांदनी में चमकती एक झील दिखी, पर किसी शहर की रोशनी नहीं दिखी। कितने ही अनचीन्हें तारे उग आये थे। पर पहले हमें आकाश गंगा के टुकड़े जैसे दो अजीब से धुंधले धब्बे दिखे। मिस्टर लीकी ने बताया की वे मेगलान की बदलियां हैं। शीघ्र ही हम आस्ट्रेलिया के दक्षिणी समुद्र पर उड़ रहे थे। हमें दक्षिणी क्रास और सेंटारस तारा मण्डल दिखे। इसके बाद ही दक्षिण पश्चिम से उगता सूरज दिखा। जो चकित करने वाली बात थी। हां, पर आज वह स्वाभाविक बात लगती है। हमारे नीचे बादल थे, पर उनके बीच से कभी-कभी मुझे स्लेटी रंग का ठंडा समुद्र दिख जाता था, जिसमें हिम खंड तैर रहे थे।

'किनारे पर पहुंचने पर हम उतर सकते हैं क्या', मैंने पूछा, मैं पेन्गुइन देखना चाहूंगा।

'हां, क्यों नहीं', मिस्टर लीकी ने जबाब दिया, 'पर हमें गर्म कपड़ों की जरूरत पड़ेगी। अंटार्कटिक में जब धूप खिली होती है तो भी सर्द हवाएं होती हैं। गांठ तो खोलो क्लीमेटिंना।' उन्होंने टोकरी से दो फर के कोट, मोटे-मोटे मोजे जूते और दूसरे गर्म कपड़े निकाले, जो निश्चित ही दिल्ली में उसमें नहीं थे। साथ ही उसमें से ऊनी अस्तर वाला फायर-पाइप जैसा कुछ निकाला, क्लीमेटिंना टोकरी को फिर से बांधने से पहले उस पाइप में घुस गई। हम उतर कर यही कोई एक मील की ऊंचाई पर आ गये। और एक बियाबान तट पर जा पहुंचे जिस पर बर्फ की खड़ी चट्टानें थीं, और उनके पीछे पहाड़ थे। हम एक दो मिनट तक उड़ते रहे और एक खाड़ी तक जा पहुंचे, जो समुद्र में काफी धीमी रफ्तार से मिलती थी। यह छोटी सी जगह काफी सुंदर है', मिस्टर लीकी ने कहा, 'यहां पर करीब पांच लाख पेंगुइनों की

आबादी है। लीड्स और ब्रिस्टॉल जितनी बड़ी आबादी।'

'उनको खराब नहीं लगता यहां। तुम निश्चित ही पूछोगे कि मैं कैसे जानता हूं। मुझे पता है भाई। तुम्हें नहीं मालूम होगा कि तीन सालों तक मैं खुद पेंगुइन था। मुझसे जलने वाले एक जादूगर ने मुझे उस समय पेंगुइन बना दिया, जब स्नान घर में नहाते वक्त मैंने अपनी जादुई अंगूठी उतार रखी थी। जब होश आया तो पाया कि मैं एक अच्छे पेंगुइन की तरह अंटार्कटिक सागर में गुलाबी झींगे* पकड़ रहा हूं। मैं एक शानदार पेंगुइन था, मैंने सोचा कि मुझे अपनी बाकी जिन्दगी इसी तरह गुजारनी होगी, इसलिए मैंने शादी करके घर बसा लिया। हमारे दो बच्चे थे, पर एक दिन मेरी पत्नी पेंगुइन को एक सील ने खा लिया, और मुझे पत्थरों से एक 'पांच कोणीय जादुई तारा'' बनाने का मौका मिल गया, मंत्र तो मैं नहीं पढ़ सकता था, पर दो दिन तक जादुई नाच नाचता रहा, और फिर मैं इंसान बन गया।''

'उस आदमी का क्या हुआ, जिसने आपको पेंगुइन बनाया था?

'अरे हां, उससे कुछ यूं निबटा कि वह आज अलबर्ट मेमारियल में प्रिंस कांसॉर्ट के पुतले में कैद है। वह देखता तो बहुत कुछ है, पर धीर-गंभीर दिखाने के सिवाय खुद कुछ नहीं कर सकता है। और फिर रातों में काफी ठंड भी होती है। लेकिन समुद्र के पेंदे में बोतल में बंद पड़े रहने, या सर कुए में उल्टा लटकाए हारुद-मारुद की हालत से तो यह बेहतर ही है।

हम नरम सपाट बर्फ पर उतरे और पेंगुइनों को देखने लगे। हर जोड़े का गोलाकार पत्थरों का घोंसला था, उनमें से एक बच्चों की रखवाली करने वहीं ठहरा था, जबकि दूसरा साथी समुद्र से झींगी पकड़ने गया था। हजारों पेंगुइन इधर-उधर टहलते हुए शाम की पोशाक पहने मोटे आदमियों से दिख रहे थे। कई अन्य पेंगुइन समुद्र के किनारे बर्फ की एक कम ऊंची चट्टान पर थे

जिनका इस्तेमाल वे तैरने के लिए छलांग मारने वाले तख्तों की तरह करते थे, और मस्ती करते हुए एक-दूसरे को नीचे धकिया रहे थे। पर यह सब तो तुमने अंटार्कटिका महाद्वीप की फिल्म में शायद देखा होगा, वहां पहुंचने पर बिल्कुल एडमिरल बायर्ड की फिल्म जैसा दृश्य दिखा। वह विशाल पर्वतों, बर्फीली नदियों से भरा बियाबान था, जहां जिन्दगी का नामो निशान तक नहीं था। हम दक्षिण ध्रुव की ओर गए, फिर उत्तर की ओर ग्राहम लैंड की ओर मुड़कर समुद्र तक पहुंच गए। हम रास्ते में केपहार्न जाते कुछ जहाजों के ऊपर से गुजरते हुए टेरा देल फ्यूएगो और दक्षिण अमरीका पहुंचे। एक बार फिर घास देखकर बड़ा अच्छा लगा। अर्जेंटीना के ऊपर उड़ते हुए हम इतने नीचे आ गए कि ढोरों के विशाल रेवड़ों के बाड़े दिख रहे थे, जो टीन के बने थे। फिर हम ब्राजील की ओर चल पड़े। मौसम काफी गर्म होता जा रहा था, इसलिए मैंने टोकरी से सन हेलमेट और रेशमी कमीज निकाल कर पहन ली। फिर जब दुबारा नीचे झांका तो दूर-दूर तक केवल हरियाली की चादर नजर आ रही थी, वो तो जब मिस्टर लीकी ने बताया तो मुझे समझ में आया कि वे पेड़ों की फुनगिया हैं, घास नहीं है। हम अमेजन नदी के ऊपर से बस एक मिनट के लिए गुजरे, जो लगभग इंग्लिश चैनल जितनी चौड़ी थी, पर बड़ी तेज रफ्तार से बहते हुए बड़े-बड़े वृक्षों को बहाए लिए चली जा रही थी। मेरी घड़ी में जब साढ़े तीन बजे थे, तभी हम कुछ और पहाड़ों को पार कर फिर से समुद्र पर पहुंच गए।

'आओ चलें, ज्वालामुखी देखते हैं', मिस्टर लीकी ने कहा, 'अगर तुम यह तावीज पहन लोगे तो बचे रहोगे, पर ध्यान रहे, जब तुम पैराशूट और लाइफ बेल्ट उतारो, तब भी इसे पहने रखना। हम एक द्वीप पर रुके, जो मेरे ख्याल से मारटीनिक था, वहां एक ज्वालामुखी धुएं के विशाल बादल उगलता भयानक शोर कर रहा था। मैंने तावीज पहनकर टोकरी से एस्बेस्टस के बड़े जूते निकाल लिए और हम ज्वालामुखी के मुहाने से सटी एक

काली चट्टान पर उतर कर कगार के नीचे झांकने लगे। मुझे वह दृश्य बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। भाप और घरों जितनी बड़ी लाल गर्म चट्टानें उससे उछलकर हमारे सरों के ऊपर से होती हुई गुजर रही थीं। मुझे मालूम था कि तावीज की वजह से मैं सुरक्षित रहूंगा, पर न चाहते हुए भी अपना सर इधर-उधर कर चट्टानों से बचने की कोशिश कर रहा था। थोड़ी ही देर में मैं उकता कर नीचे बहकर आती लावा की एक धारा को देखने के लिए बाहरी ढलान से नीचे उतरा। वह बहुत बदसूरत बियाबान किस्म की जगह थी, और पहाड़ की बजाय मलवे का ढेर दिखती थी। जगह-जगह जमीन धसक रही थी, और एक पौधा तक नहीं था वहां। पर पोम्पेई के ख्याल से स्वर्ग था वह। वह अपने अंगारों से उड़कर मेरे पीछे-पीछे नीचे आ गया, मुझे लगा, वह मुझसे टकरा जाएगा। मुझे नहीं मालूम था कि मेरा तावीज एक सुर्खलाल ड्रैगन से मेरा बचाव कर पाएगा, या नहीं, भले ही वह फुट भर का हो। तो जब उससे बचने के लिए हटा तो पांव में मोच आ गई, क्योंकि मैं राख भरी ढलान पर था। पोम्पेई नीचे उस जगह लोट लगाने लगा, जहां गर्म भाप निकल रही थी। मैंने मिस्टर लीकी को पुकारा तो वे नीचे भागे आए और एक छोटा-सा मंत्र पढ़कर मेरी मोच पल भर में ठीक कर दी।

'मुझे अफसोस है', उन्होंने सफाई देते हुए बताया, 'मैं गंधक इक्ठ्ठी कर रहा था। हां, जादू के लिए ज्वालामुखी का गंधक चलता है, कारखाने वाला नहीं। और यहां के बहुत से ज्वालामुखी इस काम के लिए बेकार हैं। जब यहां स्पेनी हमलावर आए तो बहुत सारे ज्वालामुखियों का ईसाई पद्धति से बपतिस्मा कर दिया। वे समझते थे कि इससे ज्वालामुखी सुधर जाएंगे। इससे उनका फटना तो नहीं रूका, पर जादू के लिए वे किसी काम के नहीं रहे। पर कोई भी स्पेनी इस ज्वालामुखी के पास आकर इसका बपतिस्मा नहीं कर सका, क्योंकि यह अधिक भड़कने वाला ज्वालामुखी रहा है।ओ शरारती ड्रैगन पोम्पेई इधर वापस आओ।'

पोम्पेई हमारे ठीक नीचे बह रही लावा की धारा में छपर-छपर कर रहा था और सुर्ख तपते लावे को हासिल करने के लिए उसके ऊपर जमे मलवे को खुरच रहा था, उसने थोड़ा-सा लावा पिया, और उससे कई गुना छपर-छपर कर छिटका दिया। मुझे लगता है कि उसने मिस्टर लीकी को सुना तो, पर इतना शोरगुल था वहां कि ठीक से सुन नहीं सका, पर इतना तय था कि उसने उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया, पहले तो वह पीठ के बल लेट गया और लगा हवा में लातें चलाने। जब वह उठा तो उसके पंख लावे में वैसे ही लथपथ हो रहे थे, जैसे चाशनी में फंसे ततैय्या के होते हैं, वह भाप उगलते मुंहाने में जा घुसा।

मिस्टर लीकी को अब्दुल मक्कार को नीचे बुलाने के वास्ते अपनी अंगूठी को बस जरा-सा टकोरना पड़ा।

हे अब्दुल मक्कार' उन्होंने कहा, 'हम तुम्हारी अर्ज पर इस लपटों के वासी आग उगलू को अपने साथ लाए हैं। किताबों में दर्ज है कि अच्छी सलाह देने वाले को फूलों के हार से शोभित करो, पर गलत सलाह देने वाले को काल कोठरी में डाल दो। पर बजाए इतनी क्रूर अभागी सजा तुम पर थोपने के, मैं तुम्हें केवल इतना हुक्म देता हूं कि उधर परे ज्वालामुखी पहाड़ की अग्निमय गहराइयों में छलांग लगाकर मेरे बिगड़ैल नौकर को पकड़ लाओ। बल्कि बेहतर होगा उसे पीतल की या टंगस्टन जंजीरों में जकड़ दो, जो ज्यादा गर्मी में पिघलती है, और उसे मेरे पास लाओ, पर उसे सजा मत देना। जंग में वह शूरवीर साबित हुआ है। तुम यह काम करो, इस बीच हम लोग एन्ड्रोस द्वीप समूह रवाना हो रहे हैं।'

अब्दुल मक्कार ने झुककर दोहरे होते हुए सलाम किया और पोम्पेई के पीछे मुहाने में उतर गया। हम वापस चढ़ाई पर चढ़े और उड़नकालीन पर सवार होकर पश्चिम की ओर समुद्र के ऊपर से एन्ड्रोस की ओर चल पड़े। जहां हम एक मूंगे की चट्टान के पीछे स्थित रेतीले तट पर उतरे, और दोनों के बीच की दूरी तैरकर पार की। कोई दो सौ गज की दूरी थी, और वहां समुद्र मनभावन, शांत और गुनगुना था, हालांकि बाहर की ओर लहरें जरूर ऊंची थीं। चट्टान पर स्थित कुंड सुन्दर हरे तोते जैसी मछलियों, लाल सितारा मछलियों और समुद्री अर्चिन से भरे पड़े थे। मैंने वहां पर आधा घंटा आनंदपूर्वक बिताया। शुक्र है एक जादुई लेप का, जिसने मुझे सूरज की धूप से बचाया।

जब हम तट पर वापस लौटे तो अब्दुल मक्कार पोम्पेई को लेकर हाजिर था जो अब अंगीठी में जंजीर में जकड़ा पड़ा था, और अपने किए पर शर्मिंदा था। हमने तट पर चाय पी और कालीन पर सवार होकर वापस लंदन की ओर चल पड़े। जब हम बिस्के कि खाड़ी पर थे तो सूरज डूब गया। मैंने अपने गर्म कपड़े फिर पहन लिए, और अगले ही पल हम बादलों को चीरते लंदन में उतर रहे थे।

हम मिस्टर लीकी के घर में बिना छेद किए दीवार से घुसे, यह काफी डरावना अहसास था, हांलाकि मुझे पता था कि कुछ नहीं होगा। फिर भी मैं कबूल करता हूं कि ईंटों की दीवारों से नब्बे मील प्रति घंटे की रफ्तार से यूं जा भिड़ना मुझे नापसंद

है। इसलिए मेरी पक्की सलाह है कि उड़नकालीन पर सफर करो तो शुरू और अंत में आंखें जरूर मीच लो। कमरा जैसा छोड़ा था, वैसा ही था, पर बाहर से कुछ आहट आ रही थी। हमने दरवाजा खोला तो एक अत्यंत दयनीय दिखने वाला आदमी अंदर आया। उसकी नाक खिंचकर तीन फुट लंबी ककड़ी हो रही थी, जिसका सिरा दरवाजे के हत्थे में चिपका था। जब उसने अब्दुल मक्कार को देखा तो हड़बड़ा कर पीछे हटना चाहा, पर नाक रबड़ की तरह खिंच कर और लम्बी हो गई। वह ज्यादा पीछे नहीं जा पाया, क्योंकि नाक इलास्टिक जैसी थी।

' हे जादूगरों के उस्ताद, मैं इस चोर की जिंदा चमड़ी उधेड़ दूं क्या, या इसकी ही नजरों के सामने इसका पेट चीरकर, इसके जिगर को तलूं?' जिन्न ने पूछा।

'खुशकिस्मती से ऐसी सजाओं पर आजकल लंदन में पाबंदी है', मिस्टर लीकी ने जवाब दिया, 'मैं उनके न्याय पर शक नहीं करूंगा, पर बेशक वे घिनोनी हैं। तुम अपने आप को खुशकिस्मत समझो' उन्होंने चोर से कहा, 'हम कहीं पर सप्ताहांत के लिए बाहर नहीं गए थे क्योंकि मैं ही तुम्हारी नाक हत्थे से बिना कुल्हाड़ी के छुड़ा सकता हूं। अगर मैं रास्ते में मर जाता तो तुम भी कभी छूट नहीं पाते, जैसे थीसियस और पिरिथस पिछले तीन हजार सालों से जादुई गोंद में चिपके बैठे हैं। खैर, मैं तुम्हें जाने दूंगा, क्योंकि मुझे तुम्हारी शक्ल नापसंद है। अगर तुम थोड़ी ठीक सूरत वाले होते तो तुम्हें सजावटी चीज बना रख लेता। तुम उठाईगीरे हो, हो न? मैं यह नहीं कह रह हूं कि तुम घटिया इंसान हो, पर मूर्ख तो हो, जो सेंधमारी जैसे कम आमदनी के पेशे में हो। जो भी हो, अब तुम और सेंधमारी नहीं कर पाओगे। मैं तुम्हारी नाक छुड़ाए देता हूं, पर अगली बार तुमने किसी घर में चोरी की, चाहे वह ऐसा जादूई घर न हो, तो भी तुम्हारी नाक उससे चिपक जाएगी, और फिर कुल्हाड़े से ही छूटेगी। तुम

यह आग उगलने वाला ड्रैगन देख रहे हो न, जब मैं तुम्हें छुड़ा दूंगा, तब तुम तुरंत ही रफूचक्कर नहीं हुए, तो तुम पर इसे दौड़ा दूंगा, इसलिए मेरा शुक्रिया अदा करने के लिए ठहरने की जरूरत नहीं है।

पोम्पेई अपनी टंगस्टन की जंजीर पर इतना जोर मार रहा था कि जैसे ही चोर की नाक छूटी, वह उसके सिकुड़कर पहले जैसा होने से पहले ही तीर सा छूट कर भागा और इतनी तेजी से सीढ़ियों से उतरा कि मुझे लगा कि अपनी गर्दन तुड़ा बैठेगा।

'मुझे अफसोस है कि मैंने उसे जाने दिया', मिस्टर लीकी ने कहा, उसमें सौ गज की दौड़ के चेम्पियन के लक्षण हैं। अगर मुझे पता होता तो पोम्पेई को उसके पीछे दौड़ाकर उसे अभ्यास करने के लिए मजबूर करता। और अब मुझे इजाजत दो तो जरा डिनर के पहले एक शैतान का आह्वान कर लूं, क्योंकि कल मुझे एक सासाबोनसम से निबटना है, जिसने अशांति में बड़ा गदर मचा रखा है, उससे निबटने के लिए मुझे मदद की जरूरत पड़ेगी। अरे, क्या तुम नहीं जानते कि सासाबोनसम कौन है? मैं सोचता हूं, लोगों को पारलौकिक इतिहास भी पढ़ना चाहिए, जैसा कि पहले के लोग करते थे। सासाबोनसम एक दुष्ट किस्म का दानव होता है, जो जंगल में पगडंडियों के किनारे के पेड़ों पर अपने हाथों से लटकता रहता है, और अफ्रीकी काले लोगों की गर्दन अपने पांव के पंजों से जकड़ लेता है। वह अपने पांव के अंगूठे को हाथों की तरह इस्तेमाल कर सकता है, बंदरों की तरह। वह गोरे लोगों को नहीं सताता है, क्योंकि वे उसमें यकीन नहीं करते हैं। पर अफ्रीकी लोग करते हैं, और इसीलिए दिक्कत में पड़ते हैं। मेरा शैतान दोस्त काफी शरीफ शैतान है, जैसे कि वे होते ही हैं, पर तुम शायद परेशान होओगे। इसलिए अगर तुम बुरा न मानो तो शुभरात्रि, उस जिन्न से लड़ाई में साथ देने के लिए शुक्रिया। क्या उड़नकालीन पर तुम्हें कहीं छोड़ दूं? '

'नहीं, बहुत-बहुत धन्यवाद,' मैंने कहा, 'आज के बाद मुझे बस में सफर भी बहुत एडवेंचरस लगेगा। बड़ा मजेदार वक्त गुजरा और ऐसा लग रहा है कि महीने भर की छुट्टी बिताकर लौट रहा हूं। सोमवार को मैं बिल्कुल तरोताजा होकर काम पर जाऊंगा।'

और फिर सोमवार को मैं फिर हिसाब किताब करने लगा कि नई नस्ल की गुलदावदी और बिल्लिया कैसे बनाऊं; क्योंकि वह मेरा पेशा है, जो श्रीमान लीकी के पेशे जितना ही अजीबोगरीब है।

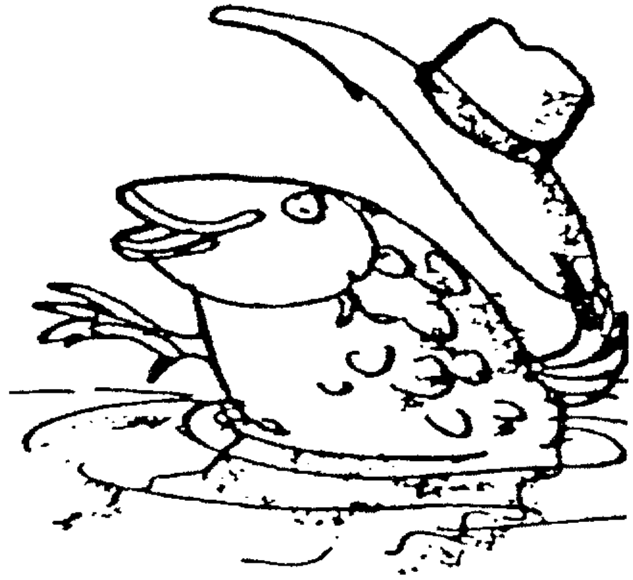

श्री लीकी की पार्टी

श्री लीकी की पार्टी

दुनिया की सैर करने के बाद मिस्टर लीकी से मेरी तीन महीने तक मुलाकात नहीं हुई। उनके पास टेलीफोन नहीं था, इसलिए मैं उन्हें फोन नहीं कर सका। मैं उनसे मिलने दो बार उनके घर गया। पहली बार मैंने उनके घर पर एक तख्ती लगी देखी, जिस पर लिखा था :

'नूंह आराम फरमा रहे हैं
पैर की अंगुलियों के नकली नाखूनों के निर्माता
केवल थोक आर्डर लिए जाएंगे'

मैंने अनुमान लागया कि यह केवल लोगों को दूर रखने के लिए किया गया मजाक है, क्योंकि अगर किसी की पैर की अंगुलियों के नाखून लोगों द्वारा कुचल दिए जाने की वजह से खराब हो गए हों, तो वह पाच-दस नाखून भले ही खरीद लें, पर नाखूनों के सौ सेट नहीं खरीदेगा। इसके अलावा दरवाजे पर नोटिस लगी हुई थी, जिस पर लिखा था, 'बुधबार तक घर से बाहर', और वहां कोई लेटर बॉक्स भी नहीं था। जब दूसरी बार गया तो दरवाजे की जगह केवल ईंट की दीवार थी। उसके बाद मैंने वहां जाना छोड़ दिया।

मार्च के आखिरी दिनों में मैं एक शाम सोने के पहले बाथटब में गर्म पानी का नलका खोले बैठा था, जैसा मैं हमेशा ही करता हूं, क्योंकि इस तरह पानी में घुसते वक्त वह अधिक गर्म नहीं लगता है और देर तक गर्म भी बना रहता है। जब एक सुनहरी मछली नलके में से निकल आई, तब मैं चौंक पड़ा, क्योंकि जो

पानी इंसानों को मीठा गुनगुना लगता है, आम सुनहरी मछली उसमें मर जाती है। मैं और भी चौंका जब उसे पनामा टोप लगाए देखा। क्योंकि यह नहीं दिख रहा था कि वह उसके सर पर कैसे चिपकी है। पर तब तो मैं बाथटब से उछल ही पड़ा, जब उसने पानी से सर बाहर निकाला, टोप उतारा और मेरा अभिवादन कर मुझसे बात करने लगी। उसने अपने दाहिने पंख से टोप उतारा, और उसका किनारा दो कांटों में फंसा कर बड़ी धीमी चिंचियाती आवाज में बोली,

'गुड मॉर्निंग', मैं मिस्टर लीकी के यहां से आई हूं, और उनकी ओर से आपके लिए एक पैगाम लायी हूं। क्या आप शनिवार की दोपहर को लगभग चार बजे चाय के लिए आ सकते हैं? वे एक दावत दे रहे हैं, और आप जब तक मर्जी हो ठहर सकते हैं। यह एक फैंसी ड्रेस पार्टी होगी, पर वह खुद ड्रेस देंगे। उनको उम्मीद हैं कि आप आएंगे, क्योंकि यह बहुत खास पार्टी है।'

'एक मिनट ठहरो जरा', मैंने टोका, 'जरा मैं अपनी जादुई डायरी ले लूं। पर तुम ठीक से तो हो? तुम्हें साबुन और गर्म पानी से कोई ऐतराज तो नहीं है। क्या तुम नहीं चाहोगी कि मैं इस बेसिन में थोड़ा ठंडा पानी मिला दूं।'

'नहीं धन्यवाद', मछली ने जवाब दिया, 'मैं यहां बड़े मजे मैं हूं, और फिर मुझे गर्मी और साबुन की आदत है। देखिए, बात ऐसी है कि मैं कोई सामान्य सुनहरी मछली नहीं हूं। मैं न्यूजीलैंड के एक गर्म पानी के सोते की रहने वाली हूं, जिसका पानी आपके टब से भी गर्म रहता है, और वहां आमतौर पर साबुनी पानी होता है, क्योंकि लोग बाग गर्म पानी और भाप की फुहार उड़ाने के लिए उसमें अक्सर साबुन की टिकिया फेंक देते हैं। इसलिए मैं बिल्कुल ठीक हूं यहां।'

मैंने अपनी डायरी चेक की और उससे कहा कि, 'मिस्टर

लीकी को मेरा शुक्रिया अदा करना और कहना, मुझे आने में बड़ी खुशी होगी।'

मछली ने मुझसे गर्म पानी के नलके को फिर से चालू करने को कहा, और वैसा करते ही वह उछलकर वापस नलके में घुस गई जैसे सालमॉन मछली झरनों में चढ़ जाती हैं, और चली गई।

अगले सप्ताह शनिवार को मैं मिस्टर लीकी के यहां चार बजने से दो मिनट पहले पहुंच गया। सीढ़ियों पर मुझे बड़े बेढंगे कपड़े पहने एक लड़का मिला। हम अंदर साथ-साथ ही गए, क्योंकि इस बार दरवाजा अपनी सही जगह पर मौजूद था, मिस्टर लीकी ने हमारा स्वागत किया। वे असली जादूगर की ही तरह सजे थे, जादुई चिन्हों और पंचकोणीय तारे टंकी लंबी नुकीली टोपी लगाए, लंबा लहराता चोंगा पहने। उन्होंने लड़के से मेरा परिचय कराया, बताया की वह मिस्टर जॉन रॉबिन्सन हैं। मुझे यह पसंद आया। मुझे लगता है कि एक लड़के का जॉनी रोबिनसन, या मास्टर रोबिनसन कहकर परिचय देना असभ्यता है। अगर लड़के समझदारी से पेश आएं तो उनके साथ बड़ों के समान ही सभ्य व्यवहार करना चाहिए।

'आप मिस्टर डॉब्स, भौतिक शास्त्री हैं', एक नाटे मोटे लाल चेहरे वाले सज्जन का परिचय कराते हुए वे बोले, जिनकी टांग पर तो एक भी बाल नहीं था, पर ठुड्डी पर ढ़ेर सारे बाल थे। 'पर आजकल बेकार हैं, पहले रेल में ज्यादा लगेज ले जाकर हर साल 3000 पौंड कमाया करता था।'

'माफ कीजिएगा, मैं समझा नहीं।'

आम लोग जब रेल में लगेज ले जाते हैं, तो किराया देना पड़ता है, पर इनके लगेज के लिए रेलवे इनको पैसा देती थी, क्योंकि उसका वजन गैस के गुब्बारे की तरह कुछ नहीं से भी कम होता था। दरअसल, मिस्टर डॉब्स के पास कुछ खास किस्म के बैग थे। जब उनको स्टेशन पर तौलने की मशीन पर चढ़ाते थे, तो वह एक बटन दबा देते थे, जिससे अंदर एक फुहारे से निकलकर हाइड्रोजन गैस भर जाती थी, और बैग ऊपर वैस ही उचक जाता था जैसे कि गुब्बारा।

'पर वह हवा में ऊपर उड़ क्यों नहीं जाता था? '

आहा, यही तो मिस्टर डॉब्स की चतुराई थी। फुहारे से निकली गैस एक बिजली के चुम्बक को चलाती थी, जो तौलने की मशीन के लोहे के प्लेटफार्म को जकड़कर रखती थी। मजबूरन उन लोगों को लगेज पर भारी वजन रखने पड़ते थे, ताकि मशीन वजन के तौर पर कुछ नहीं तो नहीं दिखाए। देखो, अगर तुम तय वजन से सौ गुना ज्यादा लगेज ले जाओगे तो रेलवे को भाड़ा तुम्हें देना पड़ेगा, पर अगर तुम्हारे लगेज का वजन कुछ नहीं से भी सौ गुना कम है, तो रेलवे को तुम्हें पैसा देना पड़ेगा।

द ग्रेट नार्थ आफ स्काटलैंड रेलवे, जो एबरडीन जाती थी, ने पैसा नहीं दिया, तो श्रीमान डॉब्स ने मुकदमा ठोक दिया उस पर। अंत में हाउस आफ लॉर्ड्स ने पाया श्रीमान डॉब्स सही हैं, तो रेलवे कंपनी को इन्हें चार पौंड साढ़े नौ शिलिंग के साथ 95,000 पौंड वकील के खर्चे के तौर पर देने पड़े। यह कई बरसों तक इसी तरह कमाते रहे, आखिरकार संसद को एक विशेष कानून बना कर इन्हें रोकना पड़ा। इसलिए आज कल बेकार हैं यह, पर इनकी एक नई स्कीम है, सिनेमा से पैसा कमाने की। मैं सोचता हूं इन्हें जादूगर होना चाहिए था।

'इनसे मिलो, ये हैं आर्कएंजेल रैफेल। ये यहां इसलिए हैं कि हम यहां जो करने वाले हैं, उससे कोई मेहमान डरे, तो उसे संभाल लें, आर्कएंजेल की मौजूदगी उन्हें तसल्ली दिलाती रहेगी कि सब ठीक रहेगा। वैसे तो मैं इन्हें यहां आने की तकलीफ नहीं देता पर, एक आर्कएंजेल एक ही वक्त में कई जगहों पर मौजूद

रह सकता है, इसलिए मैं इनके काम या खेल में कोई व्यवधान नहीं डाल रहा हूं। इसी बक्त ये अनाथ बच्चों और विधवाओं की बगदाद, टोपे का स्प्लिट, विफलेट, सेमीपालटिंसक और सोटेविले और मूज़ ज़ॉ में मदद कर रहे हैं। साथ ही शैतानों की टीम के खिलाफ दुर्गम द्वीप में बिकेटकीपरी कर रहे हैं, और ब्राजील के जंगल में आर्किड के फूल चुन रहे हैं।'

'मैं आपसे मिलकर धन्य हुआ', मैंने कहा। 'अरे नहीं', रैफल ने जवाब दिया। 'मिस्टर लीकी जरूरत से ज्यादा नम्र हैं, उनकी पार्टियों में आने में हमेशा ही आनंद आता है। इसके अलावा मुझे पार्टी में अपने असली रूप में आना पसंद है, बजाय इसके कि टेलकोट में पंख ढके रहें, अगर अब्दुल मक्कार के चमड़ पंखों के बजाए मेरे जैसे पंखदार डैने हों, तो यह बड़ा अटपटा लगता है। अरे, नहीं कोई अदला बदली नहीं करूंगा उससे।'

और भी कई मेहमान आए। वहां तीन अन्य लड़के और चार लड़कियां थी, एक चीनी जैसा दिखता मेहमान पीले चोंगे में छत में से आया, स्मार्ट कपड़े पहने एक हसीन महिला छुट्टियां बिता रही फिल्मी हीरोइन

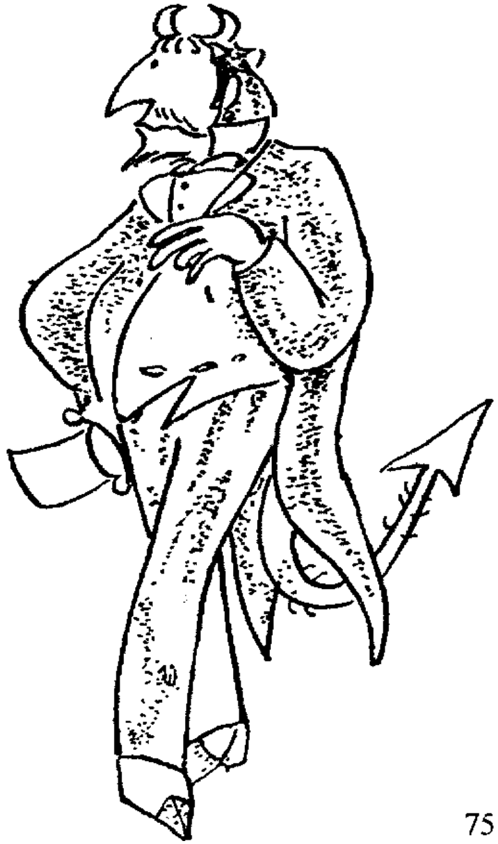

थी, जमीन में से एक शैतान निकला, और यूनीफार्म पहने एच. एम.एस. फ्यूरियस का एक नाविक भी आया। शैतान एक दुपूंछी कोट और भूरा टोप लगाए था जैसे कोई संभ्रांत व्यक्ति ऐस्कॉट होटल जा रहा हो। पर जब उसने टोप उतारा तो सींगों से पता चलता था कि वो एक शैतान है। शैतानों को अपने सीगों को छुपाने के लिए हमेशा ऊंचा टोप पहनना पड़ता है। उसकी पूंछ चेक वाले पैंट के पीछे छेद से बाहर निकल रही थी। आर्कएंजेल और शैतान ने एक-दूजे को बेमन से सलाम किया पर हाथ नहीं मिलाए, शैतान की पूंछ बिल्ली की पूंछ की तरह तन रही थी। मुझे उम्मीद थी कि वह आर्कएंजेल के साथ जरूर कोई शरारत करेगा। पर मिस्टर लीकी की मौजूदगी में बड़ा शालीन बना हुआ था। मैंने ध्यान दिया कि जैसे-जैसे मेहमान आते जा रहे थे, कमरा भी बड़ा होता जा रहा था। दो दीवारें पीछे हटतीं जा रही थीं और एक सुनहरे गमले में लगे अजीबोगरीब पेड़ की शाखों पर कुर्सियां उग रही थीं, तथा पककर नीचे टपकती जा रही थीं। कुर्सी पेड़ के अलावा चाकलेट पेड़ और टाफी पेड़ भी थे जो किसी के नजदीक आने पर शाखों को आगे बढ़ा मीठा पेश करते थे।

'हां', मिस्टर लीकी ने कहा, 'लगता है सभी मेहमान यहां मौजूद हैं। अब आप खुद तय करिए कि आपको इस पार्टी में क्या रूप धरना है। आप जो चाहें बन सकते हैं, पर अपने डील-डौल का ध्यान रखें। मेरा मतलब है कि कोई एवरेस्ट शिखर बनना चाहे तो बन सकता है, पर वह छह फीट से ऊंचा नहीं होगा, वरना हम सब कुचले जायेंगे। अगर कोई पिस्सू बनना चाहे तो भेड़ जितनी बने, नहीं तो खुद पिस जाएगा, या गुम हो जाएगा और दस फीट से ज्यादा छलांग नहीं लगा पाएगा, अथवा छत से टकरा कर खुद को घायल कर बैठेगा।'

'सर, क्या मैं हाथी बन सकता हूं?' जॉन रॉबिन्सन ने पूछा।

'आसान है यह', मिस्टर लीकी ने कहा।

बस जादूई छड़ी के इशारे की देर थी, वह बछड़े जितना बड़ा, पर मोटे पैरों वाला हाथी बन गया। वह बड़े जोश में कमरे भर में लोगों से हाथ मिलाता, सूंड से फल उठाकर खाता घूमने लगा। फिर फिल्मी हीरोइन ने अपनी पिनपिनी आवाज में फरमाया कि वह तितली बनना चाहेगी। पर वह गलत थी क्योंकि विशाल समुद्री पक्षी एलबैट्रास जितनी बड़ी तितली कितनी बदसूरत लगेगी, इसका तुम्हें अंदाजा न होगा। उसके पंखों पर रंग तो सुंदर थे पर उन पर भद्दी पपड़ियां जमी हुई थीं। सर के दोनों ओर दो बड़ी चश्मेदार आंखें थीं और उसकी सूंड ट्रेन के दो डिब्बों के बीच लगे वेक्यूम पाइप जैसी थी, उसकी छह काली और कठोर पतली टांगें थीं जिनके सिरों पर हुकनुमा पंजे थे। एक पढ़ाकू सी दिखने वाली लड़की ने, जिसने चश्मा लगा रखा था, विलियम शेक्सपियर बनना चाहा। सो बन गई और फिर सारी शाम अतुकांत काव्य दोहराती रही, सिर्फ एक या दो बार तुक बैठा सकी। दूसरी लड़की जो जरा मोटी थी, एक कछुआ बन गई, पर काफी भारी भरकम। मिस्टर डॉब्स आइकासाहेड्रोन बने, जो त्रिकोणों से ढके क्रिस्टल जैसी चीज होती है। वह बड़े अटपटे ढंग से इधर-उधर लुढ़कते फिर रहे थे। कामवाली बाई एक राजकुमारी बनी, जिसके सर पर एक छोटा सा सुनहरा ताज था और वह एरमाइन का फर वाला लबादा पहने थी, जो पहनने के पहले उसे बड़ा गर्म लग रहा था। हम लोग उसे 'महामहिम पारदर्शिनी जी' कहने लगे, क्योंकि पता चला कि वह जर्मन राजकुमारी थी। वहां ढेर सारे राजकुमार, राजकुमारियां थीं जिनके इसी तरह के मजेदार नाम थे। वैसे सही जर्मन शब्द था 'durchlalucht' पर मिस्टर लीकी ने कहा कि हमें उसका सही जर्मन उच्चारण करने के लिए उन्हें 20 मिनट तक सम्मोहित करना पड़ेगा, इसलिए बेहतर है कि हम उसे इंग्लिश में ही पुकारते रहें।

एक दूसरा लड़का रोल्स रायस कार बन गया, पर जाहिर है, बेशक फुल साइज की नहीं। चाकलेट पेड़ की एक शाख पर

छोटा-सा पेट्रोल पंप उग आया, जिसने उसका टैंक फुल कर दिया, वह कमरे में इधर-उधर तेज रफ्तार से घूम रही थी पर उसके जादुई बंपरों के चलते लोगों को टक्कर नहीं लग रही थी।

एक लड़की काफी हल्की-फुल्की किस्म की परी बनी, वह सफेद कपड़ो में लिपटी हुई थी, और उसके मधुमक्खी जैसे पंख थे। एक और लड़का बड़ी सफेद मूंछों वाला मेजर-जनरल बना, वह बड़ा-सा फरदार टोप लगाए हुए था, और उसकी छाती पर तमगों की कतारें सजीं थीं। उसके जूतों में घुड़सवारों जैसी कटीली एड़ियां लगी थी, जो कालीन में उलझ गईं और उसके मुंह से निकल पड़ा, 'मिस्टर बाईगाड।'

चीनी जैसा दिखता आदमी, तिब्बती लामा निकला। वह बोला, उसे कोई फर्क नहीं पड़ता है, क्योंकि हकीकत में कुछ भी असल नहीं है। मुझे उसकी बात सच नहीं लगी, पर मिस्टर लीकी ने कहा। किसी के भरम को बदलने में कुछ खास मजा आता है। उसे याक बना दिया, क्योंकि उसने बताया था कि उसके घर पर कई अच्छे याक (सुरगाय) हैं।

आखिर में बची नन्ही सी लड़की, लड़का बन गई। वह बेहद साधारण किस्म का लड़का बनी थी, पर काफी खुश लग रही थी। नाविक बुल-टेरियर नस्ल का कुत्ता बन गया, पर उसे वादा करना पड़ा किसी को काटेगा नहीं।

मैं तय नहीं कर पा रहा था कि क्या बनूं, वहां पहले से ही काफी जानवर और तरह-तरह के लोग थे, और मैं मशीन बनना नहीं चाहता था, इसलिए मैंने फरमाइश की कि मैं पुच्छलतारा बन जाऊं, जरा सी देर में ही मैं पुच्छलतारा बन गया, लेकिन महज छह फुट लंबा, मेरे ख्याल से मैंने सबसे छोटा पुच्छलतारा होने का रिकार्ड बनाया, क्योंकि अधिकांश पुच्छलतारे धरती से भी बड़े होते हैं, उनमें से कुछ तो लाखों मील लम्बे हैं।*

पुच्छल तारा बन कर बड़ा अजीब लगा। सबसे पहले तो मुझे अपने भीतर फुरफुरी सी महसूस होती रही जो तब तक होती रही, जब तक मैं पुच्छलतारा बना रहा। फिर मैं हवा में उठ गया और पता चला कि मैं एक लैंप के फेरे लगा रहा हूं, फेरे लगाते-लगाते कभी उसके काफी नजदीक पहुंच जाता, कभी दूर हो जाता, पर मेरा सिर हमेशा ही लैंप की तरफ रहता। खैर, थोडी देर में मैंने जान लिया कि अपनी मन-माफिक जगह कैसे उड़ पहुंचा जाए, और कोई दस मिनट के बाद मैं हवा में एक तितली के साथ नाच रहा था। हालांकि मेरा ख्याल था कि उसे आर्कएन्जेल के साथ नाचना ज्यादा पसंद था। देखो भाई, बात ऐसी है कि आर्कएन्जेल के पास नाचते वक्त आपको थामने के लिए हाथ होते हैं, जो मुझ पुच्छलतारे के पास कहां थे। इसलिए नाच में तितली का असली साथी बनने के बजाय मैं बस फेरे ही ले पा रहा था। मैं कुछ देर परी के साथ भी नाचा, पर उसको इधर-उधर फुदकना और पेड़ों की फुनगियों पर एक पैर पर खड़ा होना अधिक पसंद था।

अपनी मर्जी के मुताबिक उड़ना सीख लेने के बाद मुझे दूसरों की गतिविधियों को देखने का मौका मिल गया। खास तौर पर तब, जब रैफेल तितली के साथ नाच रहा था।

तब तक दो और लड़के रूप बदल चुके थे। एक तो बहुत ही शानदार झींगा बन गया, बहुत ही शानदार, कोई छह फीट लंबा, जिसमें मूंछों की लंबाई शामिल नहीं थी, और उसके पंजे देखकर मैं शुक्र मना रहा था कि मैं ऊपर हवा में हूं। पर उनसे उसने किसी को भी चोट नहीं पहुंचाई। शेक्सपियर और राजकुमारी उस पर और कछुए पर सवारी गांठने लगे। एक और लड़का भूत

*दरअसल पुच्छल तारे (कामेट) आमतौर पर टीले या पहाड़ जितने बड़े होते हैं, हां उनका कोमॉ चांद या सूरज जितना बड़ा हो सकता है, पर चूंकि वह गैस धूल को छितराती जाती बदली है और कॉमेट के नाभिक के गुरुत्व बल से बंधी नहीं होती अत: कॉमेट का हिस्सा नहीं मान सकते हैं।

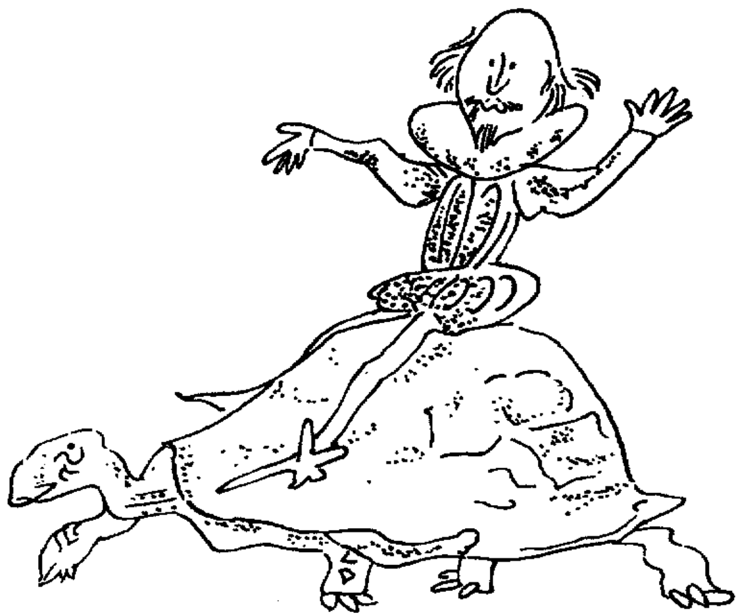

बनना चाहता था। मैंने सुना, मिस्टर लीकी उसे समझा रहे थे, 'देखो भाई, तुम वैसे भी एक दिन पता नहीं कितने अरसे के लिए भूत बनोगे ही, चाहे तुम्हारी मर्जी हो या ना हो, पर आज तुमने कुछ और बनने का इरादा नहीं किया तो फिर कभी गोरोन्गोन्जोला पनीर, वैक्यूम क्लीनर, जार्ज रोबी, या ऐपेसिओपेसिस, अथवा कुछ और बनने को मौका नहीं मिलेगा।' फिर भी लड़के ने जिद्द की कि वह भूत ही बनेगा। इसलिए मिस्टर लीकी ने उसे भूत बना दिया, पर वादा लिया कि वह घर की खिड़कियों के नजदीक नहीं फटकेगा, नहीं तो राह चलते लोग उसे देखकर सोचेंगे कि घर में किसी का खून हो गया है, और पुलिस बुलवा लेंगे।

मैं उसे भूत बनते तो नहीं देख पाया, क्योंकि उस वक्त मैं टाफी पेड़ की शाखों में उलझ गया था। पर जब वह भूत बना तो वह क्षण अफरातफरी का था। शैतान ने उसे इसलिए पकड़ना

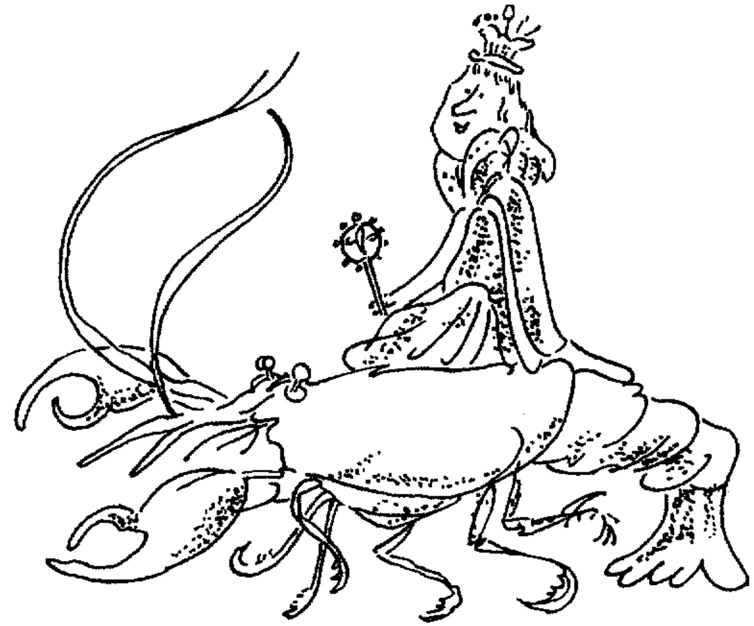

चाहा कि उसने अपना होमवर्क पूरा नहीं किया है, पर आर्कएन्जेल रैफेल ने उसका बचाव करते हुए कहा, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है क्योंकि वह अपनी मां के साथ बड़ा भला व्यवहार करता है, इसके अलावा पिछले ही हफ्ते उसने एक अंधे को सड़क पार कराई, और एक गड्ढ़े में गिरे कुत्ते को बचाया।

खैर जैसे-तैसे मिस्टर लीकी ने दोनों को ही समझाया कि अभी उनकी दोपहर की छुट्टी है, और फिर भूत ने बड़े मजे मारे। उसने बुलटेरियर कुत्ते को डराना चाहा, तो वह और भी बौखला गया और उस पर से कूदकर उसमें से पार हो गया। फिर उसने शेक्सपियर को डराने की कोशिश की तो उसने कहा :

'आप भी डेनमार्क के राजकुमार के उस पिता की तरह हैं, जिन्होंने उस कवि को डराने की कोशिश की, जिसने उनका अभिनय किया था।'

फिर उसने रोल्स रॉयस को चलाने की कोशिश की, पर उसने

उसमें अपना सर और धड़ तो बंद दरवाजों के बावजूद जैसे-तैसे घुसेड़ लिया, पर छोटी होने की वजह से पैरों के लिए कोई जगह नहीं थी। मेरे ख्याल से जब भूतों का केवल निचला धड़ ही नजर आता है, तो वे बड़े मजेदार दिखते हैं, यह अलग बात है कि ऐसा अमूमन होता ही रहता है, आपकी कल्पना से भी ज्यादा।

जब मैं न्यू कालेज, आक्सफोर्ड से ग्रेजुएशन कर रहा था, वहां एक भूत हुआ करता था, जो कि सम्राट जार्ज प्रथम के जमाने से ही वहां तीसरी मंजिल पर चहलकदमी करता रहता था। खैर पचास साल पहले उन्होंने कालेज का एक हिस्सा फिर से बनावाया, और दूसरी मंजिल के कमरों की छत को काफी ऊंचा उठा दिया। पर भूत पहले की तरह, जहां तीसरी मंजिल का फर्श था, उसी ऊंचाई पर चलता रहा, तो जो लोग दूसरी मंजिल पर रहते थे, उनको भूत के जूते छत से नीचे लटकते हुए चलते दिखते थे। वे बहुत बड़े जूते थे। एक आदमी, जिसको मैं बड़ी नजदीक से जानता था, कहता था उसको जूतों के तले साफ-साफ नजर आते हैं, उनमेंसे एक तले को तो मरम्मत की जरूरत थी। बेशक, मुझे नहीं पता कि भूत के जूतों के तल्ले कितनी जल्दी घिसते हैं, पर तुम्हें अचंभा नहीं होना चाहिए, क्योंकि वह तीन सौ सालों से टहल रहा था, भले ही उसे हाल के दिनों में एक भुतहे फर्श पर टहलने का मौका मिला।

जो भी हो, मिस्टर लीकी की पार्टी में लोगों को जल्दी ही उस खास भूत की आदत पड़ गई, फिर भी कहना चाहूंगा कि हालांकि उसके आर-पार देख पाने में बड़ा मजा आ रहा था, पर यह दृश्य शेर के आकार के झींगे से कम चौंकाने वाला था।

इसके बाद ही मिस्टर लीकी ने कहा कि चाय का वक्त हो गया है, और जो लोग समझते हैं कि वे अपने मौजूदा रूप में चाय नहीं पी पाएंगे, वे उनका रूप बदलने के लिए तैयार हैं। मैंने और श्रीमान डॉब्स, दोनों ने ही रूप बदलने की मांग की क्योंकि

न तो आइकोसाहेड्रोन के मुंह होता है, न ही पुच्छलतारे का। भूत ने कहा, वह ऐसे ही जलपान करेगा, पर मिस्टर लीकी ने कहा, कि चबाई हुई केक और चाय का नीचे सरकते हुए दिखना कोई अच्छा नजारा नहीं होता। झींगा भी अपने उसी रूप में चाय पीने की कोशिश करना चाहता था, उसका कहना था कि वह अपने पंजों में चाय का प्याला पकड़ सकता है, पर मिस्टर लीकी ने कहा, यह तो ठीक है, पर वह चाय नहीं पी पाएगा क्योंकि उसका मुंह ऊपर-नीचे के बजाय दाएं-बाएं खुलता है।

तो फिर मिस्टर डॉब्स को इंसान बनना पड़ा क्योंकि वह जो दूसरा रूप धरना चाहते थे, उसका भी मुंह नहीं था। भूत ने, जिसका मूड थोड़ा बिगड़ा हुआ था, फायर ब्रिगेड की गाड़ी बनने की फरमाइश की क्योंकि वह सोचता था कि उस रूप में चाय बड़ी जल्दी सुड़क सकता है। पर मिस्टर लीकी ने उसे पानी फेंकने वाला इंजन बनाने के बजायैं, सुलगते तेल पर झाग उगल कर आग बुझाने वाला इंजन बना दिया ताकि वह बाकी लोगों से ज्यादा चाय न पी जाए।

मैं ट्यूकान पक्षी बन गया। यह गिनीज के विज्ञापन आने से पहले की बात है, इसलिए मैंने बियर की फरमाइश नहीं की। शुरू में चोंच को सम्भालना जरा मुश्किल काम था, यहां तक कि पार्टी के खत्म होने पर जब मैंने अचानक अपना सर उठाया, तो अनचाहे ही मेरी पूंछ भी ऊपर उठ गई। पर अब उड़ना बड़ा आसान था। मैं उड़कर चाकलेट के पेड़ पर जा बैठा और अब उड़नेवाले फैलेंजर का रूप धर चुके झींगे को देखने लगा, वह चिड़ियाघर में नहर के उत्तर वाले घर में रहने वाले जैसा ही था, पर उससे जरा बड़ा।

मिस्टर लीकी ने उन्हें आसान काम देने के लिए हमारा शुक्रिया अदा करते हुए कहा, देखिए आदमी को जानवरों में बदलना एकदम स्वाभाविक काम है। सिर्फ कुछ लाख साल पहले

तक ही हमारे पुरखे जानवर थे, और मुझे उम्मीद है, अगर आदमी ठीक बर्ताव करना नहीं सीखेगा तो हमारी आने वाली पीढ़िया भी जानवर ही होंगी, बल्कि अधिक खतरनाक किस्म की। इंसानों को जानवरों में बदलने का जादू सबसे आसान और सबसे प्राचीन है। याद नहीं आपको कि कैसे सर्से ने यूलीसिब्स के नाविकों को सुअर बना दिया था? और आज भी पता नहीं कि कितने लोग हर साल "सम्मोहनी रजनी बसेरों"के पौधों* को अधिक मात्रा में खुराक बना लेने की वजह से सुअर बनते रहते हैं। विल्ट शायर में उनकी तादात शायद कुछ ज्यादा ही है, इसीलिए आप लोगों को वहां से सुअर का बेहतरीन गोश्त मिल जाता है।

'मैं एक लड़के को जानता हूं, जिसका नाम था अर्नेस्ट हिगिनबोथम, जो बड़ा लालची था। एक बार उसे विल्टशायर में चिलमार्क के जंगलों में, जहां से संसद भवन में लगे पत्थर आए हैं, पिकनिक के लिए बुलाया गया था। चाय कुत्ता गाड़ी में आ रही थी (यह मोटरगाड़ी के पहले के जमाने की बात है), और उसका एक पहिया निकल गया, तो उनको जरा भी चाय नहीं मिल पाई। उसने कहा कि उसे बड़ी भयंकर भूख लगी है, और उसने "सम्मोहनी रजनी बसेरों" में बस जरा सा मुंह मारा फिर क्या वह हो गया सुअर। ठीक से कहें तो धब्बों से पटा बूढा ग्लूसेस्टर बन गया।'

खैर, उसके बाप ने सोचा, उससे सर्कस में पढ़े-लिखे सुअर का तमाशा दिखवाया जाए। पर उसका एक चाचा था, जो यूनानी भाषा का प्रोफेसर था, उसके इस चाचा को पता था कि इसका सही इलाज मोली नाम की बूटी है, जिसका यूलिसेस ने इस्तेमाल किया था। पर उसे पता नहीं था, वह कैसी दिखती है। इसलिए अगले वसंत में वे अपने साथ पानी के एक जहाज में वनस्पति शास्त्र के एक प्रोफेसर और सुअर बन चुके अर्नेस्ट को लेकर यूनान गए। उनके साथ सिब्थोर्पे की किताब फ्लोरा ग्रेसिया भी थी। वे वहां किताब में बताया गया एक-एक पौधा ढूढ़-पहचान कर अर्नेस्ट को थोड़ा-थोड़ा तब तक खिलाते रहे, जब तक वह फिर लड़का नहीं बन गया। तब उन्हें मालूम हुआ कि मोली मिल गई और उन्होंने प्रोफेसर द्वारा पढ़ी जाने वाली पुरानी पत्रिका में उसके बारे में एक लेख भी छपवा डाला।'

*सिरकेई ल्यूटेटिआना, जादू-टोने के किस्सों कहानियों म. उल्लेखित जड़ी

'पर जब अर्नेस्ट सुअर नहीं रहा तब भी वे धब्बे उस पर सारी जिदंगी बने रहे। लालची वह अब भी था, पर अब सॉसेजेन को हाथ नहीं लगाता था।

'चलो, अब आप सब लोग बदल गए हैं, चलें, चाय पीते हैं।'

उसके बाद कमरे के दूसरे छोर की दीवार अचानक थरथराने लगी, उस पर फूलों की तस्वीरों वाला वॉल पेपर लगा था, जो असली फूल बन गये, और नीचे फर्श पर झुक आए। हम रेंगते-उड़ते, चलते या चलाते उन पर से होते एक शानदार गोल मेज तक पहुंचे, जिसके चारों ओर अजीबो-गरीब चीजें सजीं थीं। कुछ मेहमानों के लिए कुर्सियां थीं। मेरे लिए मेरे पंखों के रंग से मेल खाते हीरे-जवाहरातों से सजी एक डाली थी। तितली एक गज बड़े विशाल फूल पर बैठ गई, हाथी चार छोटे पीपों पर खड़ा हो गया, जैसे वे सरकस में करते हैं। कछुआ चाय के लिए लेट हो गया होता, अगर वह रोल्स रायस के पीछे लटक कर घिसटता हुआ नहीं पहुंचता। उसे उठाकर पियानो के स्टूल जैसी ऊंची-सपाट चीज पर बिठा दिया गया। हर एक के पास चाय का प्याला तो था पर चायदानियां नदारद थीं। जब हमने अपने सामने लगे बटनों को दबाया तो मेज में बने छेदों में से दूध और चाय का फव्वारा सा निकलकर हमारे कपों में गिरने लगा। मुझे लगा कि मैं एक पैर से डाल पर बैठकर दूसरे पांव से प्याला पकड़ तो सकता हूं, पर मेरी चोंच कप से चाय पीने के लिए ठीक नहीं है, तो मैंने सोचा कि सबसे अच्छा है कि अपनी चोंच पूरी खोल कर फव्वारा उसमें पड़ने दूं, और एक बूंद भी नीचे गिरे बिना वैसा

ही हुआ।

फायर इंजिन को चाय पीना बड़ा आसान लगा और फिर वह गजब के बुलबुले उड़ाने लगा, पर रॉल्स रायस के मामले में झमेला हो गया। वह चाय छोड़ना नहीं चाहती थी और मेज पर आ गई थी, पर किसी को समझ में नहीं आ रहा था कि चाय पेट्रोल टेंक में डालें या रेडिएटर में, मिस्टर लीकी भी नहीं बता पा रहे थे क्योंकि मशीनरी के बारे में उन्हें कुछ भी नहीं पता था। विलियम शेक्सपियर ने कहा :

'गिरगिट की खुराक है हवा, मिट्टी है केंचुए की; जादूई कार सुड़क सुड़क कर पियेगी पत्तिंया हिंदुस्तान की।'

और पेट्रोल टैंक में चाय डालने की सलाह दी। पर श्री डॉब्स ने कहा कि भले ही हेलमेट जो भी कहता हो, गिरगिट मक्खियां खाते हैं, पर उनका ख्याल है कि चाय सीलोन (श्रीलंका) से आती है और इससे उसका कार्बोरेटर चोक हो जाएगा। इसलिए उन लोगों ने उसका रेडिऐटर कैप खोलकर चाय उसमें उड़ेल दी। बाद में जब बातचीत करने के लिए उसे दुबारा मुंह मिल गया तो उसने बताया कि चाय बड़ी जायकेदार थी।

चाय के अलावा हमने बड़े स्वादिष्ट केक और सैंडविच भी लिए। मैंने पहले केवियर लिया जो आपको पता ही है स्टर्जन से बनता है। यह इतना बढ़िया होता है कि अगर इंग्लैड़ में कोई भी स्टर्जन पकड़े तो उसे राजा को पेश करना पड़ता है। इसलिए इसे शाही मच्छ कहते हैं, और अगर वे बहुत सारे हों तो उन्हें रायल कालेज ऑफ स्टर्जन कहते हैं, मिस्टर लीकी ने तो मुझे ऐसा ही बताया। उन्होंने बताया कि यह स्टर्जन आज सुबह कैस्पियन सागर में तैर रहा था, और उसे अब्दुल मक्कार को एक कम्युनिस्ट जिन्न ने दिया था, जो वहां रहता है, वहां से वह इसे जादुई कालीन पर यहां लाया।

मुझे केक आइसक्रीम और फल कितने बढ़िया लगे, तुम्हें नहीं बताऊंगा, नहीं तो तुम सोचेगे कि मैं भी कितना पेटू हूं। हां, क्यों नहीं ट्यूकान को भी वही सब कुछ पसंद है, जो और लोगों को है। चिड़ियाघर में रहने वाली ट्यूकान चाकलेट और अंगूर काफी पसंद करती हैं। बुलटेरियर को भैंसे का गोश्त और मज्जा भरी हड्डी मिली। रोल्स रायस को चाय के अलावा हवाई जहाज का बड़ा महंगा वाला पेट्रोल पिलाया गया। हाथी ने हम लोगों की ही तरह केक खाया। आश्चर्य की बात है, याक ने भी वैसा ही किया। कछुए को करमकल्ले जैसा एक खास पौधा खाने के लिए पेश किया गया, जिसे इतनी दूर गालापेगोस द्वीपों से यहां तक खास तौर पर उसके लिए मंगवाया था। वहां उसके जैसे और कछुए रहते हैं। तितली अपनी हाथी की सूंड जैसी मोटी सूंड से शहद पी रही थी। शैतान ने माचिस की छह पेटियां खाईं और एक चम्मच सयेन्नी काली मिर्च लगभग आधा लीटर धुंआ मारते गंधक के तेजाब* के साथ गटक गया।

चाय के बाद श्री डॉब्स ने कहा कि उन्हें सीजियम का परमाणु बना दिया जाए, क्योंकि वह सबसे मोटा परमाणु है, हांलाकिं इतना छोटा होता है कि दिखता नहीं है। पर यह परमाणु खासा बड़ा, यही चार फीट चौड़ा था। वह एक दम गोल मटोल था, जिसके बीच में कुछ टुकड़े इतनी तेजी से भिन्नाते फिर रहे थे कि कोई उन्हें ठीक से देख भी नहीं पा रहा था। उसमें से एक टुकड़े ने कभी-कभी बाहर निकलकर एक दो बार कमरे का चक्कर लगा लिया। श्री डॉब्स ने बताया कि यह तब होता है; जब परमाणु उत्तेजित हो जाते हैं, पर बाद में वह टुकड़ा उन्हें वापस मिल जाता था, और उसके मिलते वक्त बड़ी प्यारी सी चमक निकलती थी। हम लोग म्युजिकल चेयर खेलने लगे। याक, कछुआ, हाथी, कार और फायर इंजन कुर्सी बने, और मिस्टर लीकी ने सिर्फ कुर्सी पर बैठने का स्वांग कर पांच और कुर्सियां बना दीं। ऐसा लगता था कि वे बिना सहारे के हवा में बैठ रहे हैं, और गिरकर

गुम्मड़ पड़वा लेंगे, पर वह जैसे ही उठते थे, उनके नीचे एक कुर्सी होती थी।

आखिरी कुर्सी पर वे बैठ गए, और एक ऐसे पियानो पर, जो वहां मौजूद नहीं था, एक धुन बजाने लगे। खेल कुछ ज्यादा ही मजेदार था, क्योंकि पांचों कुर्सियां एक जगह टिकी रहने के बजाए खुद भी हमारे साथ म्यूजिकल चेयर खेलती घेरे में घूम रही थीं। ज्यादातर लोग जादुई कुर्सियों के आसपास ही मंडराते, उन पर बैठने की कोशिश करते रहे, पर जैसे ही धुन का बजना रुका, एक कुर्सी गायब हो गई, और राजकुमारी तथा बुलटेरियर, जो दोनों उस पर बैठने की ताक में थे, याक की ओर दौड़ पड़े। कुत्ता भी उस पर कूदा, पर वह आगे दूसरी ओर गिर पड़ा। पर जैसे-तैसे वह रोल्स कार पर बैठ गया और श्री डॉब्स जो सीजियम परमाणु बने थे, खेल से बाहर गए। अगले चक्कर में श्रीमान शेक्सपियर खड़े रह गए, और उसके अगले दौर में मेजर जरनल रह गए, जो जरा थुल-थुल थे। उसके बाद जमकर चिकचिक शुरू हो गई, क्योंकि लड़की जो लड़का बनी हुई थी, शिकायत करने लगी कि परी, आर्क एंजेल, तितली और ट्यूकान चिड़िया को उड़ने की इजाजत देकर चीटिंग की जा रही है। इसलिए हम जमीन पर चलने के लिए राजी हो गए, पर पंखों के सहारे फुदकने की इजाजत थी। लेकिन अगली बारी में मैं बाहर हो गया क्योंकि मेरी पूंछ परी के घाघरे में उलझ गई, जो काफी झालरदार था। इस तरह खेल चलता रहा, और आखिर में सिर्फ शैतान, कुत्ता और लड़का खेल में बचे, जिनके बीच हाथी और फायर इंजन पर कब्जा जमाने की होड़ लगी हुई थी।

तभी अचानक भड़ से दरवाजा खुला और पोम्पेई ड्रैगन मस्ती में किलकारियां मारता, आग उगलता भाग कर घुस आया। बेशक, वह सिर्फ एक नन्हा-मुन्ना ड्रेगन था, पर मैं अपने पर नहीं जलाना चाहता था, इसलिए हवा में उड़ गया। बाकी सारे लोग भी

इधर-उधर तितर-बितर हो गए। सिवाय शैतान के, जो कि मेरा ख्याल है, ऐसी चीजों का आदी था, और फायर इंजन, जिसने उस पर ढेर सारे बुलबुलों के झाग की पिचकारी मार दी। पोम्पेई ने जबरदस्त छींक मारी, तो चारों ओर चिनगारियां उड़ने लगीं। उनमें से एक ने परी की पोशाक सुलगा दी, पर परी के जख्मी होने से पहले ही फायर इंजन ने उसे बुझा दिया। अब्दुल मक्कार पोम्पेई पर झपटा, पर वह हाथी की टांगों में उलझकर फंस गया। पता नहीं क्या हो जाता अगर मिस्टर लीकी चिमटा बन कर फर्श पर नहीं कूदते, और उसे दुम से दबोच नहीं लिया होता। मैं सोचने लगा कि वे कहीं रग्बी के खिलाड़ी तो नहीं है, क्योंकि वह शानदार पकड़ थी।

लोगों ने पोम्पेई को फटाफट जंजीरों से जकड़ दिया जो काफी शर्मिंदा लग रहा था। मिस्टर लीकी जरा उखड़े हुए थे। चिमटे से इंसान बनते ही अब्दुल मक्कार को फटकारते हुए वे बोले, ऐ, जिन्नों की बिरादरी के कलंक, 'मैंने तुम्हें हुक्म नहीं दिया था कि इस आग उगलू को रसोई के बॉयलर में जकड़कर रखो, जिससे मेरा नहाने का पानी गरम हो सके?'

आपने ऐसा ही हुक्म दिया, और हे जादूगरों के सरताज, मैंने आपके हुक्म के मुताबिक वैसा ही किया, पर मुझे खबर नहीं है कि किस टुच्चे मांत्रिक ने इसे उस कैद से आजाद किया है।

खैर, अगले ही क्षण उसे पता भी चल गया, जब एक नल ठीक करने वाला प्लम्बर कमरे में घुसा। मुझे वह प्लंबर इसलिए लगा कि उसने एक बड़े से पाने जैसी चीज थाम रखी थी। उसने कहा, 'आप लोगों ने मुझे क्या समझ लिया है? मैं कोई सैंट जॉर्ज नहीं हूं। मैं यहां नल ठीक करने आया था, किसी नकचढ़े ड्रैगन को मारने के लिए नहीं।' तभी उसकी नजर पार्टी के मेहमानों पर पड़ी, तो उसकी आंखें फटी की फटी और मुंह खुला का खुला रह गया।

'बैठ जाओ', मिस्टर लीकी ने कहा, 'और थोड़ी चाय लो हमारे साथ। मुझे मालूम है कि तुम सेंट जॉर्ज नहीं हो, और मेरे ड्रैगन को मारने का इरादा भी नहीं रखते हो। खैर, जो भी हो, सेंट सैटर्निनस, जो सीसे के विशेषज्ञ हैं प्लंबरों के संरक्षक भी हैं।' इसी दौरान उन्होंने अपनी जादुई छड़ी प्लम्बर की ओर घुमाई तो वह अकबकाना छोड़, खीसे निपोरने लगा। 'धन्यवाद श्रीमान, चाय तो पीकर आया हूं', उसने कहा।

'फिर भी, हे अब्दुल मक्कार, इसका पेशा प्यास का नाश करता है। और फिर जैसा कि दर्ज है, बादशाह सुलेमान, जिन्हें अमनो चैन नसीब हो, अपने मेहमानों को सुराही पेश करते थे। इसलिए तीखी बीयर भरी सुराही लाओ और पाइपों के इस रखवाले को पेश करो।

प्लंबर सुराही की तीखी बीयर गटकर अपने काम पर वापस चला गया। मेरा ख्याल है कि मिस्टर लीकी के सारे जादू-टोने के बावजूद, उसके हिसाब से हमारी पार्टी जरा बेढंगी थी। और यहां से जाने का उसे कोई अफसोस नहीं था। कुछ लोग ऐसे ही होते हैं।

इसके बाद हमने छुआ-छुअव्वल और दूसरे खेल खेले पर उनकी बातें सुनाकर अब आपको और बोर नहीं करूंगा, आप यह सब सुनकर अब तक उकता गए होंगे। हां, इतना बता दूं कि जब शैतान ने मुझे पकड़ा तो मेरा एक पंख नुच गया, और एक खास मंत्र से कछुए की रफ्तार बढ़ानी पड़ी। न उसके पहले, और न उसके बाद मैंने कछुए को दौड़ते नहीं देखा था। पर यह तो दौड़ने में माहिर था, और मोड़ पर रेसिंग कार चलाने वाले की तरह रपटते हुए दौड़ रहा था।

इसके बाद शैतान ने कहा कि एक स्कॉटी प्रेस्बिटेरियन पादरी को नाच में जाने के लिए ललचाने के वास्ते उसे अब जाना है, उसका कहना था कि यह बड़ा मुश्किल काम है, और वह इसे

करना भी नहीं चाहता है, पर उसे हुक्म तो बजाना ही पड़ेगा। फिर और लोगों ने कहा, उन्हें भी जाना है।

'अरे यह तो बड़े अफसोस की बात है', मिस्टर लीकी ने कहा, 'पर मुझे उम्मीद है, आपको जरूर आनंद आया होगा यहां। अब आप लोग अपने असली रूप में आना चाहेंगे न। आजकल लंदन वाले कछुए और टयूकान को तो चिड़ियाघर में कैद कर देते हैं और फायर इंजन से काफी काम करवाते हैं। पर अगर कोई चाहे तो मैं उसका नाम बदल सकता हूं।'

'नाम में क्या रखा है?' शेक्सपियर ने बीच में टोका। 'गुलाब को चाहे जिस नाम से पुकारो, खुशबू तो वही रहेगी' 'नहीं ऐसा कतई नहीं है', मिस्टर लीकी ने उसे काटते हुए कहा, 'कतई नहीं रहेगी खुशबू, अगर उसका नाम घटिया बदबू फोड़ा या मछल छिप्पी फूल होता। जितना तुम मानते हो, नाम का महत्व उससे ज्यादा है। एक आदमी के बारे में मैं जानता हूं, उसका नाम था फिप्स, जो उत्तरी लंदन में कहीं लुहार का काम करता था। अपने धंधे से बड़ा संतुष्ट था वह, रात को डिनर के बाद आराम से बूट खोल कर बैठक में बैठ सब्र की प्रैक्टिस किया करता था।'

पर उसकी बीबी ऐसा नहीं करने देती थी। उसका कहना था कि बूट बाहर बरामदे में उतारो, और सब्र बेवकूफी भरा खेल है, यह सच भी है, पर और भी खेल उतने ही बेवकूफी भरे हैं। तो उसने कहा, 'चलो तलाक ले लेते हैं', पर वह उस पर भी राजी नहीं थी।

'इस पर श्री फिप्स ने एक योजना बनाई। पहले तो वह लंदन में सबसे ज्यादा पंजेदार हथौड़ियां, और खरगोश जालियां बेंचकर काफी धनवान बन गया। फिर उसने अग्ली (भौड़ी) में एक मकान खरीदा, जो कि इपिंग से क्रेम्ब्रिज के रास्ते में बढ़िया इलाका है। फिर उसने चर्चों, अस्पतालों, स्कूलों, उदारतावादियों, और समाजसेवियों को इतना धन दान किया कि उन्होंने उसे लार्ड बना

दिया। जब उन लोगों ने उससे पूछा कि उसे कहां का लार्ड पुकारें तो उसने कहा लार्ड अग्ली। राज तो हंस-हंस कर बौरा सा गया, पर फिप्स अपनी बात मनवाकर ही माना।'

'इसके चलते उसकी बीबी का नाम पड़ा लेडी अग्ली, जो उसको कतई पसंद नहीं था। इस पर उसने फिप्स को तलाक दे कर लवली नाम के आदमी से शादी कर ली। मेरा खयाल है कि इसके बाद वह राजी-खुशी रही होगी। इसके बाद लार्ड अग्ली ने अपना बाकी का सारा धन भी दान कर दिया, सिवाय अपनी लुहार की दुकान के। अब वह फिर शाम को डिनर के बाद बैठक में बूट उतार कर सब्र का खेल खेलता है। अगर वह कहीं लॉर्ड गोल्डर्स ग्रीन, या लार्ड मोरेटॉन-इन-द-मार्श अथवा वैसा ही कुछ और बन गया होता तो उसका इतिहास कुछ और होता।

मिस्टर लीकी से सिर्फ दो नाम बदलने की गुजारिश की गई। एक लड़की विक्टोरिया से आइरीन बन गई, जिसका मतलब होता है शांति और आगस्टस नाम का लड़का टॉम बन गया।

इसके बाद हम सब एक कतार में खड़े हो गए, और मिस्टर लीकी ने अब्दुल मक्कार को ग्रुप फोटो खींचने में लगा दिया, पर वह बहुत अच्छा नहीं आया क्योंकि तितली ने बीच में पंख फड़फड़ा दिए और लड़का पोम्पेई पर हंसने लगा, जिसने पंप से पेट्रोल पीने के चक्कर में उसमें आग लगा दी थी। ग्रुप फोटो के बाद हम सबने अपनी आंखें बंद कर लीं, अथवा अपनी बत्तियां बुझा दीं और सिवाय परमाणु के, जिससे जेनान, उसका जो भी मतलब हो, जैसा दिखने के लिए कहा गया। मुझे पता नहीं कि जब हमारी आंखें मुर्दी थीं तो मिस्टर लीकी ने क्या किया, पर जब आंखें खुलीं तो देखा कि हम सब साधारण आदमी बन चुके थे। हम में से कुछ लोग तो जादुई कालीन से घर पहुंचे, कुछ लोग मेट्रो से, और बाकी बस से। मैं पैदल ही गया और जब घर पहुंचा तो एक उपहार मेरी प्रतीक्षा कर रहा था, जिसमें एक

पुस्तक पुच्छल तारों से संबंधित थी, और एक अन्य पुस्तक पक्षियों के बारे में थीं, जिसमें चार तरह के ट्यूकानों की रंगीन तस्वीरें थीं, उन्हीं में से एक तरह का ट्यूकान मैं बना था। उसके बाद से मिस्टर लीकी को मैंने अब तक नहीं देखा, अगर वह कहीं मिले तो आपको भी बताऊंगा। पर मेरा ख्याल है, मैंने रैफेल को पिछले सप्ताह देखा था। वह एक सामान्य मजदूर की पोशाक में था और सड़क पर गिर पड़ी एक बुढ़िया की मदद कर रहा था, जिसकी एड़ी में मोच आ गई थी। इसलिए उम्मीद है, मिस्टर लीकी भी फिर जरूर मिलेंगे।

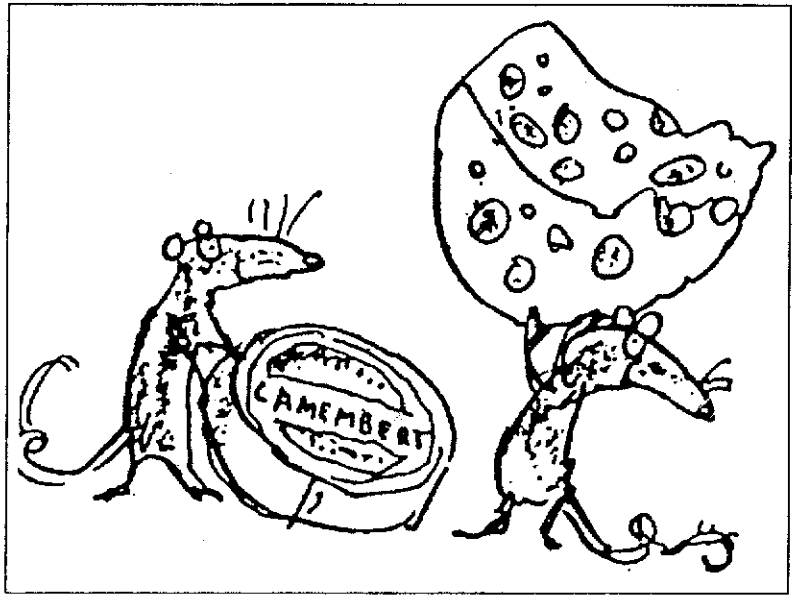

चूहे

चूहे

एक वक्त की बात है स्मिथ नाम का एक आदमी था। वह सब्जी बेचने वाला कुंजड़ा था और क्लैपहैम में रहता था। उसके चार लड़के थे। सबसे बड़े लड़के का नाम राजा के नाम पर जार्ज था और वसीयत के मुताबिक पिता की दुकान उसे मिलनी थी। इसलिए स्कूल में वह वनस्पति विज्ञान की विशेष कक्षा में पढ़ने लगा, और करमकल्ले की कोई एक सौ पचहत्तर, और पुदीने की पांच सौ किस्मों के बारे में जान गया। फिर वह प्राणीशास्त्र की कक्षा में गया और करमकल्ले में पनपने वाले सत्तर किस्म के कीड़ों के बारे में जान गया। साथ ही यह भी सीखा की कैसे हरे कीड़ों पर साबुन का पानी छिड़कने पर वे टप से टपक जाते हैं और कैसे बिना खोल वाले कीड़ों को तंबाकू के पानी से और बड़े भूरे कीड़ों को नमक के पानी से मार गिराया जाता है। तो जब वह बड़ा हुआ तो लंदन का सबसे अच्छा कुंजड़ा बना और किसी को उसके करमकल्ले में एक भी कीड़ा नहीं मिलता था।

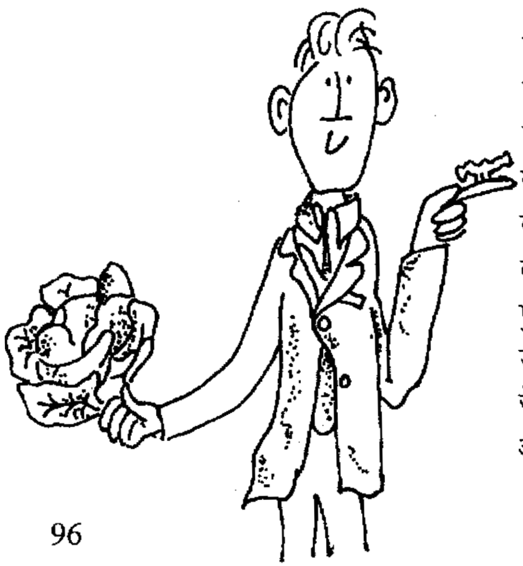

पर चूंकि मिस्टर स्मिथ की एक ही दुकान थी इसलिए उनके बाकी तीन लड़कों को अपनी तकदीर खुद ही बनानी पड़ी। दूसरे लड़के को सब जिम पुकारते तो थे पर उसका पूरा नाम था जेम्स। उसने स्कूल में अंग्रेजी के निबंध के

सारे इनाम जीते। वह स्कूल की फुटबाल टीम का कप्तान था और हाफ-बैक पर खेलता था। वह बड़ा ही चालू था और सारे मास्टरों पर तरह-तरह की शरारतें आजमाया करता था। एक दिन उसने चाक स्टिक के सिरे में माचिस की तीली का मसाले वाला सिरा घुसेड़ दिया। वह कोई सुरक्षित किस्म की माचिस नहीं, बल्कि पुरानी नीली-सफेद किस्म की माचिस थी, जो किसी भी चीज से रगड़ खाने पर जल उठती थी। जब मास्टर जी ने ब्लैक बोर्ड पर लिखना शुरू किया तो तीली सुलग उठी, फिर तो अगले पांच मिनट तक किसी ने कोई काम नहीं किया। फिर किसी दिन उसने स्याही की दवातों में मेथिलेटेड स्प्रिट डाल दी तो स्याही निबों में टिकती ही नहीं थी। मास्टर जी को सारी दवातों में वापस स्याही डलवाने में बाकी आधा घंटा लग गया इसलिए उस दिन किसी को फ्रेंच नहीं पढ़नी पड़ी। यहां बता देना जरूरी है कि उसे फ्रेंच नापसंद थी।

पर वह ताले के छेद में पुट्टी घुसेड़ देने या मास्टर जी के डेस्क में मरा चूहा रख देने जैसी हल्की-फुल्की खुराफातें नहीं करता था।

तीसरे लड़के का नाम चार्ल्स था। वह गणित और इतिहास में काफी अच्छा था, और उसे क्रिकेट टीम में बायें हाथ के धीमे गेंदबाज के तौर पर चुन लिया गया, पर अगर किसी विषय में वह सबसे तेज था, तो वह था रसायन विज्ञान। हमारे पूरे स्कूल में (और जहां

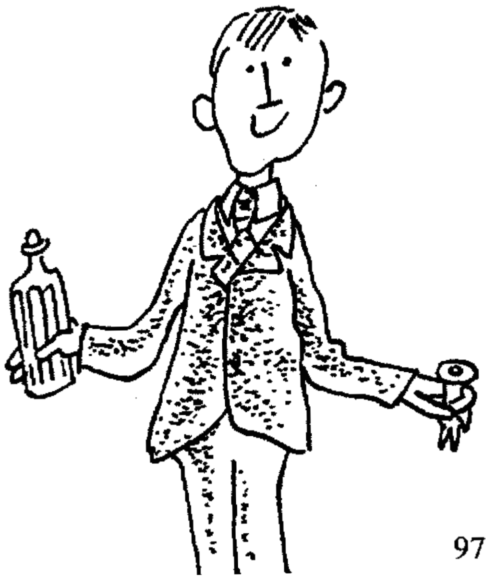

तक मुझे याद पड़ता है, किसी भी अन्य स्कूल में) वही एक विद्यार्थी था, जिसने पेराडिमिथाइल अमीनो बेन्जल्डिहाइड बनाया था, और ऐरैबिटोल भी (जिसे बनाना बड़ा मुश्किल काम था और उसका खरगोश से कुछ भी लेना-देना नहीं है)। वह चाहता तो सबसे सड़ी गंध बना डालता, क्योंकि उसे बनाना आता था। लेकिन चूंकि वह भला लड़का था इसलिए उसने ऐसा नहीं किया। साथ ही अगर वह ऐसा करता तो शायद उसे रसायन शास्त्र पढ़ने से रोक दिया जाता, और वह जिन्दगी भर रसायन शास्त्र के क्षेत्र में काम करना चाहता था।

चौथा लड़का था जैक। वह किसी भी विषय में होशियार नहीं था, न ही किसी खेल में ठीक था। वह कभी फुटबाल में सीधी किक नहीं मार पाया और क्रिकेट में फील्डिंग करने के दौरान सो जाया करता था। अगर वह किसी चीज में माहिर था तो वह था वायरलेस। उसने घर पर ही सब कुछ बना लिया था सिवाय वाल्वों के, जब वह उन्हें बनाना सीख रहा था, तभी से यह किस्सा शुरू होता है। उनकी एक मौसेरी दादी थी मटिल्डा, जो इतनी बूढ़ी थी कि उसे वह जमाना भी अच्छी तरह याद था, जब लंदन से डोवर के बीच रेल लाइन डाली जा रही थी। वह चल फिर भी नहीं सकती थी और उसे हमेशा बिस्तर में ही पड़े रहना पड़ता था। जैक ने उसके लिए इयर फोन बना दिए, तो उसने कहा कि इतनी खुश तो वह विक्टोरिया के जमाने के बाद से आज तक कभी नहीं हुई। वह बिजली के दूसरे उपकरणों का भी अच्छा जानकार था। उसने चकमा

देने वाली एक खास ढंग की मशीन बनाई, जिसके जरिए उसके पिता के घर में बिना पैसा भरे ही बिजली की रोशनी आ जाती थी, और बिजली के मीटर में एक सप्ताह तक जरा सी भी रीडिंग नहीं आयी। फिर जब उसके पिता को पता चला कि क्या हो रहा है, तो उन्होंने डांटा, 'हमें ऐसा नहीं करना चाहिए', यह बिजली कंपनी से बिजली की चोरी है, 'मैं नहीं सोचता कि यह चोरी है', जैक ने जवाब देते हुए कहा, 'कंपनी कोई आदमी तो है नहीं, और फिर बिजली इधर से हमारे बल्ब में घुस कर, उधर मेन लाइन से निकल जाती है, हम बिजली रख तो नहीं रहे हैं, सिर्फ थोड़ी देर के लिए उधार ले रहे हैं।' पर उसके पिता ने उसे वह हटाने के लिए मजबूर कर दिया, और बिजली कंपनी को एक हफ्ते की बिजली का पूरा पैसा चुकाया, क्योंकि वह एक ईमानदार इंसान थे।

मिस्टर स्मिथ की ल्युसीले नाम की एक लड़की भी थी, जिसे लोग पॅगी पुकारते थे। चूकिं इस किस्से से उसका कोई खास लेना देना नहीं है, इसलिए उसके बारे में अंत तक इससे ज्यादा कुछ नहीं बताऊंगा कि जब वह छोटी सी थी उसके सामने के चार दांत बाहर की ओर बढ़ आये थे, पर बाद में उनको किसी तरह भीतर कर ही दिया गया।

उस दौरान लंदन के बंदरगाहों पर चूहों का जबर्दस्त प्लेग फैला हुआ था। ये जरा खास खूंखार किस्म के चूहे थे, जिनके पुरखे, हांगकांग से आने

वाली चाय, रेशम, अदरक और चाय के स्टीमरों पर सवार होकर यहां पहुंचे थे। ये चूहे लंदन में जहाजों से आने वाला सब तरह का खाना खाते थे, क्योंकि यहां इंग्लैंड में हम, सब लोगों का पेट भरने लायक पूरा अनाज नहीं उगा पाते हैं। चूहे कनाडा का गेहूं, हॉलैंड का पनीर, न्यूजीलैंड का मटन और अर्जेंटीना का भैंसे का गोश्त खाते थे। वे अपना बिल गर्माने के लिए ईरानी कालीनों के टुकड़े बीच से कुतर कर निकालते थे और चीनी रेशमी कोटों से अपने पांव पोंछते थे।

लंदन के सारे बंदरगाहों का बॉस, जो बंदरगाह प्राधिकरण, लंदन का अध्यक्ष कहलाता था, बहुत खुरार्ट आदमी था। उसका टावर हिल के पास बकिंघम पेलेस जितना बड़ा दफ्तर था।उसे चूहों से बड़ी नाराजगी थी, जो होनी ही थी, क्योंकि जहाजों से माल उतरने से लेकर ट्रेनों और ट्रकों में लदने तक उसकी जवाबदारी होती थी। इसलिए चूहे जो चर जाते थे उसका मुआवजा उसे भरना पड़ता था। उसने लंदन भर के चूहे पकड़ने में सबसे माहिर लोगों को बुलवाया। पर वे कुछ सौ चूहे ही पकड़ पाए, क्योंकि वे जरा चंट टाइप के चूहे थे। उनका एक राजा था, जो एक बड़े गहरे बिल में रहता था, और दूसरे चूहे उसके लिए खास किस्म का खाना लाते थे। वे उसके लिए स्विटजरलेण्ड से आई चाकलेट, फ्रांस से आयी टर्की, अल्जीरिया के खजूर तथा और भी बहुत कुछ लाकर पेश करते। और वह उन्हें बताता कि कब, क्या, और कैसे करना है। अगर कहीं कोई चूहा चूहादानी

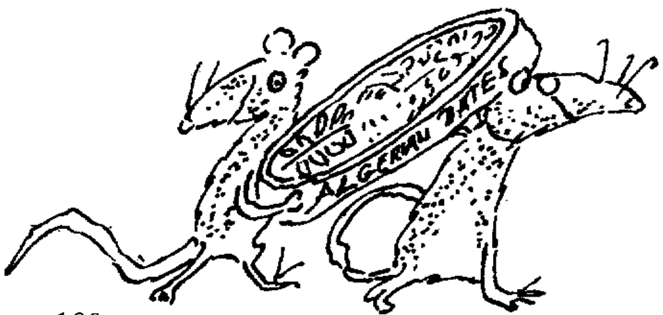

में फंस जाता तो वह खतरे से दूसरे चूहों को चेताने के लिए खास संदेशवाहक भेजता। उसके पास दस हजार नौजवान और काफी बहादुर चूहों की सेना थी जो उनके विरुद्ध भेज गए किसी भी जानवर से लड़ती थी। एक टेरियर कुत्ता एक-दो चूहों को मार गिरा सकता है, पर अगर सौ चूहे उस पर एक साथ झपटें तो, दो-चार चूहों को तो वह भले ही मार गिराए, पर बाकी अंत में उसे ही मार डालेंगे। पैने मजबूत दांत वाले चूहों को इंजीनियर की ट्रेनिंग दी जाती थी, उनसे चूहेदानी के तारों को कटवा कर उनमें कैद चूहों को छुड़वाया जाता था।

इस तरह एक महीने में इन चूहों ने एक सौ अस्सी बिल्लियां, उनचास कुत्ते और पंचानबे फेरेट मार डाले। और पता नहीं कितनों को काटपीट कर इतनी बुरी तरह चोटिल कर दिया कि वे चूहों को देखना तो दूर की बात रही, उनकी गंध आते ही दुम दबाकर भाग लेते। उन्होंने छह सौ अट्ठारह चूहेदानियों में कैद सात सौ बयालीस चूहे भी छुड़ा लिए। इस तरह चूहा पकड़ने वालों को अपने सबसे बढ़िया कुत्तों, फेरेटों और चूहेदानियों से हाथ धोना पड़ा और उन्होंने निराश होकर अपना धंधा ही छोड़ दिया। बंदरगाह के कर्मचारी चूहों को मारने वाला तरह-तरह का जहर लाने के लिए केमिस्टों की दुकानों पर भेजे गए जिनको खाने की चीजों पर छिड़क कर उन्हें फंसाने के लिए चारा डाला गया। पर राजा चूहे ने हुक्म जारी कर दिया कि जब तक कोई

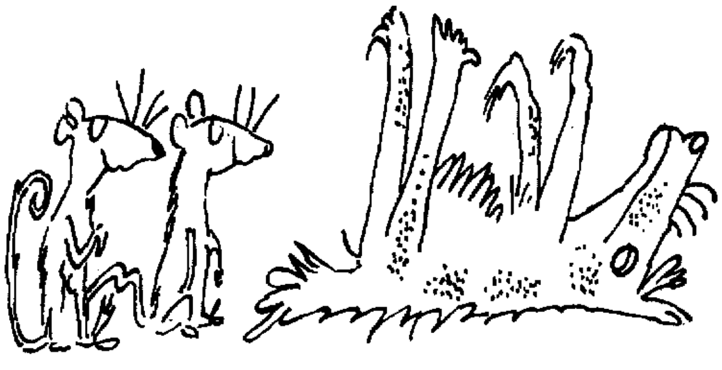

चीज सीधे बक्से, पीपे, या पार्सल से न निकले, उसे कोई न खाए। सिर्फ कुछ उदंड चूहे जहर खाकर मरे, तो दूसरों ने कहा, 'अच्छा सबक मिला।' फिर तो जहर का भी कुत्तों, फेरेटों और चूहेदानी की तरह कोई मतलब नहीं था।

इसलिए लंदन बंदरगाह प्राधिकरण के अध्यक्ष ने अपने शानदार बोर्ड कक्ष में प्राधिकरण की बैठक बुलाई और कहा, 'क्या आप में से कोई सुझा सकता है कि चूहों से कैसे निबटा जाए?' तो उपाध्यक्ष ने सुझाव दिया कि अखबार में इश्तहार छपवाया जाए। अगले सप्ताह सारे समाचार पत्रों में इश्तहार छपा। वह पूरे पन्ने पर बड़े-बड़े टाइप में छपा था, सो सारे इंग्लैण्ड में सबने पढ़ा। स्मिथ परिवार के सारे सदस्यों ने इश्तहार देखा, सिवाय मौसेरी दादी मटिन्डा के, क्योंकि वह सिर्फ रेडियो पर समाचार सुनती थी।

इस इश्तहार के चलते अखबारों द्वारा आयोजित की जा रही अन्य सारी प्रतियोगिताएं बचकानी लगने लगीं, क्योंकि लंदन बंदरगाह प्राधिकरण के अध्यक्ष ने उस व्यक्ति को दस लाख पौंड नगद और अपनी इकलौती लड़की का हाथ देने का प्रस्ताव रखा था, जो बंदरगाह को चूहों से मुक्ति दिला देगा। (अगर विजेता पहले से ही शादी-शुदा हुआ तो, जाहिर है कि उसे लड़की से शादी करने की इजाजत नहीं मिलती, पर बतौर सांत्वना पुरस्कार उसे उसकी पत्नी के लिए हीरों का ब्रेसलेट मिलता।) इश्तहार में दस लाख पौंड की तस्वीर भी छपी थी, और वे असली सोने की मुद्राएं थीं, कागजी नोट नहीं। और उसकी पुत्री का फोटो भी छपा था, जो बहुत खूबसूरत थी, घुंघराले सुनहरे बाल, नीली आंखें। इतना ही नहीं, वह वायलिन बजा लेती थी और उसने खाना बनाने, तैराकी और फिगर स्केटिंग में इनाम जीत रखे थे। बस एक ही खटका था कि, प्रतियोगी को चूहों को मारने के लिए अपना साजो-समान खुद ही लाना होगा, इसलिए प्रतियोगिता में भाग लेने में काफी रुपयों का खर्च था।

फिर भी इसके लिए हजारों हजार लोग आगे आए। अगले दिन सारी चिट्ठियां अध्यक्ष के दफ्तर पहुंचाने के लिए उन्हें तीन और पोस्टमैन लगाने पड़े। और फोन की घंटियां इतने लोगों ने घनघनाईं की तार ही पिघल गए। फिर महीनों तक भांति-भांति के लोगों ने अपनी तकदीर आजमाई। उनमें रसायन शास्त्री, जादूगर, जीवाणु विज्ञानी, तांत्रिक, ओझा, प्राणी विज्ञान, शेरमार शिकारी सब थे, पर कोई भी इने-गिने चूहों से ज्यादा नहीं मार पाया। और भी लफड़ा यह था कि ये लोग जहाजों से माल की उतराई में बाधा डाल रहे थे ढेर सारी मक्की को सीधे लंदन से भेजने के बजाय लिवर पूल, कैड्रिफ हल, और साउथएम्पटन के रास्ते भेजना पड़ा।

किस्मत आजमाने की कोशिश करने वाले लोगों में जिम, चार्ल्स और जैक स्मिथ भी थे। जिम ने सोचा कि वह बड़ी साधारण सी चूहेदानी बनाकर चूहों को बुद्धू बना सकेगा, ठीक वैसे ही जैसे वह स्कूल में मास्टरों को बनाया करता था। उसे पता था कि बंदरगाह में हर तरह की पुरानी टीन मौजूद है, इसलिए उसने पुरानी टिन से बना एक खास किस्म का पिंजड़ा डिजाइन किया। उसने सोचा कि चूहों को जब इसके अंदर मौजूद चारे की गंध आएगी तो वे इसके ऊपर कूद पड़ेंगे। पर ऊपर तो झटके से खुल जाने वाला दरवाजा था, इसलिए चूहे अंदर गिर जाएंगे, और फिर निकल नहीं सकेगें। उसने अपना सारा फालतू वक्त इन चूहेदानियों को बनाने में लगा दिया, और अपने दोस्तों की भी मदद ली। उसने अपने पिता से दस पौंड उधार लिए और एक बेकार ठठेरे बिल जॉनसन को भी और चूहेदानियां बनाने में लगा दिया। इस तरह आखिर में उसके पास एक हजार तीन सौ चौरानबे पिंजड़े आ गए लेकिन उसमें से सत्रह काफी खराब थे, इसलिए वह उनको अपने साथ नहीं ले गया।

अपने पिता की बैलगाड़ी में सारी चूहेदानियां लादकर वह टॉवर हिल पर गया और उपाध्यक्ष से मिला, जो एक ड्यूक था, और चूहा पकड़ने के अभियान की देखरेख उसी के जिम्मे थी। उपाध्यक्ष ने कहा कि सारे 'बंदरगाहों (डॉक्स) के लिए इतनी चूहेदानियां काफी नहीं हैं, पर एक पर इनको लगाकर देखते हैं।' इसलिए उनको वेस्ट इंडिया डॉक पर लगाकर देखा गया, जहां जमायका और उसके आसपास के द्वीपों से शक्कर, रम, शीरा और केले लाने वाले जहाज आते थे। मैं नहीं सोचता कि जगह का चुनाव बहुत ठीक था, क्योंकि वहां के चूहे कुछ ज्यादा ही चुस्त और फुरतीले थे। वो इसलिए कि वहां वे शीरों के छोटे-बड़े पीपों, टंकियों और सुअरबाड़ों में हमेशा लुढ़कते-पुढ़कते रहते। सुस्त चूहे उनमें फंस जाते और उनका किस्सा तमाम हो जाता। सिर्फ चुस्त चूहें ही उनसे निकल पाते। इस तरह वहां के सारे चूहे फुर्तीले और दीवारों पर चढ़ने में उस्ताद थे।

जिम की आधी चूहेदानियों में पनीर और सुअर के मसालेदार नमकीन सूखे गोश्त का चारा रखा गया। पहली ही रात उन्होंने नौ सौ अस्सी चूहे पकड़ लिए। जिम की खुशी का ठिकाना ही नहीं था और उसने सोचा, वह तो इनाम जीत ही जाएगा। पर अगली रात उन्होंने तीन ही चूहे पकड़े और तीसरी रात सिर्फ दो। राजा चूहे ने ऐलान करवा दिया कि टीन टप्परों से दूर रहो और फिर सिर्फ मूर्ख और उदंड चूहे ही फंसे। चौथी रात उन लोगों ने टीन की चूहेदानियां विक्टोरिया बंदरगाह पर पहुंचा दीं पर वहां भी सिर्फ चार चूहे चक्कर में आए। चेतावनी चारों ओर फैल चुकी थी। जिम मुंह लटकाए घर लौट आया। उसने दस पौंड और बहुत सा वक्त बरबाद कर डाला था, और स्कूल में लड़के उसे 'टप्परी चूहा' कहकर चिढ़ाते थे।

चार्ल्स की योजना कुछ हटकर थी। उसने एक खास किस्म का जहर इजाद किया जिसमें कोई स्वाद या गंध नहीं थी। मैं

तुम्हें यह नहीं बताऊंगा कि वह क्या था, क्योंकि कोई हत्यारा इस किस्से को पढ़ सकता है, और पता नहीं किस-किस का खून करे। उसने ऐसा जहर बनाया। साथ ही उसने राकर्फोट पनीर की गंध देने वाला रसायन भी बनाया, जो कि फ्रांस में बनने वाला काफी पनीरी किस्म का पनीर होता है। इस रसायन का नाम है मिथाइल हेप्टाडेसिल कीटोन, मेरा ख्याल है इसकी बड़ी मधुर गंध होती है। कुछ लोग इसे पसंद नहीं करते हैं, पर चूहों को यह पसंद है। उसने अपने पिता से बीस पौंड उधार लिए और पनीर के सौ घटिया बदबूदार टुकड़े ले आया। फिर उसने हर टुकड़े के सौ छोटे-छोटे टुकड़े काटे। पहले उसने उनको जहर से, फिर राकर्फोर्ट पनीर की खुशबू वाले रसायन में तर किया और उनको दस हजार गत्ते के डब्बों में डाल दिया। उसने सोचा कि ऐसा करने पर चूहे यह नहीं सोचेंगे कि वो कोई जहरीला चारा है, जिसे डिब्बों में बंद करने के बजाय यूं ही बिखेर दिया गया है। लेकिन डिब्बे चूंकि गत्ते के बने थे, इसलिए चूहे उनमें आसानी से मुंह मार सकते थे।

एक दिन दो आदमी हाथ-ठेले में दस हजार पनीर के डिब्बे लादकर सारे बंदरगाहों पर दिन भर बिखेरते रहे। और चार्ल्स उनके पीछे-पीछे उन पर पनीर की गंध वाला रसायन पिचकारी से छिड़कता रहा। उस शाम जब सूरज डूबा तो सारे पूर्वी लंदन में पनीर की गंध भभक रही थी और रात को जब चूहे निकले तो आपस में बतिया रहे थे कि 'यह कोई खास स्वादिष्ट पनीर होना चाहिए, एक छोटे से बक्से की खुशबू ऐसी है, जैसे पनीर की कोई बड़ी पेटी हो।' सो बहुत से चूहे उसे चटकर गए। वे थोड़ी सी पनीर अपने राजा चूहे के लिए भी ले आए। पर उसके सौभाग्य से उसने थोड़ी ही देर पहले अखरोट तथा भुनी सॉलमोन मछली का नाश्ता किया था और उसे भूख नहीं थी। जहर के असर में कुछ वक्त लगा, पर सुबह के तीन बजते-बजते चूहे मरने लगे। राजा चूहे को तुरंत शुबहा हुआ और उसने अपनी

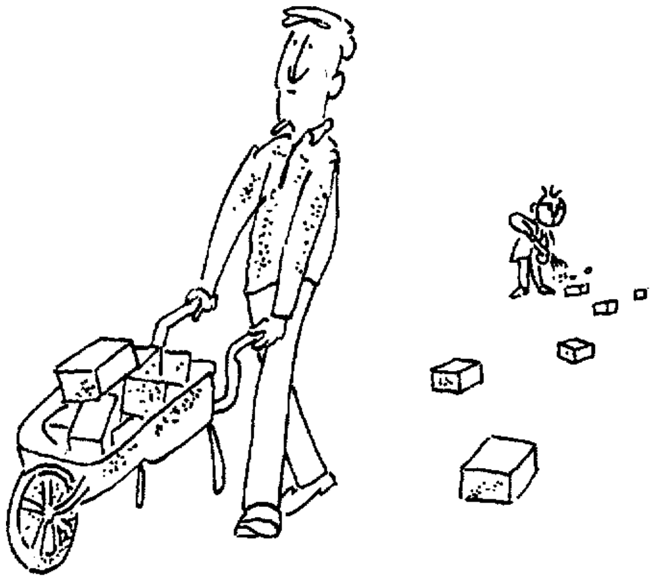

प्रजा को चेतावनी देने संदेशवाहक भेज दिए।

वहां एक दुष्ट चूहा भी था, जिसे अपने बच्चे खा जाने के जुर्म में मृत्युदंड सुनाया गया था। राजा ने उसे अपने लिए आया थोड़ा-सा पनीर जबरदस्ती खिलाया। जब वह मर गया तो राजा चूहे को यकीन हो गया कि पनीर में जहर मिला हुआ है, तो उसने और संदेशवाहक भेज दिए। अगली सुबह उन लोगों ने चार हजार पांच सौ चौदह मुर्दा चूहे बटोरे, और उससे भी अधिक बिलों में मरे पड़े थे, और बहुत से बीमार पड़े हुए थे। अध्यक्ष इतना खुश हुआ कि उसने चार्ल्स को और पनीर खरीदने के लिए पैसे दे दिए। पर दो दिन के बाद जब लोगों ने पनीर बिखेरा तो आठ हजार में से बस दो बक्से खुले मिले। उन्हें पता चल गया कि चूहे ज्यादा चालाक हैं। निश्चित ही चार्ल्स को बड़ा सदमा पहुंचा। उसे अपने सफल होने का इतना यकीन था कि उसने अध्यक्ष की लड़की के साथ शादी के लिए अंगूठी का आर्डर दे दिया

था, और केन्टबरी के मुख्य पादरी को अपनी शादी कराने के लिए लिख भी दिया था। अब उसे सुनार और मुख्य पादरी को चिट्ठी भेजनी पड़ी, कोई शादी नहीं होने जा रही है। सबसे बुरी बात तो यह थी कि महीने भर तक पनीर की बू उससे चिपकी रही। स्कूल में आने की इजाजत नहीं थी और घर पर उसे बाहर कोयले की शेड में सोना पड़ा।

अंत में इन सब के बाद जैक ने अपनी योजना अजमाई। उसके लिए ढेर सारा धन चाहिए था। हांलाकि उसने भी पिता से तीस पौंड उधार लिए, पर वे काफी नहीं थे। इसलिए उसने मुझसे भी कुछ पौंड उधार लिए, और अपने बनाए कुछ रेडियो बेचकर उसने धीरे-धीरे जरूरत लायक धन जुटा लिया। वह लोहे का बारीक बुरादा लाया, जो आम तौर पर मिलने वाले लोहे के बुरादे से काफी महीन था और उसे आटे में मिलाकर बिस्कुट पका लिए। उसकी योजना थी कि बिस्कुटों को बंदरगाहों में डाल दिया जाए। पहले तो चूहे उन्हें चखेंगे तक नहीं, पर बाद में जब पता चलेगा कि उनसे कोई नुकसान नहीं है, तो उन्हें खाने लगेंगे। इस बीच जैक सात काफी बड़े बिजली-चुंबक ले आया, जिन्हें अलग-अलग बंदरगाहों में लगा दिया गया। हर एक चुंबक चिकनी ढलान वाले गड्ढे के बीचों-बीच में था। और केबिलें इस तरह बिछाई गईं कि उनमें जिला रेल और पूर्वी लंदन रेलवे से लेकर बिजली बहाई जा सके। किस्मत से भूमिगत रेल के मुख्य इंजीनियर से जैक की जान पहचान थी, क्योंकि दोनों की ही वायरलेस में दिलचस्पी थी। इसलिए उसे उनसे बिजली उधार मिलने की व्यवस्था हो गई। जब उसे यकीन हो गया कि चूहों ने पर्याप्त लोहे का बुरादा खा लिया है, तब उसने चुंबकों में बिजली चालू करने की व्यवस्था की। लोहा, स्टील और निकिल की सारी खुली चीजें बांध डाली गईं। जहाज चूंकि लोहे और स्टील के बने थे, इसलिए उनको अतिरिक्त जंजीरों से कसकर जकड़ दिया गया। और उस रात बंदरगाह के सारे कर्मचारियों को बिना

कीलों वाले खास किस्म के जूतें पहनने पड़े, सिवाय उपाध्यक्ष के, जो ड्यूक था, इसलिए उसके जूतों में सोने की कीलें थीं।

सुबह डेढ़ बजे आखिरी भूमिगत ट्रेन रुक गई और उन लोगों ने ट्रेनों को चलाने वाली सारी बिजली पहले चुंबक में भेज दी। कुछ जंग लगी कीलें और टीन के डब्बे उसकी ओर उड़ चले, और चूहे भी, पर जरा धीरे-धीरे। उनके पेट में लोहे का बुरादा भरा था और चुंबक उन्हें अपनी ओर घसीट रहा था। थोड़ी ही देर में चुंबक के चारों ओर का गड्ढा चूहों से पट गया। फिर उन्होंने दूसरा, तीसरा और बाकी के सारे चुंबक चालू किए। बेशक, सिर्फ जमीन के ऊपर के चूहे ही चुंबकों वाले गड्ढों में खिंच रहे थे। पर वे उन्हें बार-बार चालू करते रहे, और इस तरह बिलों से निकलने वाले और भी चूहे पकड़े जाते रहें।

राजा चूहे को पता चल गया कि कुछ गड़बड़ है, वह अपने बिल की एक ओर खिंच रहा था। उसने संदेश वाहक भेजे, पर वो लौटकर वापस नहीं आए। अंत में जब वह खुद बाहर निकला तो एक चुंबक ने उसे भी गड्ढे में घसीट लिया। जब सुबह आई तो उन्होंने पानी के पाइपों को खोलकर चुंबकों द्वारा पकड़े गए सारे चूहों को डुबो कर मार डाला। इन चूहों का वजन एक सौ पचास टन था। किसी ने उनको गिना तो नहीं पर उन्होंने अंदाजा लगाया कि साढ़े सात लाख चूहे पकड़े गए हैं।

कुछ अटपटी दुर्घटनाएं भी हुई। अल्फ टिपिन्स नाम का चौकीदार बिना कीलों के जूते पहनना भूल गया। सो चुंबक उसके पैरों को खींचने लगा, गड्ढे के किनारे पहुंचते-पहुंचते जूते तो उसने उतार फेंके, पर चूहे उसके पांव की उंगलियों से चिपट गए, और चुंबक ने चूहों को इतना कस कर खींचा कि उसकी उंगलियां भी उखड़कर चूहों के साथ चली गईं। इसलिए पोबल की तरह उसके पावों में भी उंगलियां नहीं हैं, और उसका काम पहले से छोटे नाप वाले जूतों से चल जाता है, पर एक दूसरे

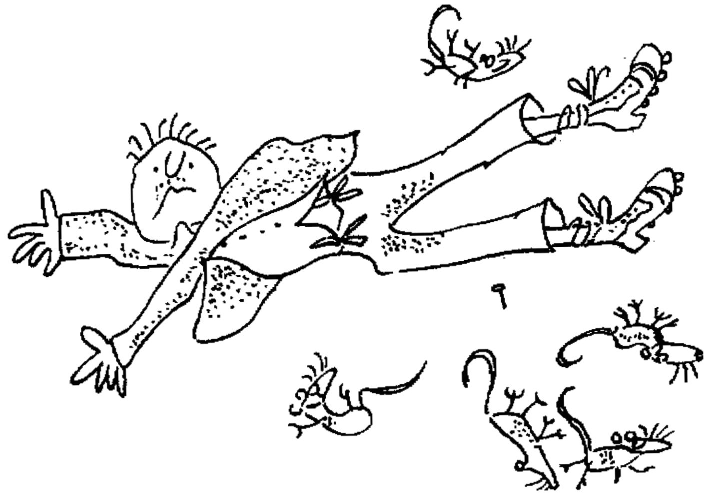

चौकीदार बर्ट हिग्स पर भाग्य मेहरबान था। लड़ाई के पहले वह बिलियर्ड का बहुत शानदार खिलाड़ी था, पर उसके भेजे में बम का एक टुकड़ा फंस गया था और अब वह बिलियर्ड बिल्कुल नहीं खेल सकता था। कोई भी डाक्टर उस टुकड़े को खींच नहीं पाया, पर जब जैक ने चुंबक चलाए, तो बम का टुकड़ा उसके सर में से फट से निकल पड़ा, और उसे बेहतरीन बिलियर्ड खिलाड़ी बनाने वाला दिमाग का वह हिस्सा फिर से काम करने लगा। अब बर्ट हिग्स पोपलर का बिलियर्ड चैम्पियन है।

अगली रात चुंबक दुबारा चलाये गए तो ढेरों और चूहे पकड़े गए, कोई सौ टन। उनका राजा मारा जा चुका था। इसलिए उनकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि क्या करें। तीसरी रात भी काफी सारे चूहे पकड़े गए। उसके बाद बाकी बचे चूहे इतने डर गए कि भागने लगे। कुछ जहाजों पर चढ़कर परदेश चले गए। कुछ लंदन शहर में घुस गए और लोगों को तंग करने लगे, पर बंदरगाह में एक भी चूहा नहीं बचा। चौथी रात एक भी चूहा नहीं मिला, हालांकि अगले दिन उन्हें कुत्तों और फेरटों से ढुढ़वाया गया पर, उस इलाके में एक भी चूहा नहीं था।

तो फिर जैक स्मिथ को दस लाख पौंड मिले और उसने अध्यक्ष की लड़की से समुद्र में एक जहाज पर ब्याह रचाया। वह चर्च में शादी नहीं करना चाहता था। उसका खयाल था कि शादी के रजिस्ट्रार का दफ्तर बड़ा घटिया है, इसलिए उसने एक जहाज किराए पर लिया और जब वे किनारे से तीन मील दूर पहुंचे तो जहाज के कप्तान से अपनी शादी की रस्में करवा लीं, जो वह जहाज के तट से ढाई मील दूर होने पर कर सकता था, क्योंकि कानून ऐसा ही है। उनके दो लड़के और दो लड़कियां हुई, जैक को बी.बी.सी. में इंजीनियर की अच्छी नौकरी भी मिल गयी। वह चाहता तो उसे मिले ढेर सारे रुपयों से बिना काम किए सारी जिंदगी गुजार देता। पर उसे वायरलेस (रेडियो) से इतना लगाव था कि वह उस क्षेत्र में कार्य करते रहना चाहता था।

उसकी बहन ने ड्यूक से शादी की, इसलिए वह डचेस बन गई, पर आजकल डचेस को पहले की तरह महत्व नहीं मिलता था। उसके सेंडल में उसके पति के जूतों की हीरा कीं कीलों के मेल की हीरों की एड़ी है। जैक ने अपने भाइयों, जिम और चार्ल्स को धंधे में लगने के लिए रुपए दिए। जिम ने उनको जादुई छड़ियों, चमत्कारी हैटों और मेजों पर खर्च किया और बहुत अच्छा मदारी बन गया, चार्ल्स ने यूनिवर्सिटी में दाखिला लिया और रसायनशास्त्र का प्राफेसर बन गया। मैं भी प्रोफेसर हूं, और उसे अच्छी तरह जानता हूं। फिर उनकी जिंदगी हमेशा हंसी-खुशी से भरपूर रही।

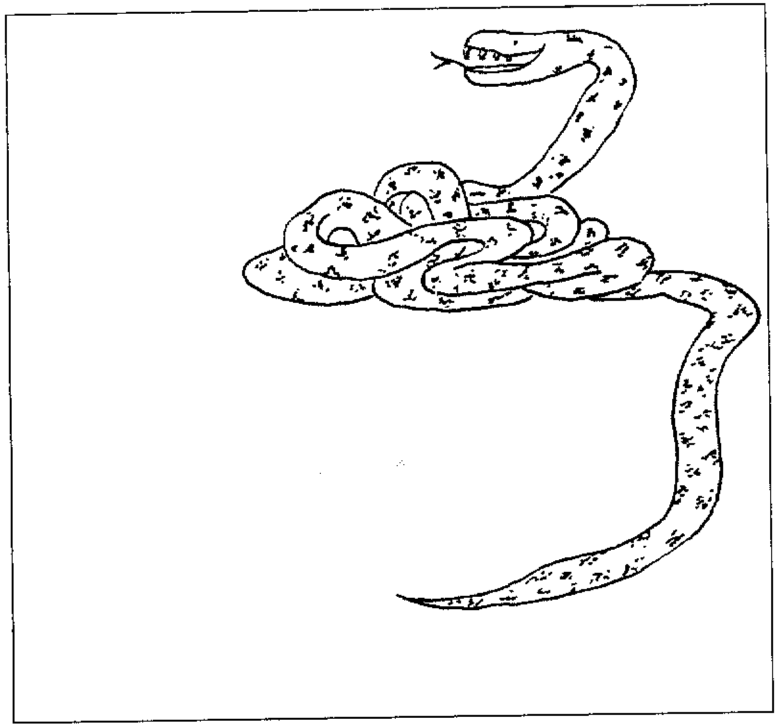

सोने के दांतों वाला सांप

सोने के दांतों वाला सांप

एक बार की बात है, एक बहुत ही अमीर आदमी था, जिसका नाम था पाओलो मरिया एंकारनैकैओ एस्प्लेंडिडो। वह ब्राजील में मानाओस में रहता था। वह काफी धनी आदमी था, और दो सोने की, तथा एक चांदी की खदान का मालिक था।

तुम सोचते होगे कि चांदी की खदान की बनिस्बत सोने की खदान से ज्यादा धन मिलता होगा, क्योंकि सोने की कीमत चांदी से ज्यादा है। पर, हकीकत यह है कि सोने की खदान में जितना खर्च होता है, उतना मिलता नहीं है, क्योंकि लोग सोने के लिए हमेशा उन जगहों पर खदानें खोदते हैं, जहां इतना सोना नहीं होता कि उससे अधिक फायदा हो सके।

पर मिस्टर एस्प्लेंडिडो की स्वर्ण खदानें ऐसी नहीं थीं। उनसे उनको उचित मात्रा में धन मिलता रहता था, पर चांदी की खदानों से उससे भी ज्यादा आमदनी होती थी। उसके धनवान होने की एक बजह यह भी थी कि वह खनिकों को बहुत ही कम मजदूरी देता था। इसलिए लोग उसे ज्यादा पसंद नहीं करते थे।

जब लोगों के पास बहुत पैसा होता है तो कुछ लोग उसे अस्पताल, यूनिवर्सिटी, पार्क और आर्ट गैलरी पर खर्च करते हैं, जिससे उसका कुछ हद तक सही इस्तेमाल हो जाता है। दूसरे हीरे-जवाहरात और रेस के घोड़े खरीदते हैं, जिनका औरो के लिए कोई उपयोग नहीं है। मिस्टर एस्प्लेंडिडो दूसरी किस्म के वाहियात इंसान थे। वह जहां काम करता था, वहीं रहता था, इसलिए वह ज्यादातर धन उस तरह की चीजों पर खर्च करता था, जिनको इंग्लैंड के धनी लोग खरीदते थे। वहां आसपास की सड़कें इतनी खराब थीं कि मोटरगाड़ी चलाने में कोई मजा नहीं आता था, इसलिए उसके पास एक ही कार थी।

पर उसके पास तीन मोटर बोट थीं, क्योंकि ब्राजील के उस इलाके में सड़क के बजाय नदियों से ज्यादा आवाजाही होती है, क्योंकि मानाओस उस जगह पर था, जहां अमेजन नदी, रिओ नेग्रो से मिलती थी, इसलिए वहां बोट चलाने के लिए बहुत पानी था। इन मोटर बोटों में दिखावे के लिए सारी फिटिंग चांदी की थीं। उसने अपनी बीबी को हीरों का कंगन दिया, वो भी महज दिखावे के लिए वे थे भी बहुत बड़े क्योंकि बीवी काफी मोटी थी। घर के भीतर तरह-तरह की सोने की चीजें थीं, जो उसकी ही खदान से आए सोने की बनी हुई थी। उसके सारे टूथ ब्रशों के हत्थे सोने के थे, उसके पास सोने के कांटे, छुरियां, ऐश-ट्रे, साबुनदानियां और दरवाजे के हत्थे थे, और वह हफ्ते भर हर रोज सोने की अलग-अलग घड़ियां पहना करता था।

उसके पास ढेर सारे जानवर थे जिन्हें वह उनके लिए बनवाई गई खास किस्म की पशुशाला में रखता था। मेरे खयाल से उसका जानवरों से लगाव ही उसमें एक अच्छी चीज थी। क्योंकि जो इंसान जानवरों से लगाव रखता हो एकदम शातिर नहीं हो सकता है। उसके पास रहने वाले चूहों से बड़े सभी जानवरों के कुछ नमूने थे।

उसके पास सात काइमांस थे जो उस इलाके में पाए जाने वाले मगरमच्छ हैं। दिखने में तो वे काफी हद तक हिंदुतानी मगरमच्छ से दिखते थे, पर उनके ऊपरी जबड़े में दो बड़े-बड़े गड्ढे होते हैं, जिनमें निचले जबड़े के दो सबसे बड़े दांत फिट हो जाते हैं, जो ज्यादातर हिंदुस्तानी मगरमच्छों में नहीं होते हैं। वे अमेरिका में रहने वाले एलिगेटर से भी अलग किस्म के होते हैं। उनमें से कुछ तो बीस फीट तक लंबे होते हैं।

उसके पास तीन जगुआर और दो एनाकोंडा थे, जो ब्राजील में रहने वाले लगभग अजगर जितने बड़े-बड़े सांप होते हैं। वे जहरीले तो नहीं होते, पर अपनी कुंडली में लपेट कर लोगों का

कचूमर निकाल सकते हैं। वे तैरने में भी माहिर होते हैं।

उसमें से एक सांपिन थी, और मिस्टर पाओलो मरिया एंकारनैकैओ एस्प्लेंडिडो को उसके उबले अंडे खाने की आदत थी, उन्हें वह अंडा खाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले सोने के कप और सोने के चम्मच से खाता था। उसका कहना था कि वे बहुत लजीज होते हैं, पर चूंकि वह पक्का दिखावेबाज था, इसलिए बहुत मुमकिन है कि वे उतने लजीज न हों। मेरी जानकारी में केवल एक आदमी ने एक बैठक में उसके तीन अंडे खाए थे। वह एक खोजी था, और उसका नाम था मिस्टर मॅक-ऑस्ट्रिच, पर उसे एक सप्ताह से खाना नसीब नहीं हुआ था, इसलिए कोई अचरज नहीं है कि उसे वे अच्छे लगे।

अब काइमांस को लो, वही क्या, सारे के सारे मगरमच्छ बड़े बुद्धू जानवर हैं, और आम तौर पर वे कुछ सीख भी नहीं पाते हैं। यूं तो उनकी खोपड़ी बहुत बड़ी होती है, पर भेजा खरगोश से भी छोटा होता है, कुत्ता, बंदर और आदमी की बात तो छोड़ो। इसलिए वे बहुत कम तरह के काम कर पाते हैं। एक कुत्ते का दिमाग बड़ा होता है, इसलिए वह तरह-तरह के हजारों काम कर सकता है। आदमी के पास और भी बड़ा दिमाग होता है, इसलिए

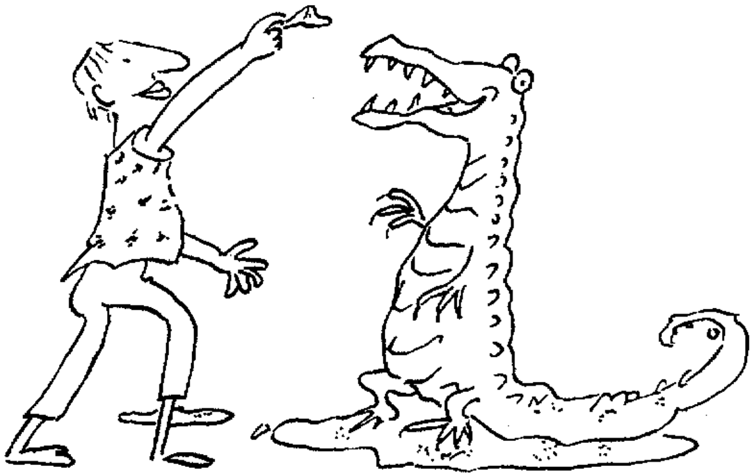

वह लाखों तरह के काम कर सकता है।

पर इसमें से एक मगरमच्छ का दिमाग जरूर सामान्य से कुछ बड़ा रहा होगा, क्योंकि उसने एक-दो ट्रिक सीख ली थीं, जिसे पैड्रो रोड्रिगुएज नाम के आदमी ने सिखाया था, जिसका काम जानवरों की देखभाल करना था। उसको जानवरों से बड़ा लगाव था, और बहुत धीरज भी था उसमें। उसने उस मगरमच्छ को पुकारने पर पानी से निकल आना सिखाया था। उसका नाम था रोजा। अरे, मैं तो बताना ही भूल गया कि वह मादा मगरमच्छ थी। दरअसल मुझे उसे मगरमच्छी कहना चाहिए, जैसे कि हम मादा झींगें को झींगी कहते हैं। आखिर कई मायनों में मगरमच्छ झींगे जैसे ही हैं। वे दोनों पानी में रहते हैं, खाल कड़क होती है और दोनों ही तुम्हें काट खा सकते हैं। पर मगरमच्छ खाने में उतने जायकेदार नहीं होते हैं, जितने कि झींगे होते हैं। या शायद मुझे श्रीमती रोजा मगरमच्छी कहना चाहिए। खैर, इन सब बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि आगे से मैं उसे सिर्फ रोजा पुकारूंगा।

खैर, रोजा ने और भी कई बातें सीख ली थीं। वह अपने पिछले दो पैरों और दुम के सहारे बैठ सकती थी, और अपना मुंह खोल देती थी जिससे लोग उसमें खाना फेंक सकें। और तो

और, वह अपनी दुम को मुंह में दबाकर गोल-गोल फिर सकती थी। उसके पति का नाम रखा गया था जोआओ, जो कि जॉन का पुर्तगाली रूप था, वह बड़ा मूर्ख और नकचढ़ा था। कम से कम आदमियों के मामले में तो नकचढ़ा था ही, वह रोजा से भी ऐसा ही व्यवहार करता, पर वह उसे दुरुस्त रखती थी, और जब भी वह लालच दिखाता और अपने खाने में उसे वाजिब हिस्सा नहीं देता तो अपनी दुम को घुमाकर एक फटका लगाती फटाक से।

खैर, एक दिन मिस्टर एस्प्लेंडिडो ने पेड्रो रोड्रिगुएज से पूछा, 'जानवरों के क्या हाल चाल हैं।' तो उसने बताया, 'सभी अच्छे हैं, सिवाय नर एनाकोंडा के, उसके दो दांत टूट गए हैं, पर मुझे उम्मीद है कि और नए उग जाएंगे।'

'बकवास मत करो' मिस्टर एस्प्लेंडिडो ने कहा, 'वह बड़ा हो चुका है, अब दुबारा और दांत नहीं उगेंगे।'

पेड्रो ने बस इतना कहा, 'ठीक कहते हैं सर', क्योंकि उसे पता था कि बहस करने का कोई फायदा नहीं है, चाहे वह सही ही क्यों न हो। उसका मालिक बहुत अंहकारी आदमी है और वह अगर कोई उसकी गलती बता देता था, तो वह भड़क उठता था।

और फिर मिस्टर एस्प्लेंडिडो के दिमाग में यह शानदार खयाल आया कि वह सांप के दांतों पर सोने के खोल चढ़वा दें, तो फिर वह सारी दुनिया में अकेले इंसान होंगे जिसके पास सोने के दांतों वाला सांप होगा। क्योंकि दुनिया में हर तरह के लोगों के पास सोने के चम्मच, घड़ियां, नमकदानियां, तथा ऐसी ही और चीजें हैं। और हिंदुस्तान के कुछ राजे-राजकुमारों के पास तो सोने से बनी अजीबो-गरीब चीजें हैं। स्वात के अंकूड की सात बीवियों के पास सोने की नथुनियां थीं, लास बेला के जाम के पास सोने की सत्ररह दांत कुरेदनियां, सोने के पांच तोते के पिंजड़े और सोने का एक पांवपोश है। भोपाल की बेगम के पास सोने की सिलाई

मशीन है। वह काफी बुर्जुग महिला थीं, और अकलमंद भी, पर बाहर हमेशा अपना सर एक थैले में छुपाकर निकलती थी, क्योंकि उनका यकीन था कि अगर लोगों ने उनकी शक्ल देख ली तो उनकी मशीन कभी काम नहीं करेगी। और स्पिती के नोनों के पास सोने का पीकदान था। (तुम सोचोगे, 'स्पिति के नोनो' शब्द मेरा गढ़ा हुआ है, पर नहीं। हिमालय में बत्तीस डिग्री उत्तरी अंक्षाश और अठत्तर डिग्री देशांतर पर स्पिती नाम की जगह वास्तव में है, और वहां के राजा को नोनो कहते हैं। अब इसमें मैं क्या कर सकता हूं, अगर लोगों और जगहों के ऐसे अजीब नाम हों)

इसलिए मिस्टर एस्पलेडिंडो ने कहा, 'मैं जेकिंटो (यह एनाकोंडा का नाम था) के सोने के दांत बनाने के लिए दांतसाज डेंटिस्ट से मिलूंगा'। मानाओस में एक अच्छा दांतसाज था, पर मैं उसका नाम भूल गया हूं, पर उससे किस्से में कोई फर्क नहीं पड़ता कि उसका नाम क्या था। उसने मिस्टर एस्प्लैंडिडो के कई दांतों में सोना भरा था, और उनके मुंह में ठोस सोने के कई दांत लगाए थे, जब वे अपना मुंह खोलते थे तो वह बैंक ऑफ इंग्लैंड का तहखाना लगता था, जहां वह सारा सोना रखा जाता है, जिसे उन्होंने तुम्हारे मांगने पर रुपये के नोट के बदले देने का वादा किया है।

मुंह में इतना सोना भरे रखने वाले जिस दूसरे शख्स को मैं जानता हूं वह कनाडा की यूकॉन नदी के नाविक हैं, वह नदी क्लोंडिके से होकर गुजरती है, जहां बेशुमार सोना है। इसलिए वहां सोना सस्ता भी है। वहां किसी भी ऐसी-वैसी चीज जैसे रोटी, या किताब के बदले तुम्हें सोना मिल सकता है, मतलब यह कि वहां हर चीज काफी मंहगी है, सिवाय सोने के। मैं यूकॉन के इस नाविक से मेसोपोटामिया (ईराक) में मिला था। वह वहां लड़ाई के दौरान शिपाहियों को तुर्कों के खिलाफ लड़ने के लिए जहाज

से तिगरिस नदी पार कराता था। वह ढेर सारी व्हिस्की पीता और गजब की गालियां देता था।

खैर, दांतसाज को एनाकोंडा के लिए दांत बनाने के काम में कोई ज्यादा दिलचस्पी नहीं थीं, क्योंकि जैसा उसका जवाब था, 'अगर मैं किसी आदमी को कितनी भी तकलीफ पहुंचाऊं, वह मुझे खाएगा नहीं, पर इतना बड़ा सांप मुझे खा सकता है, और अगर न भी खाए, तो मुझे अपनी कुंडली में लपेटकर मेरा चूरमा बना देगा।'

तो मिस्टर एस्प्लेंडिडो ने कहा, 'आकर सांप को देख जाओ और देखो, कितने बड़े और कैसे दांत बनाने हैं। और फिक्र मत करो, हम ध्यान रखेंगे कि जब उन्हें फिट करने का वक्त आएगा, वह तुम्हें काटे नहीं।'

वे काफी देर तक बहस करते रहे, फिर दांतसाज ने कहा कि वह यह काम तभी करेगा, जब उसे सांप को दांत लगाने की फीस आदमी को दांत लगाने की फीस से तीन गुना अधिक मिलेगी। उसके बाद वह एक बड़ी शानदार मोटर बोट में आया, सांप के दांतों का मुआयना किया और फिर घर जाकर कुछ सोने के दांत बनाए। इस दौरान पेड्रो रोड्रिगुएज ने दांतसाज द्वारा सोने के दांत लगाए जाते समय सांप को उसे शांत रखने की एक तरकीब सोच ली।

जेकिंटो अठारह फीट लंबा था, तो वह उतना ही लंबा लोहे का परनाले का पाइप ले आया, और उसके एक सिरे पर एक कपड़ा बांध दिया। कपड़े में एक गोल छेद था, जिसे किसी स्पंज बैग के मुंह की तरह डोरी खींच बंद किया जा सकता था। दूसरा सिरा खुला था।

जेकिंटो और उसकी सांपिन एक बाड़े में रहते थे। वह लंदन के चिड़ियाघर के सांपों की तरह अंदर नहीं रहता था, क्योंकि

लंदन के मुकाबले में ब्राजील काफी गर्म जगह है। इंग्लैंड में तो तुम्हें सापों को गर्म जगह में रखना पड़ता है, क्योंकि चिड़िया, कुत्तों, घोड़ों और आदमियों की तरह उन्हें शरीर के भीतर से गर्मी नहीं मिलती है।

पेड्रो ने बाड़े की दीवार में एक छेद किया और पाइप का खुला सिरा उसमें घुसेड़ दिया। फिर वह एक गिनी पिग लाया, जो ब्राजील में बहुतायत से होते हैं, क्योंकि वह उन देशों में से एक है, जहां वे भारी तादात में पनपते हैं। उसने जेकिंटो को दुम से पकड़ा और बाड़े में गिनी पिग छोड़ दिया। वह डर गया और पाइप में जा घुसा, उसके पीछे-पीछे जेकिंटो उसमें रेंग गया, गिनी पिग दूसरे सिरे से बच निकला और अपनी बाकी जिंदगी राजी खुशी रहा।

जेकिंटो ने उसका पीछा करते हुए पाइप के दूसरे सिरे से जैसे ही मुंह निकाला, किसी ने कपड़े के मुंह में पिरोई डोरी को खींचकर उसकी गर्दन को कसकर बांध दिया, सिर्फ उसका सिर बाहर निकला रह गया। उसके बाद उन्होंने सांप समेटा पाइप को उठाया और बाड़े की दीवार का छेद बंदकर दिया जिससे उसकी सांपिन बाहर न निकल पाए।

उसको पाइप समेत उठाने में चार आदमी लग गए। उनको तुम तस्वीर में देख सकते हो। जेकिंटो अपनी जुबान बाहर निकालकर बुरी तरह से फुफकार रहा है क्योंकि वह बेहद गुस्से में है, वो तो जिसने यह तस्वीर बनाई है, उसे पता ही नहीं है कि फुफकार की तस्वीर कैसे बनाई जाए, इसलिए तुम उसे देख नहीं सकते हो। सबसे आगे वाला आदमी पेड्रो है और मिस्टर एस्प्लेंडिडो और उनकी पत्नी पीछे खड़े देख रहे हैं।

वे जेकिंटो को उसके पाइप समेत मोटर बोट में लाद कर दांतसाज के पास ले गए। वैसे तो दांतसाज डरा हुआ था, पर रम का एक गिलास चढ़ा कर वह काम पर लग गया। पहले तो उन्होंने पाइप को टेबल पर इस तरह रख दिया कि उसका मुंह किनारे से बाहर निकला रहे। फिर उसके मुंह के ठीक सामने एक और गिनी पिग रखा और जैसे ही उसने उसे खाने के लिए मुंह खोला, पेड्रो ने उसके बगल से उसके जबड़ों के बीच एक लकड़ी की डंडी फंसा दी और एक अन्य आदमी ने उसे दांतसाज के काम करने तक कसकर जकड़ लिया।

बेचारा जेकिंटो अब अपना मुंह न तो बंद कर सकता था और न ही अपना सर इधर-उधर हिला सकता था। फिर दांतसाज अपनी बजर लेकर काम में लग गया, उस समय तुम्हें जेकिंटो की फुफकार जरूर सुननी चाहिए थी। ऐसा लग रहा था कि स्टेशन पर कोई भाप-इंजन बहुत देर से खड़ा हो, और उसका ड्राइवर इंजन के ब्वायलर को फटने से बचाने के लिए उसकी कुछ भाप निकाल रहा हो।

दांतसाज इतना डर गया था कि उसे रम का एक पेग और लगाना पड़ा। खैर जैसे-तैसे सोने के दो दांत काफी मजबूती से फिट कर दिए गए। वे लोग उसे वापस उसके बाड़े में ले गए और उसे आजाद कर दिया। फिर तो मिस्टर एस्प्लेडिंडो गर्व से फूले नहीं समाए और अपनी पत्नी तथा सारे यार दोस्तों को सोने के दांतों वाला सांप दिखाने लगे।

लेकिन न तो जेकिंटो और न ही उसकी सांपिन इससे खुश थे, क्योंकि वे ऐसा नहीं मानते थे कि सोना दूसरी चीजों से बेहतर चीज है। यह बात उन गिनी-चुनी बातों में से एक है, जिनमें सांप इंसान से ज्यादा समझदार होते हैं। मेरे खयाल से लोग-बाग सोने की खुदाई में वक्त की भयानक बरबादी करते हैं और तकलीफें उठाते हैं, और जब वह मिल जाता है, तो न तो लोहे, चाकलेट या रबड़ जितना उपयोगी साबित होता है, और न ही फूल, कांच या तस्वीर जितना खूबसूरत होता है।

तुम भले न जानते हो, पर पेड्रो को पता था कि आगे क्या

होने वाला है। एक दिन मिस्टर एस्प्लेंडिडो टहलते हुए सांप को देखने आ गए, तो उन्होंने देखा कि सोने का एक दांत नदारद था और उसकी जगह मामूली असली दांत था।

वह गुस्से में हत्थे से उखड़ गए और अपनी बड़ी छड़ी उठा कर चिल्लाते हुए पेड्रो को मारने लपके 'धूर्त, चोर कहीं का, तूने सोने का दांत निकालकर नकली मामूली दांत लगा दिया है। मैं तेरी खाल उधेड़ दूंगा और जेल में सड़वा दूंगा।'

सांप के दांत आदमियों जैसे नहीं होते हैं। आदमी के कुछ दांत तो दो बार उगते हैं, कुछ जगहों के सिर्फ एक बार। उनके दूध के दांत छह-सात साल की उम्र में गिर जाते हैं और अगर उनके पक्के दांत गिर जाते हैं तो नकली दांत खरीदने पड़ते हैं, इसलिए बेहतर है कि उनको उखड़वाने की नौबत आने से पहले ही उनके छेद भरवा दिए जाएं।

कुछ बहुत खास और असाधारण लोगों के उन जगहों पर तीसरे दांत भी उगते हैं जहां के पक्के दांत उखाड़ दिए जाते हैं। मेरी पत्नी के उगे थे। पर सांप और मगरमच्छ एक ही जगह पर चाहे जितनी बार दांत उगा सकते हैं, जहां के दांत गिर जाते हैं, हां दूसरे उग आते हैं। पेड्रो को यह पता था, दरअसल उसके पास रोजा के ढेर सारे पुराने दांत थे जिनसे उसने अपनी पत्नी के लिए माला बनाई थी।

इसलिए उसे मालूम था कि जेकिंटो ने अपने उस पुराने दांत का खूंटा कहीं गिरा दिया है, जिस पर सोने का सिरा अटका हुआ था, और वह यहीं-कहीं उसके बाड़े में पड़ा होगा। वो तो उसे ढूंढ़ने भी जाता, पर दांतसाज के यहां से आने के बाद जेकिंटो बेहद चिड़चिड़ा हो गया था। इसलिए पेड्रो की हिम्मत नहीं हो रही थी कि घुटने और कोहनियां के बल इधर-उधर रेंगता फिरे। और डर था कि जेकिंटो पीछे से आ जाएगा और उसका पैर काट खाएगा। वह इतना गरीब था कि जूते भी नहीं खरीद सकता था।

खैर पेड्रो ने सोच रखा था कि अगर उसका मालिक छड़ी लेकर पीछे पड़ गया तो वह क्या करेगा। वह उस तरफ दौड़ पड़ा जिधर मगरमच्छों का ताल था और रोजा को पुकार लगाई। वह पानी चीरती हुई आई और दोनों पिछले पांवों पर बैठ गई। मिस्टर एस्प्लेंडिडो पीछे-पीछे अपनी बड़ी छड़ी लिए भागे आए और पेड्रो उन्हें रोजा के चारों ओर चक्कर लगाता छकाने लगा।

जब मिस्टर एस्प्लेंडिडो ताल और रोजा के बीच भाग दौड़ कर रहे थे। रोजा बिदक गई कि वह उसके दोस्त के पीछे क्यों पड़े हैं और अपना पूरा मुंह खोल कर वैसे ही गुर्राई जैसे कि मगरमच्छ गुस्से में चीखते हैं। यह फुंफकार खर्राटे, भौंकने और घुरघुराने की मिली-जुली आवाज होती है।

अगर तुम भाग्यवान हो तो तुम्हें चिड़ियाघर में रख-रखाव करने वाला कोई ऐसा आदमी मिल जाएगा जो मगरमच्छ को छेड़ सके, तब तुम्हें यह आवाज सुनने को मिल जाएगी। पर तुम्हें खुद उसे दो वजहों से नहीं छेड़ना चाहिए। पहली तो यह कि मगरमच्छ के बाड़े की रेलिंग के ऊपर ज्यादा झुकने से तुम मगरमच्छ के ताल में टपक सकते हो।*

और दूसरी वजह यह है कि अगर कहीं रखवाले ने तुम्हें मगरमच्छ को छेड़ते देख लिया तो वह तुम्हें चिड़ियाघर से निकाल बाहर करेगा और फिर कभी नहीं आने देगा। मुझे तो यह बिल्कुल पसंद नहीं, और मैं यह सोच कर ही सिहर उठता हूं, हां, पर मैं सोचता हूं कि मगरमच्छ का निवाला बनने से तो बेहतर ही है।

पर रोजा चिड़ियाघर के मगरमच्छों से दूनी, करीब बीस फीट लंबी थी, और मोटी भी दोगुनी ही थी। उसकी आवाज डरावनी थी और दांतो समेत उसका मुंह किसी दरवाजे जितना बड़ा दिखता था। मिस्टर एस्प्लेंडिडो इतने डर गए थे कि अपना संतुलन गंवा

*इस कहानी को लिखने के बाद उन्होंने चिड़ियाघर में दर्शकों और मगरमच्छों के बीच तार की जालियां लगवा दी हैं, इसलिए अब तुम चाहो, तो भी ताल में नहीं टपक सकते।

बैठे और ताल में गिर गए।

और इधर जोआओ किनारे बैठा अपना मुंह खोले इंतजार ही कर रहा था, क्योंकि वह सोच रहा था कि खाने का वक्त हो गया है। तो बस अनहोनी हो गई, हालांकि किसी का ऐसा इरादा नहीं था, क्योंकि उसने मिस्टर एस्प्लेंडिडो को इतना फटाफट निगला कि उस सिगार से उसकी जुबान जल गई जिसे मिस्टरजी पी रहे थे। हड़बड़ी में खाने पर हर किसी की जुबान जल ही जाती है और मैं सोचता हूं, उसे ठीक ही सजा मिलती है।

पर उसने एक टांग रोजा के लिए छोड़ दी, क्योंकि अगर वह नहीं छोड़ता तो उसे उसकी दुम का एक तमाचा पड़ता। तो ऐसा अंत हुआ मिस्टर एस्प्लेडिंडो का। और किसी को नहीं पता कि जोआओ के पेट में उनकी सोने की घड़ी कब तक टिक-टिक करती रही, अगर तुम किसी ऐसे जांबाज को जानते हो जो नरभक्षी मगरमच्छरों से कान लगा कर घड़ी की टिक-टिक सुन सके तो मैं उससे मिलना चाहूंगा।

खैर, पेड्रो को गिरफ्तार कर लिया उन लोगों ने, और उसे जज के सामने ले गए, पर जज ने जब उसकी राम-कहानी सुनी, तो उसने कहा, 'मेरा ख्याल है मिस्टर एस्प्लेंडिडो को ठीक सजा मिली, उसमें तुम्हारी काई गलती नहीं थी, इसलिए मैं तुम्हें बरी करता हूं।'

और अगले सप्ताह वहां मौजूद एक अमरीकन मिस्टर फाइश ने मिस्टर एस्प्लेंडिडो की विधवा से रोजा को खरीद लिया। उन्होंने पेड्रो को उसकी रखवाली के काम पर रख लिया। अब दोनों सरकस में खेल दिखाते हैं, और रोजा ने दो और ट्रिक सीख लिए हैं। वह पाइप पी सकती है और संगीत की धुन पर अपनी पूंछ से ताल दे सकती है। अब पेड्रो को मिस्टर एस्प्लेंडिडो से मिलने वाले मेहनताने से पंद्रह गुना मजदूरी मिलती है। इसलिए अब कभी वह सरकस तुम्हारे शहर आए, तो देखना मत चूकना।

मेरा दोस्त मिस्टर लीकी

मेरे कालर का जादुई बटन

मेरे कालर का जादुई बटन

मेरा ख्याल है, तुम सोचते होगे कि अब परियां, चुड़ैलें, मांत्रिक और वेताल नहीं होते हैं। पर तुम गलत सोचते हो, बेशक वे किस्से-कहानी की तस्वीरों वाली पोशाकें पहने नहीं घूमते। तुम्हें हेंडन की चिमनी पर रंगबिरंगे पखों वाली नन्हीं परियां बैठी नहीं मिलेगी, या आक्सफोर्ड स्ट्रीट की लाल बत्ती पर कोई बुढ़िया नुकीला टोप लगाए झाडू पर सवार हरी बत्ती का इंतजार करती नहीं मिलेगी। वे कुछ और ही काम धंधों में लगे हैं। अच्छे जादूगर आज भी रेडियो और रासायनिक पदार्थों जैसे जादुई करिश्मे कर रहे हैं। जब तुम बीमार पड़ते हो, तो डाक्टर आकर एक पर्चे पर नुस्खा लिखता है, फिर केमिस्ट एक बोतल में कुछ देता है। अगर उससे तुम ठीक हो जाते हो तो इसका मतलब है कि वह पर्चे का टुकड़ा मंत्र सिद्ध था, और दवाई एक जादुई पुड़िया। और परियां तो तुम्हें हर कहीं मिलती ही रहती है, लेकिन वे आम लोगों सी ही दिखती हैं।

मैं उम्मीद करता हूं, तुम पूछोगे, 'आपको कैसे मालूम कि वे परियां हैं? ठीक है, मैं बताता हूं। मैं कई बार परियों और दूसरे जादुई लोगों को पहचान सकता हूं क्योंकि मैं खुद एक परी मेलुसाइन का वंशज हूं। उसने आठ सौ साल पहले लूसिनान के काउंट रेमोंदिन से ब्याह किया था और उनके दस बच्चे हुए थे, सारे लड़के। हेनरी द्वितीय के बाद के इंग्लैंड के सारे बादशाह मेलुसाइन के वंशज हैं। बादशाह हेनरी द्वितीय, उसके बेटों रिचर्ड प्रथम और जॉन का मिजाज बड़ा गर्म था। उसके जमाने में लोग कहते थे कि ऐसा इसलिए है कि वह परी का वंशज है। हेनरी जब गुस्सा होता, तब अपने दांतों से बिस्तर की चादर को तार-तार कर डालता था, पर मिजाज ठीक रहने पर वह बड़ा प्यारा बादशाह था। बादशाह जॉर्ज और मैं दोनों ही हेनरी द्वितीय

के वंशज हैं पर उसके सर को ताज मिला, मुझे मिजाज मिला। हां, पर मेरा मिजाज हेनरी द्वितीय जितना खराब नहीं है। वैसे, तुम ऐसी उम्मीद कैसे कर सकते हो कि मिजाज सात सौ साल तक जरा भी घिसे-पिटे बिना वैसा ही बना रहेगा। मौजूदा बादशाह के पास भी तो हेनरी से बेहतर ताज है क्योंकि अब तक लोगों ने ढेर सारे हीरे खोद निकाले हैं और उन्हें ताज में सजा दिया है। तुम इसे लंदन की मीनार में जाकर देख सकते हो।'

एक बात बताना तो मैं भूल ही गया। हर शनिवार को मेलुसाइन के कमर के नीचे का हिस्सा सांप का शरीर बन जाता था। अगर इस बारे में तुम्हें और ज्यादा जानना है, तो मेरी बीवी ने उस पर जो किताब लिखी है, उसे पढ़ो।

जिस आखिरी जीवित परी से मैं मिला हूं, वह वेंड्सवर्थ में रहती है और वहां उसकी जादू की दुकान है। जादू की दुकान के शोकेस में तुम्हें तरह-तरह की चीजें दिखेंगी, जैसे पेननाइफ, टॉफियां बालटियां, सिगरेट के पैकेट, तराजू और बांट तथा खाली जालियों पर सजाने के लिए सजावटी चीजें, यानी कवि की कल्पना साकार रूप में दिखेगी। तुम्हें परी की ऐसी दुकान मुश्किल से मिलेगी, जिसमें कुंजड़े दर्जी, या मछली बेंचने वाले की तरह एक ही किस्म की चीजें बिकती हों। एक बात और, परियों की दुकानें कभी बड़ी नहीं होती हैं, क्योंकि जादुई चीजें नौकरों के भरोसे नहीं बेची जा सकती हैं। वे उन्हें गलत किस्म के लोगों को बेच देते हैं। मेरा मतलब है कि एक कदम में सात योजन चलने वाले जादुई जूतों का बस ड्राइवर के लिए क्या इस्तेमाल है? उनकी सही जरूरत तो एक डाकिए को होती है। और सोचो, अगर किसी ने एक ट्रैफिकमेन को अंधियारे का लबादा, या अदृश्य करने वाली टोपी बेच दी तो क्या होगा! वह अदृश्य हो जाएगा और सारी लारियां और कारें उसे कुचल देंगी, कोई भी उसे रुकने का इशारा करते देख नहीं पाएगा। पर छूमंतर करने वाली टोपी एक

खिड़की साफ करने वाले के लिए बड़े काम की चीज होगी क्योंकि वह रोशनी रोके बिना ही खिड़की साफ करेगा। किसी दर्जी की बड़ी दुकान में काम करने वाले के लिए भी वह काफी मतलब की होगी, वह जब शोकेसों में सजे मर्द-औरतों के पुतलों को इधर-उधर सरकाएगा तो लोग कहेंगे, 'क्या गजब की मशीन है।' और उसमें से कई लोग दुकान में आकर नए टोप, पतलून, स्कर्ट और वेस्टकोट आदि चीजें खरीद लेंगे।

मैं इस दुकान में इसलिए घुसा क्योंकि वह कुछ जादूई लग रही थी, और मुझें और एक नया बटन (स्टड) खरीदना था, जो पहले मेरी कमीज में आगे की कालर में लगा था। उसके खो जाने की वजह से मुझे अपना कालर पेपर क्लिप से अटकाना पड़ा, जिसके किनारे काफी तीखे थे और मेरी गर्दन में चुभ रहे थे। वहां काउंटर के पीछे एक सुंदर सी दिखती महिला खड़ी थी। उसके बाल तो सफेद हो रहे थे पर चेहरे पर एक भी झुर्री नहीं थी, जिनकी तुम सफेद बालों के साथ उम्मीद करते हो। मैंने उससे कहा, 'मुझे एक स्टड बटन चाहिए, क्योंकि मेरा पुराना वाला खो गया है।'

'क्या सिर्फ यही खोया है तुम्हारा? ' उसने पूछा।

'अरे नहीं', मैंने कहा, 'सच तो यह है मेरा अच्छा मिजाज भी खो गया है।'

'हाय दइया', उसने जवाब दिया, 'मुझे उम्मीद है कि तुम्हारा मिजाज अधिक कीमती नहीं था? मिजाज खो जाने पर लोग क्या-क्या नहीं करते हैं? कुछ लोग अखबार में इश्तहार छपवाते हैं।'

'शनिवार 28 अगस्त को पुरानी केंट रोड़ पर एक गुलाबी रंग का मिजाज, जिस पर नारंगी और बैंगनी चकत्ते हैं, खो गया है। बिस्क्लावेरेट के पते पर जानकारी दें। उसके बारे में जानकारी देने वाले को बटरफ्लाई सिगरेट कार्ड का पूरा सेट और जिल्दबंद रेडियोटाइम के अंक इनाम में मिलेंगे।' पर रोमन कैथोलिक लोग संत अंथोनी के आगे वैसे ही मोमबत्ती जलाते हैं जैसे उनकी और चीजें खो जाने पर जलाते हैं। और कुछ लोग तो बाटरसी में खोऐ हुए मिजाजों के कांजीहाउस में जाते हैं, पर अमूमन इतने सारे खोए हुए मिजाजों में से अपने मिजाज को पहचान नहीं पाते हैं।'

मेरा ख्याल है, मैं अपने वाले को पहचान लूंगा, क्योंकि वह कुछ खास था, कोई आठ सौ साल पुराना। जो मेलुसाइन नाम की महिला का था। इधर-उधर से थोड़ा चटका-दरका जरूर था, पर था वह असली मिजाज, वैसा नहीं, जैसा पिंपियाता, किंकियाता दयनीय मिजाज लोग आजकल पालते हैं।

'उसे किसी एंटीक (प्राचीन सामानों) की दुकान से खरीदा था क्या?'

'अरे नहीं, पुरानी खानदानी चीज थी वह।'

'सच, मुझे बड़ी खुशी है, मेलुसाइन के किसी वंशज से मिलकर, मैं अच्छी तरह जानती थी उसे, और मुझे बड़ी कोफ्त होगी, अगर उसका मिजाज कहीं इधर-उधर खो जाए। पर कोई नई बात नहीं है यह। उसका एक लड़का था ज्ओफरी ग्रॉसडेंट (जिसका अर्थ होता है बड़े दांतो वाला) जो अपना मिजाज जब-तब खो देता था, और उसने इसे इतनी बार खोया कि अंत में उसे गले में पट्टा डालकर टहलाने ले जाया जाता था। मैं तुम्हारें लिए भी ऐसा कर सकती हूं, अगर तुम्हें इसकी जरूरत हो तो, पर अभी तो बटन देखते हैं। मेरे पास हर तरह के बटन मौजूद हैं, यह रही अदृश्य बटनों की ट्रे।'

उसने एक खाली दिखती ट्रे मेरी ओर बढ़ाई।

'बहुत धन्यवाद आपको, पर मुझे नहीं लगता कि मैं इसे

सुबह-सुबह ढूंढ़ सकूंगा, और साथ ही अदृश्य बटन का क्या फायदा जब तक आपके पास अदृश्य कपड़े भी न हों। उस हाल में तो आप ऐसा चाहेंगे ही, क्योंकि सड़क पर हवा में तैरते अकेले कालर-बटन का दिखना बड़ा अटपटा लगेगा।'

'फिर तो मैं सोचती हूं, आपके लिए ये न खोने वाला बटन बेहतर रहेगा। इसके चार पेंस और तीन फार्दिंग लगेंगे।'

वो तो मेरी किस्मत अच्छी थी कि मेरे पास चार पेंस और तीन फार्दिंगे छुट्टे थे। क्योंकि परियां इस मामले में बड़ी कड़क उसूल वालीं होती हैं। मेरा मतलब है, अगर मैंने उसे तीन पेंस की जगह आधी पेनी, और फार्दिंग पेश किए होते तो ,मेरा ख्याल है कि दुकान छूमंतर हो जाती और मैं श्रीमान ग्लैडस्टोन के पुतले से बतिया रहा होता। अगर कोई एक परी से छुट्टे पैसे मांगे, और वह सिगरेट बेचने की ऑटोमेटिक मशीन से बेहतर किसी चीज में बदल जाए तो उसे काफी हिम्मत वाला मानना चाहिए। एक दो साल तक बिक्री मशीन बने रहने के बाद ही तुम्हें पता चलेगा कि परियां छुट्टे पैसे देना क्यों पसंद नहीं करती हैं।

अगर आप ऐसे शख्स हैं, जो जेब में फार्दिंग (इंग्लैंड का एक छुट्टा पैसा) डाले नहीं घूमते तो बेहतर होगा कि आप परियों की दुकान की ओर रूख ही न करें। ज्यादातर लड़के और लड़कियां फार्दिंग लेकर चलते हैं। पर जब वो जरा बड़े हो जाते हैं तो सोचने लगते हैं कि छुट्टे पैसे बचकानी चीज हैं। ये गलत बात है, क्योंकि इंग्लैंड में छुट्टे पैसे बड़े जादुई किस्म के होते हैं, सिवाय चांदी की पेनी के, जिसे सैकड़ों सालों से टकसाल में किसी ने नहीं ढाला।

खैर, मुझे अपने काम का बटन मिल गया, जो अब भी है मेरे पास। और मेरा ख्याल है, जब मैं मरूंगा, तब उसे मेरे साथ ही दफनाया जाएगा, क्योंकि अगर लोग उसे मेरे ताबूत में नहीं डालेंगे तो वह फुदकता-फुदकता मेरे जनाजे के पीछे-पीछे चला आएगा, जिन लोगों को आंसू बहाना चाहिए, वे हंसने लगेंगे। मैंने उस बटन को दो-चार बार गुमाने की कोशिश भी की है। एक बार तो मैंने उसे गटर की जाली में फेंक दिया था। तब उसे बहा ले जाने के लिए जबरदस्त तूफानी बारिश हो रही थी। कोई आधे घंटे बाद जब मैं हाथ धो रहा था तो वह सिंक में से निकल पड़ा, एकदम भीगा हुआ, और उस दूसरे बटन से लड़ने लगा, जिसे मैंने उसकी जगह लगा रखा था। अपनी हाथापाई में उन दोनों ने मेरा गला ही छेद दिया होता।

एक बार जब मैं दक्षिण अफ्रीका में था, तब एक ऑस्ट्रिच ने उसे निगल लिया था, मैंने सोचा वो तो गया अब। पर अगली सुबह मुझे वह मेरे अंडे में मिला, जिसे मैं दो और लोगों, तथा एक कुत्ते के साथ बांट कर खा रहा था। मुर्गी की तुलना में ऑस्ट्रिच का यही तो फायदा है। एक अंडे में पूरे कुनबे की खुराक हो जाती है। एक और बार वह जहाज के एक छेद से अटलांटिक महासागर में टपक गया। जहाज कर्मचारी उस समय मेरे कपड़े तह कर रहा था। मेरा ख्याल है, तुम सोच रहे होगे कि मैं अब कहूंगा कि वो मुझे बादशाह पॉलीक्रेटस की तरह डिनर करते हुए मछली में मिला। बिल्कुल गलत हो तुम। मुझे वह उससे भी जल्दी मिल गया। तुम्हें पता है, एक टिन की मछली जैसी चीज को जहाज के पीछे यह बताने के लिए बांध दिया जाता है कि जहाज एक दिन में कितना आगे चला है। उसे लॉग कहते हैं। वह गोल-गोल फिरकी सी घूमती रहती है पानी में। जिससे डोरी ऐंठती जाती है, और जहाज में उससे जुड़ी एक घड़ीनुमा चीज को घुमाती जाती है। इससे जहाज के कप्तान और नाविकों को पता चलता है कि एक घंटे या एक दिन में जहाज कितना चला है। खैर, अचानक डोर का ऐंठना बंद हो गया, वे समझ गए कि लॉग में कुछ गड़बड़ है क्योंकि जहाज तो थमा नहीं था। उन्होंने उसे ऊपर खींचा तो पाया कि उसके साथ एक कटलफिश उलझी हुई है, उसने लॉग को अपनी नौं भुजाओं से जकड़ रखा था, और

मेरा बटन उसकी दसवीं भुजा से चूसक चिपका पड़ा था।

पर जहाज पर कोई एक हजार सवारियां थीं और बटन पर कुछ ऐसा लिखा हुआ भी नहीं था जिससे पता चले कि वह मेरा है। इसलिए मुझे वह वापस नहीं मिल पाता, अगर पांच मिनट के बाद मेरे केबिन में एक जहाज कर्मचारी आकर मुझे कटलफिश देखने के लिए नहीं बुलाता। मैं जीव विज्ञान का प्रोफेसर नहीं हूं, पर जहाज पर एक प्रोफेसर था और जहाज के कप्तान ने उसकी जगह मुझे प्रोफेसर समझ लिया था। उसने सोचा कि मैं उसे कटलफिश का लैटिन नाम बताऊंगा, जो मैं नहीं बता सकता था। पर मुझे मेरा बटन मिल गया।

इसके बाद तो मैं केवल मजे लेने के लिए उसे खोने की कोशिशें करने लगा। एक बार मैं संकरी गली से होकर गाड़ी चलाता गुजर रहा था कि एक नोटिस दिखी, 'स्टीम रोलर काम पर है', इसलिए मैंने गाड़ी जरा धीमी कर ली। हां, अगर मैंने कहीं यह नोटिस देखी होती कि, 'स्टीम रोलर खेल रहा है', तो मैं वहां से भाग लेता, क्योंकि एक खिलंदड़ स्टीम रोलर केवल मजा लेने के लिए मेरे पांव पर से गुजर जाएगा, और मेरा पांव फावडे जैसा चपटा हो जाएगा। अगर स्टीम रोलर किसी

भी चीज पर चढ़ जाता है तो उसे चपटा कर देता है। कल ही मैंने अखबार में एक आदमी का दिया इश्तहार देखा था, जिसने दावा किया था कि पांव का इलाज कर सकता है। अगर तुम्हारे पंजों पर स्टीम रोलर चढ़ गया हो तो मेरा ख्याल है, तुम्हें उसके पास जाना चाहिए। पर ये स्टीम रोलर बड़ी कड़ी मेहनत कर रहा था, और मुझे कार रोकनी पड़ी। केवल मजा लेने के लिए मैंने सोचा, अगर मैं बटन को उसके नींचे, उस पर से गुजर जाने के लिए डाल दूं, तो देखें क्या होता है? पर अब सोचता हूं, काश ऐसा न करता। क्योंकि जब उसका अगला बड़ा पहिया उस पर से गुजरा तो बटन के पीसने के बजाय एक जोर के धड़ाके के साथ पहिया दो हिस्सों में तड़क गया। ड्राइवर तो आग बबूला था, क्योंकि उसे अपने स्टीम रोलर से बड़ा लगाव था। मैंने कहा, मैं नए पहिए के लिए रुपए दूंगा, क्योंकि दरअसल मेरी ही गलती थी। पर जिसने स्टीम रोलर बनाया था, वह मुझे रुपए नहीं देने दे रहा था, उसका कहना था कि अगर मैंने रुपए दिए तो लोग उस पर हंसेंगे और कहेंगे, 'स्मिथ के स्टीम रोलर मत खरीदना। वे तो कालर के एक बटन को भी नहीं पीस सकते हैं।'

एक बार मैंने वह बटन एक ऐसे पादरी को दे दिया, जो मुझ पर बड़ा दया भाव रखता था। तुम्हें यह तो पता ही होगा कि पादरी लोग अपना कालर उलटा पहनते हैं, इसलिए उसके आगे वाला बटन पीछे था और पीछे का बटन आगे। खैर, मेरे उसे देने के दो घंटे के बाद जब वह बाइबिल की उन पक्तियों का पाठकर रहा था जिसमें लिखा था, 'पहला आखिरी होना चाहिए और आखिरी पहला' तो अचानक उसका कालर पूरा घूम गया और उसका मुंह सामने की ओर वैसे ही खुला था, जैसे कि आम लोगों के कालर का होता है, तो उसने इतना ही कहा, 'ये बटन मेरे लिहाज से बहुत ही ज्यादा समझदार लगता है। मैं ऐसा बटन चाहता हूं जिसे मैं जैसा लगाऊं, वैसा ही रहे।' और मेरा बटन मुझे वापस भिजवा दिया। इसलिए मुझे उम्मीद है कि मैं इसे मरते

दम तक पास रखूंगा और शायद उसके बाद भी।

'अरे भाई! मैं तो तुम्हें उस दुकान को छोड़ने के बहुत बाद का किस्सा सुनाने लगा। मैं सोचता हूं, काश, मैं भी उन चतुर लेखकों की तरह होता जो लंबे किस्से की घटनाओं को सिलसिलेवार तरीके से लिख सकते हैं। मैं तो बस जैसे दिमाग में आता है, सुनाता जाता हूं।

बटन खरीदने के बाद मैंने काउंटर के पीछे खड़ी महिला से पूछा, 'आपका नाम क्या है।' क्योंकि मैंने सोचा, अगर वह मेलुसाइन को जानती है, जो मेरी पड़पड़ दादी थी, तो बूढ़ी होनी चाहिए, और उसने कई मजेदार चीजें देखीं होंगी। 'तुम मुझे मिस वेंडल कह सकते हो', उसने कहा, 'हांलाकि मुझे अपना नाम पाने के लिए कई हजार साल इंतजार करना पड़ा, वैसे पुराने वक्त में मेरे दो-तीन नाम और थे। मैं पहले नदी में रहा करती थी, पर पिछली शताब्दी में वह बहुत गंदी हो गई है। मुझे उम्मीद है कि मैं जल्दी ही वहां वापस जा सकूंगी। मैं नहीं सोचती की दो-तीन हजार साल में लंदन में अधिक चीजें बचेंगी।'

'यह आपकी बड़ी मेहरबानी है कि ऐसी दुकान खोल रखी है, जिसमें इतनी काम की चीजें मिल सकती हैं।'

'ओहो, मैंने हमेशा ही सही इंसान को सही चीजें बेची है। वे मेरे पास-पास तब भी आते थे, जब मैं नदी में रहती थी। आठ सौ साल पहले वे मुझे "फेयरी" (परी) कहते थे, उससे पहले रोमन लोग मुझे नाइऐड (जल परी), और कांस्य युग के लोगबाग, जो इंग्लैंड के अब तक के सबसे भले इंसान थे मुझे "वासी" कह कर पुकारते थे। पर अब मैं पहली जैसी मददगार नहीं हो सकती। मुझे याद पड़ता है कि विम्बलडन कॉमन पर एक बहुत भयानक ड्रैगन रहता था। तरह-तरह के नाइट लड़ाकों ने उसका वध करने का प्रयास किया, पर उनकी कोशिशें नाकाम रहीं, वह उन पर आग उगलता, जो उनके कवचों को ऐसे भेद देती थी जैसे

चोर की आग-फुंकनी टीन के पत्तर को गला देती है। एक दिन तो उसने नाइट का पीछा वैंडम नदी तक किया। नाइट का कवच लाल गर्म हो रहा था, और सुलगने की हालत में था। किस्मत से मैं वहां थी। मैंने नाइट को नदी से बाहर खींच निकाला, उसके बाद कवच थोड़ा ठंडा पड़ा। फिर मैंने उससे पूरे कवच को ठीक से उतारा। मैंने पूछा कि वह उस ड्रैगन जैसे जादुई जानवर का वध अपने इस सामान्य कवच-भाले से कैसे करेगा। तो फिर अगले सप्ताह उसने एस्बेस्टस का कवच पहना तथा भाले की जगह आग बुझाने वाले दो यंत्र लेकर ड्रैगन से दो-दो हाथ किए। और उस ड्रैगन का अंत हो गया। पहली आगबुझानी ने उसके मुंह की आग को बुझा दिया और दूसरी ने उसका काम तमाम कर दिया। बेशक, उस जमाने में साधारण आगबुझानियां तो होती नहीं थीं, केवल जादू की होती थीं। नाइट ने मेरा बड़ा अहसान माना और मेरी नदी के किनारे की उजाड़ जगहों पर ढेर सारे फ्लावरिंग रशेज (पानी में पनपने वाला एक पौधा) और वीपिंग विलो के कुछ प्यारे पौधे भी लगाए।'

'पर वे सब अब चले गए हैं। इसी से मेरे बालों में सफेदी आ गई है। पर मैं उम्मीद करती हूं, एक दिन रंगत वापस जरूर आएगी। फिर भी मैं सोचती हूं, मुझे इस बात के लिए शुक्रगुजार होना चाहिए कि उन्होंने मेरी नदी को वेस्ट बोर्न की तरह पाइप में कैद नहीं कर दिया। उस पाइप को तुम स्लोआने स्क्वैयर रेलवे स्टेशन के ऊपर से गुजरता हुआ देख सकते हो। तुम इंसान भी खूब गंद फैलाते हो। पर जब मैं अपनी जवानी के दिनों में मचाई गई छीछालेदर के बारे में सोचती हूं, तो लगता है कि मुझे इस बारे में बात करने का कोई हक नहीं है। लगभग चालीस हजार साल पहले इतनी ठंड थी कि एक हिमनद मसवैल पर्वत के करीब तक आ गया था, और यहां भी साल के अधिकतर महीनों में चारों तरफ बर्फ जमी रहती थी। जब थोड़ी गर्मी पड़ने लगी और बर्फ पिघली, तो नदियां वास्तव में नदियां बन गईं। वेंडल उस जमाने

में कभी-कभी आज की टेम्स जितनी बड़ी हो जाती थी। और हमने भी अपनी धाराओं में कीचड़ बहा कर घिनौना दृश्य उपस्थित किया। हां, मैंने अपने गुजरे वक्त में गलीजपन किया है।'

'और क्या दिखा सकती हूं, तुम्हें आज की दोपहर? मेरे पास जादुई इस्त्री की अच्छी किस्में हैं। या फिर तुम जूते के कुछ जादुई फीतों को आजमाना चाहोगे। पर वे मुसीबत में डाल सकते हैं। 'यकीनन ही मुझे किसी भी तरह के जादुई फीते नहीं चाहिए थे, क्योंकि मैं मैक फारलांस नाम के आदमी को जानता हूं, जिसने एक जोड़ी जादुई फीते खरीदे थे। बेशक, वे बड़े काम की चीज थे क्योंकि उसके फीतों को कभी खुला नहीं देखा गया। पर एक दिन वह उन्हें खोलने का मंत्र भूल गया, तो उसे तीन महीनों तक जूते सहित बिस्तर में सोना पड़ा, फिर वह एक ऐसे जादूगर से मिला, जिसे सही शब्द याद थे। मैक ने उन्हें एक अपनी डायरी में लिख लिया और फिर उनसे कोई परेशानी नहीं हुई। पर एक दिन जब जूते बहुत घिस गए तो उसकी बीबी ने उन्हें मोची के पास तल्ले की मरम्मत के लिए भिजवा दिया। जादुई फीतों को यह पसंद नहीं आया कि उन्हें किसी ऐसी वैसी दुकान पर भेजा जाए, तो वे जूते से निकल भागे, और घर का रास्ता ढूंढ़ने लगे। भांति-भांति के लोगों ने उन्हें सड़क पर रेंगते देखा, और उन्हें पकड़ने की कोशिश करने लगे। यकीनन वे उन्हें पकड़ तो नहीं सकते थे, पर उन लोगों ने मिस्टर मैक फारलांस के घर के सामने के बगीचे तक उनका पीछा किया और उन्हें पकड़ने के चक्कर में सारे फूलों को कुचल डाला। और जब फीते घर में घुसे तो रसोईए ने सोचा कि शायद सांप है, और नौकरी छोड़ने का नोटिस दे दिया। इसलिए कोई अचरज नहीं कि मैंने सोचा, जल्दी ही साधारण फीते ही लूंगा, भले ही वह कभी टूट ही क्यों न जाएं। इसलिए मैंने मिस वैंडल का शुक्रिया अदा किया, और अपना जादुई कालर-बटन लेकर चला आया।